

DPN 6230

Title: विष्णु प्रतिष्ठा विधि व मेमेसु विधि VISHNU PRATISTHA VIDHI VA MEMESU VIDHI

Run. No. 6921

Cat. No. 18

Micro. No.

Subject *consecration rituals*
प्रतिष्ठा विधि

Religion: Hindu / Bauddha

Language: Skt. / New. / Nep. / Skt.-New. / Maith.-New. / New.-Nep. / *नेपालभाषा निर्देश*
new direction

Size in cms. 27.5 X 8.3

Folios 140 Lines (in a page) 23/22

Compl. / Incompl.

Chapt. / act /

Author / translator

Scribe / donor

राजेन्द्र श्रेष्ठ Rajendra Shrestha

Date: NS / SS / VS / KS १२८ मङ्सिर १

Ruler / place

Script: New. / Dev. / Bhuj. / Ran. /

Illus.: *रेखाचित्र । विष्णुमा व महासमुद्र*
Sketch line drawing of Lord Vishnu mandala

Material: palmleaf / paper / thyasaphu / *leather bound cover - thick, ornamented beehive paper. Standard.*

Condition: fine / damaged by worms, rats, water / *कृमि, चूना, पिसु, छुट्टा, दिगन्तः नेपालीको, एन।ए.*

Beginning, colophon, post-colophon:

पत्राङ्क. ८५१. ६५१. १०० / १० folio number written.

↓
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॥ अथ विष्णु प्रतिष्ठा विधिर्होष्यते ॥ नाना देवप्रतिष्ठा प्रतोद्यापनादि,
श्री-चार्य निमन्त्रनं मण्डलं पुराणानां अहचार्य गामत्री जपः ...

समाप्ति वाक्य / Post colophon

शिव ८२८ पागिरी छुट्ठ ॥१॥ लेख सम्पूर्ण मुदा ॥ छुट्ठो सर्विडा ॥

टिप्पणी - ✓ ज्वलं धर्मं जह नेपाल गोज्जं चया ॥१॥

✓ स्वपय मन्या विष्णु प्रसिद्धा याः ॥ स्वः गरी उल्लोह यजु ।

Remark - ✓ Ritual requisities listed in newa

- ✓ nowhere is mentioned identity of Lord Vishnu
consecrated (possibly Vishnu temple of Bhaktapur)



10

0 cms.

5

10

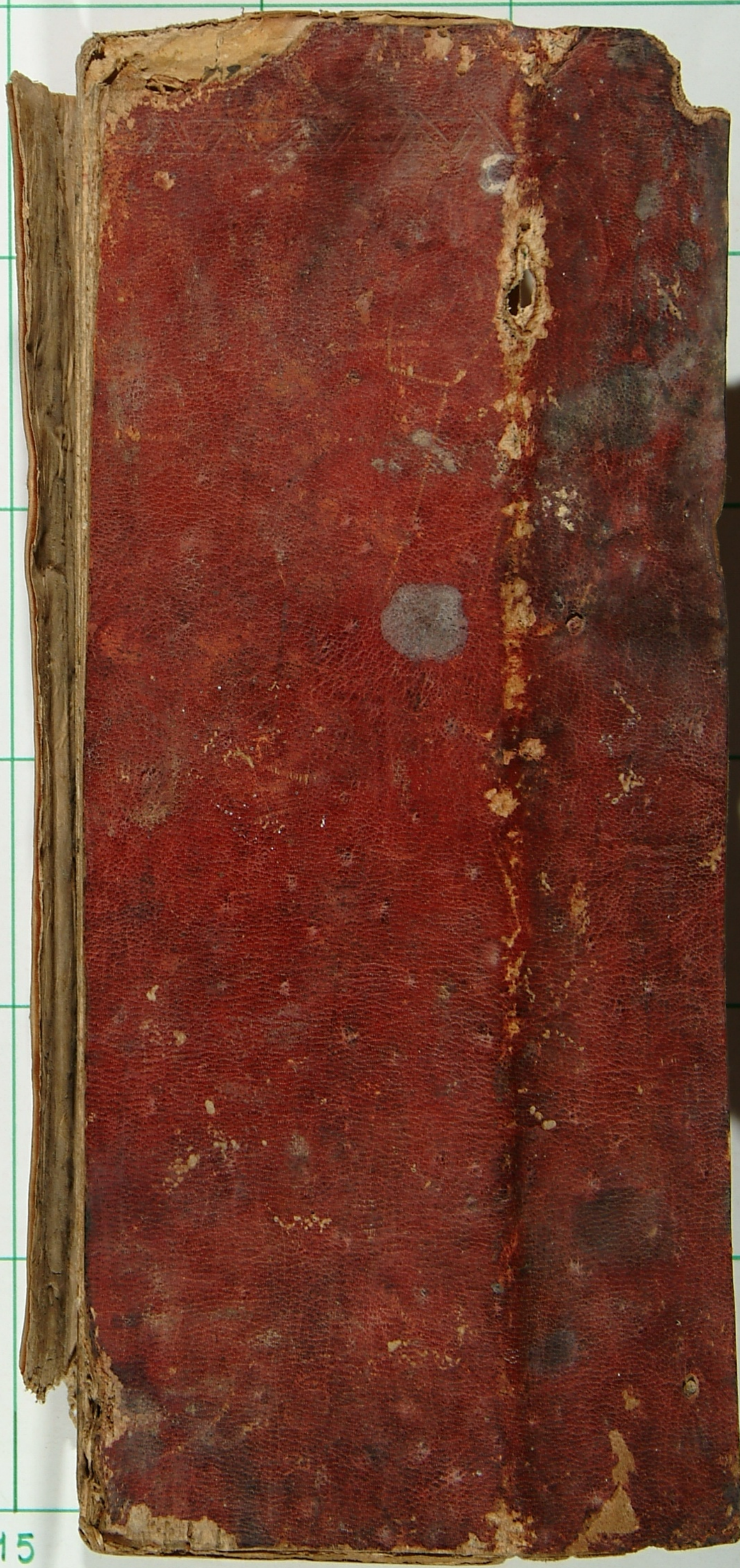
15

20

25

30

15



0 cms.

5

10

15

20

25

30

ददयीत किं तावदिष्टं कुरुता
 तेषां यत्र संप्रदायी नृजिन्मज्जमा नृपं सुव
 दूयतां तादिष्टानां गवली तव ॥ सुधाशुक्ताका इ
 का ॥

सिद्धसमूह वर्णि ॥ ॐ गान	दात्र समूह वर्णि का वर्ण	दात्रसमूह कदाय ॥ वर्ण
ॐ सुसमूह ॥ काम ॥ वर्ण	विजयन उत्र कसकन ॥ वर्ण	वर्ण वर्ण ॥ वर्ण
वर्ण वर्ण ॥ वर्ण	वर्ण वर्ण ॥ वर्ण	वर्ण वर्ण ॥ वर्ण

श्रीवत्सुखविष्णुनरनाददीनि॥ रुक्मसुख
 धीविषयचरनात्मना नित्यरुक्मसिद्धि
 यथाहमाहृतलक्षणरुक्मसिद्धि
 ध्यानमाहृतलक्षणरुक्मसिद्धि

आर्द्रलेवनउत्तुष्टेव नडनी मय नस्तुथ ॥ यत्तिव्यतीति नस्त्यानि दृग्लो ज्ञानमाकर्ण ॥

11 12 13 14 15 16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 26 27 28 29 30 31 32 33 34 35 36 37 38 39 40 41 42 43 44 45 46 47 48 49 50 51 52 53 54 55 56 57 58 59 60 61 62 63 64 65 66 67 68 69 70 71 72 73 74 75 76 77 78 79 80 81 82 83 84 85 86 87 88 89 90 91 92 93 94 95 96 97 98 99 100

ॐ नमो गगनवासुदेवा
 य॥ ॥ अथ विष्णु प्रति
 ष्ठा विधिलिख्यते ॥ नो ना
 दवयति ष्ठावता याचना
 दि ॥ गगनाय निमनुने
 मधुलयनधनवक्त्रव
 यमयगजयः गजजा
 मदि कंकवा ॥ यथा क
 लकलकुमुमधुयादिकं
 कृत्वा ॥ मोक्षप्रदकर्म
 न ॥ वाक्मलराजयित्वा ॥
 धृवस्मिन्दिवसकृत्वा
 नायवासितं ॥ निधी ॥ यथ
 ह्ममधुर्यगत्वा निर्मक
 नमानरु ॥ मरुतुगतल
 लुनवजातिः कलुकवृ
 कसमानीय ॥ वक्रियवा
 ल्यः दूवांसर्वयदुदत
 धुलकया सिः रलोठक
 जनुलाहवृधुवचसमी
 कृत्वा ॥ गेलनधुधु ॥ ॐ
 श्री ॥ भक्तिनिमित्तं ॥

ॐ विश्वतश्चक्रवर्तिवलिदं द्या
 त ॥ कुमुमधुयादि वरुकाध
 मूरिकांटीतीलावदिनि
 क्रिया ॥ अथ मयगयथा
 जय ॥ तिष्ठत ॥ ॐ ति ॥
 ॥ गगनयागत्वा न संस्था
 दिकं निर्वकर्मकृत्वा ॥ य
 ह्ममधुयादिरुत्तमस्त्वय
 गयजमानं न सुखाद्यं
 कानय ॥ ॐ मयादि ॥
 ॥ यजमानस्य वाक् ॥
 ॐ मोक्षप्रदकर्म ॥ अ
 मृत्विजादि ॥ दमासया
 दार्घ्यकृत्वा ॥ यथ मरुतु
 ॥ ॐ सिद्धि वसु क्रियान
 र ॥ वाक्मलसमर्थं ॥
 वाक्मलन ॥ ॐ मया
 दिगुवसमन्या सोद्य
 यागवृत्ता ॥ गगवलिद
 यस्माद्य ॥ गृहनामोक्त
 नवकणवलिदया ॥ ग
 ववदककणयालः रु
 उकादि ॥ अग्निगमादि

॥ ब्रह्मादि ॥ नवात्मह
नष्टुदि ॥ नृपूजमचदना
दि ॥ वद ॥ कुं गहनां त्वा ॥
कुं मूखमूखिक ॥ कुं विष्णु
नष्टुदि ॥ कुं मूखवाचदधि
कुं वाचोदि ॥ स्वाहा ॥ कुं
धूरसिधूया ॥ कुं गजासिधू
यकुं ममाद्रुगिष्णिष्टा ॥
जाय ॥ ॥ ॥ ॥ कुं नमः
कण्ठपालेय ॥ कुं उद्धव
मधुमावादि विगनन
लनिकलरुगलनावा
गालवा ॥ नलवागलि
लयवनआय्यकग
स्त्रितावा ॥ श्री ० स्वस्तेन
कण्ठदिमूचकगयदः
वृष्यगंधादिकन ॥ श्री
ग ॥ क ॥ सदा न ॥ गुरु
वलिविधिनायाउची
लदेवशा ॥ कुं वामा
कार्त्तिकपालकिनिद
हनमय्यस्यहस्रि
मूलक ॥ ॥ गवाघमाल

गिबसिगिकलासत्वन
गाकयता ॥ सय्यज्ज्ञायवा
नसंकलजगदिदं वाकवि
शक्तिगोय ॥ दवंग्रीरुनवा
स्वायतमतसगतं नृदरा
ववागीत ॥ अगमस्वादि
॥ ॥ ॥ अथ गविमज्ञानं ॥
वत्यकस्वस्तेनकिथन
॥ नकवलिनानमवृयज्ञा
मय्यद्यथायूजनस्तेन
किथन ॥ ॥ निवलिद
यवृजेनविधिः ॥ ॥

गतामलावार्थनवीन
जसर्षधृत्वातानाव
मूर्जदगयत ॥ कुं वीह
यद्यमयद्युथवीहिवि
कयर्ग ॥ ददि गवादा
यमयथयविश्या ॥ मे
शृत्यनक्तनयश्रिमसा
ददिहोमूर्खमकल
गयूजन ॥ वेद ॥ कुं
दित्यास्तेनस्यदित्यस
दजासिहीदअस्क

तगामधुयाचनमश्रु
 सिद्धमनसादित्यं
 मंदासाधनं ॥ श्रीतत्त्व
 ननवकार्यलिखितं ॥
 मृगं नीलवर्णीयाः कृष्ण
 श्रीगमयहृत्तगाम
 वल्लभयथाशक्तं ॥
 यदिद्विद्वत् ॥ कथिला
 अद्यतं ॥ इमहायातक
 नागर्नाश्रुवसत्त्व
 धुयाः कृष्णयाः कावय
 लंदा ॥ गमयकथलं
 दयात्तुष्टुष्टुष्टु ॥
 मयः ॥ लोभं सकथलं
 रूयद्विष्टुष्टुष्टु ॥
 तं ॥ दयात्तुष्टुष्टु
 त्यलभककृ ॥ गमदक
 ददिष्टुष्टुष्टु ॥

मृगदन्ति (६) ननु । यद्यप्य
 शिमताह्वयवृत्तश्चिवात्
 नमश्च ॥ आनुयायिनि
 मित्याकृते मृगोपुष्ट
 राजनं ॥ वायवाग्नमयं
 थोकमीधमनदुकृष्णद
 कं ॥ गामयानुक्तितामध्व
 मिथयद्यद्विपुष्टकंद
 तसमनिधायानुगम
 मृगादिपृथक्पृथक् ॥
 समादिगमनात्तृतीयं
 चतुर्थं च अथ अथ ॥
 अथमौयनिर्गमवीया
 नुमृवविचक्र (६) ॥
 गममृगदवतावर्ति
 गममथवजनाद्वर्त
 क्षीनचसामदवर्त्य
 दधिश्चिक्कयायनि
 धृतगुणस्त्वनंदव
 वनूषतुकृष्णदक
 । चक्रयागुष्णमध्वस्ते
 यजायत्युदवर्त ॥
 ततश्च ॥ अथ दधि
 ॥ अथ मायनिर्दवता

[illegible]

गतः श्रीगुरुः पुनः नवकार्थ
 कृत्वा ॥ नवकारि वृजर्न ॥ ॐ
 लुब्धाय कः ॥ नृपः ॥ गामव
 ॥ नृगुरुस्मिन्मानु ॥ नागदी
 यस्तथासौ मोगन्धर्वोऽ
 र्थवानुर्ध्व ॥ अयं नृपः न
 भादीयको मानो दीयस्
 कृत्वा ॥ ॥ गतः वृजर्न
 ॥ ॐ ॐ लुब्धाय नमः ॥
 ॐ गन्धर्वो नमः ॥ ॐ कः ॥
 नृदीयाय नमः ॥ ॐ अ
 म्भुजम्भिक ॥ ॐ गामव
 नृदीयाय ॥ ॐ विश्वत
 श्रुविता ॥ ॐ गुरुस्मि
 मन्तदीयाय नमः ॥ ॐ
 धृतं धृता ॥ ॐ नागदी
 याय नमः ॥ ॐ मूर्ध्नि वा
 यदधि ॥ ॐ सोमदीया
 य नमः ॥ ॐ उरुयि न
 गम् ॥ ॐ गन्धर्वदीयाय ॥
 ॐ अस्त्वाता ॥ ॐ वान
 रदीयाय नमः ॥ ॐ न
 मावकुम्भय ॥ ॐ की
 मानीदीयाय नमः ॥

नमो ह्यसि ॥ धनं कु ॥
 नमो ह्यसि ॥ धनं कु ॥
 सिद्धि मित्रस्य दिति नमि
 विश्वध्यायि विश्वस्य उव
 नस्य धर्मा ॥ धृतिवीर्यं
 कृष्टिर्वीर्यं ॥ ६० ॥ हृष्टिर्वी
 मादि ० सी ॥ १ ॥ क ॥ नमि
 धर्म ॥ ॐ ॥ स्था ॥ नायुधिवि
 ना ॥ धृष्टिर्वीर्यं ॥ ॐ
 सकथ्युजनि ॥ नथसुध
 न ॥ ॐ ॥ धा ॥ मित्रन त्वं
 ववद ॥ दवस्था वदोर
 वधनममय वदोरुया
 वदोरुया ॥ ॐ ॥ ववस्था
 त्वा ॥ अथवा ॥ अदकन
 सिद्धि ॥ ॐ ॥ त्वम ॥ मय
 रि ॥ ॐ ॥ ववस्था ॥ ववस्था
 ॥ ॐ ॥ अथ ॥ ववस्था ॥
 वदिरदति ॥ ॥ वामना
 जा ॥ ॐ ॥ ववस्था ॥ ॐ ॥
 द्विकोयल ॥ ॐ ॥ मूलं ॥
 वद ॥ ॐ ॥ मूलं ॥ ॐ ॥

दसूतुथ नमः॥ॐ श्री हय
 धर्मवीरि वृज न॥ॐ वृद्धि
 काय सस्त्री मूल थ नमः॥
 ॐ स्वस्ति नमः॥ लाजा
 वृज न॥ॐ सवी निह वि
 नाभय वृद्ध मूल थ न
 मः॥ॐ वृद्ध य
 लून॥ॐ स माऊ नी वृज
 न॥ॐ वृज॥ वा हय धर्म
 वीरि कथन॥ स्वस्ति नमः
 वृज लाजा कथन॥ श्री ध
 मय धर्म कथन॥ॐ
 साद वृज न॥ॐ वृज
 धियत थ नमः॥ॐ वृज
 मः॥ॐ मि वृज नमः॥ॐ
 संन स्वा वृद्ध स विना स
 कतः॥ॐ वृज नमः॥ॐ
 कतः॥ॐ वृज नमः॥ॐ
 दृष्ट्या ददामि॥ॐ वृज
 लून॥ॐ वृज नमः॥ॐ
 दिवी तथ धर्म ना हय

दातथ॥ धिवा सूर्या म
 सा अरि विथी॥ॐ वृद्ध
 वृज नमः॥ॐ वृद्ध
 लाजा स माऊ नी वृद्ध
 स्वा स माऊ नमःॐ वृद्ध
 मूल नमःॐ वृद्ध
 वि ति म नमः॥ॐ वृद्ध
 न नि वृद्ध कि कल म
 य स माऊ नमःॐ वृद्ध
 दि लाजा वृद्ध॥ॐ वृद्ध
 नमःॐ वृद्ध॥ॐ नमः
 ॐ वृद्ध वा य वृद्ध म नमः
 वृद्ध नमः॥ॐ वृद्ध
 मि॥ॐ वृद्ध वि वि ॥

तातः॥ॐ वृद्ध कि कल
 म नमः॥ॐ वृद्ध
 स्वस्ति नमः॥ॐ वृद्ध
 ॐ वृद्ध नमः॥ॐ वृद्ध
 ॐ वृद्ध नमः॥ॐ वृद्ध
 ॐ वृद्ध नमः॥ॐ वृद्ध
 ॐ वृद्ध नमः॥ॐ वृद्ध
 ॐ वृद्ध नमः॥ॐ वृद्ध

30
 25
 20
 15
 10
 5
 0 cm.

20
 15
 10

कलमयुजनं ॥ ॐ वक्र
 लोकादिथ नमः ॥ ॐ
 विष्णुकं नमः ॥ ॐ
 निवर्गकं नमः ॥ ॐ
 यानकानं ॥ ॐ श्रीभूत
 लक्ष्मीं ॥ ॐ महाभूत
 सेवस्वती पुत्रायै क
 रुना ॥ विष्णु विष्णु वि
 नमः ॥ वासुदेवक
 लमयुजनं ॥ ॐ वक्र
 लोकादिथ नमः ॥ ॐ विष्णु
 नमः ॥ ॐ सदा गिवा
 थनमः ॥ ॐ वक्र यज्ञ
 नमः ॥ ॐ दैविष्णु ॥ ॐ
 नमः ॥ ॐ रुवाय ॥ ॐ स
 रुप्रगिया ॥ ॐ निनि
 वग किचरासमय
 जनं ॥ ॥

ततश्च वक्रानसमाय
 गत्वा ॥ वक्रा आदि
 यः विनायक नमः ॥

गन्तुं विष्णुर्मा दणव
 ताकादिथ वगा महाका
 लमनक्त वा मकल्यादि
 ॥ ॐ ॐ नृपु (का) यवमा
 नका कृष्णधूमामित
 यगा ॥ ॐ कातादमवर्धु
 वयगा रुटिका वमा ॥ वृ
 धीदिता विष्णुतया
 नका वव मरुत्यत
 नीलानक्तस्य मेरुत्त
 म (ध्व) वितायवागिता
 ॥ ॥ वक्रा वादित्य
 माता वव कुरुत्यस्त
 रुक्तथा ॥ गन्तुं वद
 नी वमहा कोलायु वी
 यमानं ॥ अनन्ता वा
 मका श्वेन यगाकाद
 गधवगा ॥ ॥ कुरु
 दः कुरु दाया ययु
 नीकोथ वाम नृगक
 कर्तुं सवर्धु नृग
 मखं ॥ सयगिदिनं

॥ धातावे विधाता वधजाना
मधिदवता। धजावनिस्मि
नानित्यं सर्वविधि विना
शकं शांते क मदायसा
मयगकि सुदिताय न
मशा **वद**। उं क दृजा
यस्य गसमी पु रु मा
यत न। मा धाव ह ग मा
ह द॥ **ॐ** **व न क म व**
वृजयता॥ ० ॥ **व नि य**
दो न ध॥ **ॐ** **अ ह र्य न**
व आ द शा न क म दा दि
त्य र्य ग व लिं स या ष
न र्य ४ का मा स ४ या दू
आ लो दु यु धा र क ॥
क मा न र वृ जा गे स
उ त्प व वृ वि षी म न ४
व नि य द र्य अ कृ ति
स वा का मा न गी यि
गान ॥ त स्मा त् स वृ धु
य ज्ञे न य ति ष्ठा ना
वि अ ४ व न ४ पू ज नी

या ४ स दा वा र्य ४ क र्ता
वि द्यु त्य दृ जि ता ॥ **ॐ** ति
य ता का यु ज न वि धि ४॥

न त ४ वृ द्वा न वृ ज नी
न्या सा दि वृ ला द्यो ग ४
वृ ज नी ॥ **ॐ** **वृ द्वा ना य**
२॥ **ॐ** **व द वृ ला य रा**
वा र ना॥ **ॐ** **अ ह र्य न**
वृ द्वा न कृ वि द्यु ह य र्क
सि द य। **आ वा ह य मि द्वा**
प्र सिं वृ ज य॥ **प ति गृ**
प्र ता॥ **॥ त ता धा न ॥**
ॐ का षा र्या म न ना य क
स्य व स गा द्वा न कृ ति ना र्क
ध न ४ ग र्वा य द न य
वृ द्वा न वृ वि न य र्य ४
ले र्क वि न ४ अ र्य गी ति
म ह म नि य ह ति रि ४ र्म
स वृ मा ना र्च ला य र्वा
द्वा र्म स दा कृ ति ना यि व व
४ वृ द्वा व ला रा व य ॥

नमः॥ ॐ शतं ॥ ॥
 दानं मुनि॥ ॐ पूर्वदा
 नाधितोसाउदयेमिनि
 मन्त्रगुणगन्धर्व्या
 को नानावृक्षयुक्तं
 उमन्गहनदं॥ कोकि
 लानादनम्या॥ श्रीम
 द्विसीधुगन्धर्व्या
 तनरुलवानवृक्षय
 गानवकिर्वालोविस्म
 धुरानानवृक्षयनिर्गनि
 त्मपद्विगाननमाधु॥
 ॥ ॐ जयाय ॐ द
 मासनननमः॥ वृष्ट
 नमः॥ श्रीन॥ ॐ य
 द्मासनजयादवान
 कववकुप्रकुकुजः॥
 वज्रवकाकुर्गस्तः॥
 ॐ गन्धर्ववववदाश
 जयार्थं श्रीनवृष्टनम
 वेद॥ ॐ यश्चतस्रनड
 गयश्चतस्रधियावियावि

यस्य वृहता विद्या श्रुता
 विष्णोर्नाम धवयुना वि
 दकयि नमो हवयस्य स
 विष्णुय विष्णुति ॥ स्वाहा
 ॥ सा ॥ ॐ ॥ श्रीगवयु
 वधुवो कनकवकुलि
 लावन ॥ संपदं सर्वदा
 नात्राजया दवनभा
 युग ॥ ॐ विजया
 य ॐ दं मा सननम ॥
 युये नम ॥ ॐ नम ॥
 ॐ विजया दं मवधु
 रु ॥ गकि वको लो न
 दा ॥ कवकुलि संसु
 अविजय ॥ सिद्धिदाय
 क ॥ विजया य ॐ न
 युयं नम ॥ ॐ दं विष्णु ॥ सा ॥
 ॐ नकवको कसंसाव
 यीत वधुवधुवधुवधुवधुव
 वीर्लका वरुया न वि
 जय सननमा मा ॥ ॐ ॥
 ॐ सुमेधा ॐ यमसु

धी ॥ ॐ ॥ ॐ ॥ ॐ ॥ ॐ ॥
 मीय ॥ सा ॥ ॐ ॥ ॐ ॥
 वधुवधुवधुवधुवधुवधुव
 रुगुगुनन नलिस्स
 दारु ॥ ॐ ॥ ॐ ॥ ॐ ॥
 न ॥ ॐ ॥ ॐ ॥ ॐ ॥
 नम ॥ ॐ ॥ ॐ ॥ ॐ ॥
 ॐ ॥ ॐ ॥ ॐ ॥ ॐ ॥
 रुयकधु ॐ ॐ ॐ ॐ
 युगयति ॥ ॐ ॥ ॐ ॥
 कनाजाया सा ॥ ॐ ॥
 कतादय हयो वधुवधु
 क वधुवधुवधुवधुवधुव
 उवधुवधुवधुवधुवधुवधुव
 युगनमा युग ॥ ॐ ॥
 रु ॐ कायनम ॥ ॐ ॥
 उवलाका ॐ ॐ ॐ ॐ
 यति ॐ नति ग ॥ ॐ ॥
 ॐ म नू य वधुवधुवधुवधुव
 ॐ म नू य वधुवधुवधुवधुव
 ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ

संगमवनदीनां विष्णु
विष्णु अजायत ॥ ॐ न
मो अने नमः ॥ ॐ अम
नाथे नमः ॥ ॐ ॐ म
भगं ग ॥ ॐ को न
समूहानमः ॥ ॐ को न
समूहानमः ॥ ॐ सु
मूहानमः ॥ ॐ सु
उदाहृत्या ॥ ॐ सु
समूहानमः ॥ ॐ सु
तस्य नाम सुकथयति
उदाहृत्या नाम सुकथयति
समूहानमः ॥ ॐ सु
मो अने नमः ॥ ॐ सु
गुणानाममृतधनं च
गुणानाममृतधनं च
लो गदाधृत्या यत्ना
नाथि यमसदा ॥ ॐ
ॐ ॐ मत्तु वा ॥ ॐ
ॐ ॐ हिमगिरि मृत
नारुका गयष्टानिरु
निच ॥ गगनकानि
गीतली सदा गगन

जातिनमस्तुत्यं काला वा
यं कुला रुमी वदवदा
नमस्तुत्यं मुग्धस्मृत्तं स
दानमस्तुत्यं वलथानम
॥ **ध्यान** ॥ ॐ ह्रीं कृष्णाय
दिव्यं कृत्यं किंति स्वर्ग
वृत्तं स्मृत्तं ॥ महि नत्वा
तय रुक्मं ध्यायन् देवलि
नो जके ॥ **वन्दन** ॥ ॐ महि
ओ ॥ **साधना** ॥ ॐ ह्रीं मि
स्वर्गं वृत्तं वा किंति मि
दानं तत्तत् ॥ इति ॥
दद्यात् रुक्मिणि नमा
मिव निना जके ॥ ० ॥
ॐ गङ्गा यन्त्रं नमस्तुत्यं
ॐ गङ्गा नान्ता ॥ स
न स्वस्थे नमस्तुत्यं ॥ ॐ या
वका न ॥ लक्ष्मी नम
॥ ॐ श्री अगल लक्ष्मी
॥ विष्णु कृष्णाय नमस्तुत्यं
ॐ विष्णु कर्मा लिय

ध्यायन्ता वतानि यत्तु ॥
ॐ ह्रीं कृष्णाय नमस्तुत्यं ॥
॥ **मंत्रा** ॥ नमस्तुत्यं ॥ ॐ न
ध्याना ॥ स ध्याय नम
॥ ॐ ॐ ॐ मा नृदाय ॥
इति ध्याय नमस्तुत्यं ॥ ॐ काला
न काला ॥ न काला न
॥ ॐ ॐ ॐ विष्णु
यव सुशाय नमस्तुत्यं ॐ
नमस्तुत्यं ॥ नमस्तुत्यं
यनमस्तुत्यं ॐ ॐ ॐ
यथा ॥ कृष्ण दद्यात्
नमस्तुत्यं ॐ ॐ ॐ
॥ ० ॥ ॐ ॐ ॐ ॐ
कृष्णाय नमस्तुत्यं
यनमस्तुत्यं ॥ **ध्यान** ॥ ॐ न
यावत्त गङ्गा नृत्तं रुक्म
वत्तु किंति नृत्तं ॥ रुक्म
सहस्र नयनं वदया
मिवि रावयन् ॥ व
ॐ गङ्गा नमस्तुत्यं ॥
साधना ॥ ॐ ॐ ॐ

नवनिःशेषवत्तुहस्तान्
 जासनः सर्वयज्ञाधिपः
 दत्तस्मै नमः ॥ यमन
 मः ॥ चन्दनीदिव्यधू
 यदीयनेवर्धनमः ॥ न
 मादासवलि ॥ ॐ सुप्र
 तिष्ठातुवाय नमः ॥ ॐ
 अथ यथाऽसविदुः ॥
 यजमानस्यामुकयति
 क्षयज्ञानं रथविद्वान्
 वनः ॥ यावत्सुविदि
 नदाकुरु ॥ ३ नमः
 ॥ स्वाहा ॥ यतिः ॥ ॐ
 मनीद्विति ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
 ॐ मरुवीथामरुका
 यऽदयकिमरुनि
 विविटयाय नमः ॥
 निसर्वदवनमस्तु ॥
 ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ
 कयहविद्यानिवा
 यममस्तु यज्ञमस्तु
 कन्युल्लोभावनवा
 निर्यनकाकारवा ॥ ॐ

उगंधादि ॥ ॐ निवृत्ताना
 र्चनविधिः ॥

नमादाकिं वा नमत्वा
 न्यासाद्यवायुजा ॥ ॐ द
 किं वायनमः ॥ ॐ उ
 दम्बवृत्ताय नमः ॥ ॐ
 वारुन ॥ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ
 वरुणा विद्युहासिदिह
 नवे ॥ आवाहयासिदा
 नस्मिन्पूजयतिगृ
 ष्णता ॥ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ
 नवरुवाविहंगमगन्ध
 रं गवतीसीकिताः ॐ
 मनीतिनदकूलनिवि
 वनं श्रीवृत्तदवालय
 आभादासुखयामना
 हवचनायथाकल ॐ
 सदाऽधीमान्तिदग्ध
 गन्धरिवसित ॥ ॐ ॐ
 त्र्यदादुकि ॥ ॐ ॐ ॐ
 ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ

ॐ नमः शिवाय ॥ वृ
 धिर्वी नमः ॥ ॐ श्यानाय
 धिर्वी ॥ ॐ उदन्व नवृका
 य नमः ॥ ॐ थवृ मृ गयि
 जना ॥ ॐ सूर्या उदना
 य नमः ॥ ॐ दाना यवी
 ॥ ॐ हृनिता नमः यन
 मः ॥ ॐ वला विगृ मः ॥
 ॐ यश्च रुत श्या नमः ॥
 ॐ रुता यत्ना ना ॥ ॐ
 यथ श्या नमः ॥ ॐ थगृ
 दं धा ॥ दान रुति ॥ ॐ
 श्यावा सिग नमः माद
 नमः ॥ ॐ लाक माशयं
 मरु दान मिष्ठ मिद वदा
 न वसदा सस द्यमाना च
 लं ॥ ॐ गय विवृ लाखला
 चय दना गमृ नद्यो नाक
 वसा यं यव तद हृगृ गम
 कल निर्यं न माद कि ॥ ॐ
 ॥ ॐ च गुय नमः ॥
 ध्या न ॥ ॐ च द्रुम तसि
 वृथारु मक वकं िला

चनं। दधुं। कृष्णं। गदाचक्रं
 यमसूत्रे निमदनं॥ तद
 ॥ ॐ ॥ नावाती। ध्वन
 मती। हि। रू। ०। सु। यै। य
 वसनीमनवदसं॥
 । वृ। कृ। तानादसीविवृ
 वगदाधरुवृथिवीम
 रितामयुखे॥ स्वाहा॥
 ॥ ॐ ॥ अतसीयुष्य
 संकाशं। ललकं। नूय। ॥
 रितां॥ विद्युसर्वविना
 शीयवधुमूर्तिनमायु
 ग॥ ॐ ॥ यवधुयनम॥
 ॥ ॐ ॥ यवधुयनक
 वकुअकृष्णवधुकुस
 लितां। त्वमरुटकवाध
 अ३धनूतिद्विधुमदनं॥
 वद॥ ॐ ॥ दवयगोदव
 द्याद्यायतयाजीयतम
 ध्वनंकल्ययती॥ ॐ ॥ य
 हूनयतां। माजिकनूतम
 स्व॥ ॐ ॥ ॐ ॥ मा। मदनदवी

[illegible]

ॐ उद्बुधस्वा ॥ का ७४ ॥ ॐ
 कमलोदलस्यैकाग्रिआगधर्मे
 ध्याननरुपितं नमस्क
 रामितं वृद्धं नाहिनीन
 ननं धुनं ॥ ॐ वृहस्पति
 यनमः ॥ ध्या न ॥ ॐ वरु
 वीरुवनदादिः धृगंद
 धुकमधुर्लं । यीतामन
 धवदं दं दवा वायुविवि
 त्तय ॥ वद ॥ ॐ वृहस्पति
 अशास्त्र ७४ ॥ ॐ दवकि
 तननगध्वे वृजितं वाद
 यंकर्ज । आनाध्यामिवा
 गीर्गसुनावायुवृहस्प
 ति ॥ ॐ वासाय नमः ॥
 ध्या न ॥ ॐ यीतवल्मु
 महातजायस्ककं ववह
 सुकं । सर्वभूतस्य वल्मु
 नध्यायद्वा समुनिमदा
 ॥ वद ॥ ॐ अयं कुम्भी ॥
 का ७४ ॥ ॐ सद्वा मुनेव
 वल्मु वं गकी गक्यति

स्मिन् । यवतं वीतिगुमु
 धानमस्क वा सदेवत ॥ ॐ
 हनुमते नमः ॥ ध्या न ॥
 ॐ वायुवृहस्पतिवृनं
 कवल्मुलावनं । विद
 धुमहिकाहसं हनुमक
 मिवित्तय ॥ वद ॥ ॐ
 गीवान्धाया न ॥ का ७४
 ॥ ॐ वकवल्मुमहावी
 नः वायुवृहस्पतिवृनं
 । कन्दमुलरुलं वीतिरु
 नुमते च वनमः ॥ ॐ
 नलवति यनमः ॥ ॐ ग
 धानां वा ॥ ॐ सनस्वत्ये
 नमः ॥ ॐ वावकान ॥ ॐ
 लक्ष्मी नमः ॥ ॐ श्रीगुण
 ॥ ॐ ववाहयनमः ॥ ॐ
 विष्णुर्कवीया विषवा
 वं य ७४ वा विवानिमिम
 नजा ७४ सि । आयुस्कं राय
 दहन ७४ सधस्कं विवक
 माधस्कं धीनृगयावि

भूयत्वा ॥ ॐ ॥ मया यन
 मः ॥ ॐ ॥ गन्धर्वानां ॥ सव
 या यनमः ॥ ॐ ॥ मातृजा
 य ॥ दत्ता यनमः ॥ ॐ ॥ का
 लिका ॥ ॐ ॥ वक्राथ
 नमः ॥ ॐ ॥ त्वजविदा ॥ व
 वसुथी ॥ यनमः ॥ ॐ ॥
 वक्राहने ॥ यन्त्रवा
 यनमः ॥ ॐ ॥ अग्रसूय
 ना ॥ ॐ ॥ वृषनीकधजा
 यनमः ॥ ॐ ॥ अस्माकवि
 मिद ॥ ॐ ॥ यमोयद
 धुहसायथतावियन
 यनमः ॥ ॐ ॥ न ॥ ॐ ॥
 तात्तमहियातुददु
 हसाहयानकाकाल
 याभधनकाल ॥ अथद
 क्षिणादिग्रहा ॥ वय ॥
 ॐ ॥ यमनदत्त ॥ सा ॥ ॐ ॥
 ॐ ॥ दलुहसयमद्वंध
 मी ॥ ॐ ॥ महावलंगव
 आवाहयिष्यामिधर्म

वाजतमायुः ॥ ॐ ॥ वन्दनादि
 भूयधुयदीरुलनेत्रय ॥ ॐ ॥
 कालवलि ॥ ॐ ॥ सुवतिशारवाय
 नमः ॥ ॐ ॥ अथयथा ॥ ॐ ॥ जमान
 त्यामकप्रतिशायकानमयनि
 दानाच्चने ॥ यावदकिमिदि
 ॐ ॥ वक्राहने ॥ ॐ ॥ नमः ॥
 हा ॥ ॐ ॥ मनाह्मि ॥
 जायता ॥ ॐ ॥ महावीर्याम
 हाकाभरिनाथनमस्युत
 ॥ गृहधार्मिकानिर्गन्धमा
 दना ॥ ॐ ॥ अहिभावनय
 रुतवृत्तग्रहविघ्ननिवाय
 ॥ समस्तयज्ञसमस्तक
 नृहोतामार्गनाजनिष्य
 नककारव ॥ अथगंधदि
 ॥ ॐ ॥ निदक्षिणादानाच्चनवि
 क्षि ॥ ॐ ॥

ता ॥ वयसि मदानगत्या ॥ या
 सुवला ॥ यथा ॥ ॐ ॥ य
 शिमदानायनमः ॥ ॐ ॥ अ
 धुवृत्तायनमः ॥ आवा
 हने ॥ ॐ ॥ अहि यश्चिमदान

ॐ विष्णुविध्वंसकवा
 वाहयामिद्वयसिन्धु
 धर्मसुखा ॥ ॐ ॥
 ध्यायन्तं कदापि तास्ते
 त्वहियतवसाचला इयं
 मेरुजालाद्वर्तुलगाववि
 श्वसकलाद्वदीयमानः
 सदा। आवाहति गायः
 समस्तमगथावेदयन्
 तालयानानादानवरु
 तउरुकजनालीलासि
 नावष्टिभ ॥ ॐ ॥
 दीविषू ॥ अथ ॥ ॐ
 तत्वायामि ॥ ॐ धृतिवी
 नमः ॥ ॐ स्थाना धृतिवी
 ॥ ॐ अथ वृत्ताय न
 मः ॥ ॐ अथ वृत्ताय न
 मः ॥ ॐ कल्याणदाय न
 मः ॥ ॐ द्वा वादवी
 ॥ ॐ वृत्ताय न
 मः ॥ ॐ वृत्ताय न
 ॥ ॐ वृत्ताय न

ॐ ह्रीं यन्ता ना ॐ य (धृत्वा)
 नमः ॥ ॐ यन्ता यन्ता ॥ यान
 ॐ ॥ ॐ रागवानुधमधु
 लनिनिववाविसी धुमञ्ज
 एक ४ या या धनि गायाम
 हायानतान ४ सू था धमा
 यनिनिशसितो सुवनध
 दानवग (होति) त्यसनाद्य
 गाना ना कदिम (धृत्वा) गायि
 सकलं अस्तु वलं तनमः ॥
 ॥ ॐ यन्ता नमः ॥ यान ॥
 ॐ एकवकुसुमी गान ४ व
 यस्तु वव ४ कुकुश या ध
 कान्ता वव ४ धी गान्ता
 क्रियदायितं ॥ यान ॥ ॐ वि
 धु कं वी यानि यवाय
 म ४ या यि वानि विमनजा
 ४ सि। था अस्तु रायदूत
 न ४ सधस्तु विवक माधस्तु
 धानु गान्ता विवुधत्वा ॥ यान
 ४ ॥ ॐ यान्ता व ४ व ४ व
 ४ ॥ सर्वान्ता नमः ॥ यान ॥

।सर्वशक्तिकवन्दवंधातानं
 वनमाशुभ॥ ॐ विधा
 ननमः॥ ॐ कसला
 सनयुवोदधजसूग
 दारुयशविधागाकुकेरु
 रथ सागिरादवृष्टिपदाय
 कशावका॥ ॐ दिवावाविष्णु
 उतवायुशियामहावावि
 ष्णुलो नंतनिष्ठाडराहिरु
 सोवसुतायुहस्वयवुद
 क्षिप्तदातसयाविष्णुव
 त्वा॥ ॐ कसलास
 नसुखासीनवपुरुसंध
 जारुयकुकेमारुयुष्टिदं
 वविधानं नमाशुभ॥ ॐ
 सामवदायनमः॥ ॐ
 ॐ बालसूर्यवरुसामय
 शिमवृविरावथरु।युरु
 कवपुदधुनि अदमाला
 कसला॥ ॐ ॐ नज्ज
 आदि॥ ॐ सदारुय
 यदाता नवकुलादिगविग्र
 ह।यशिमकसलसुवसा

ॐ
 मवदनमाशुभ॥ ॐ ॐ
 यनयनयनमः॥ ॐ
 ॐ हनिदधुहयसुवउजा
 दिगलकामक।कमधुल
 रुयायाहिःचित्तयदाय
 नाधिय॥ ॐ ॐ नजा
 या॥ ॐ ॐ ॐ वउवाक
 हनिदधुहयसु काननं
 रं।नमासुहवसतांश्रीम
 केदायनयति॥ ॐ ॐ
 नलाकायनमः॥ ॐ ॐ
 लाकायनमः॥ ॐ ॐ
 जायतिश्चनति॥ ॐ ॐ
 मादनायनमः॥ ॐ ॐ
 यतानमः॥ ॐ ॐ
 विनया॥ ॐ ॐ
 मः॥ ॐ ॐ
 ॥ ॐ ॐ
 मः॥ ॐ ॐ
 मः॥ ॐ ॐ
 ॐ ॐ
 धवलाशुवहाशुव

दातुं विदुषिनां कमवुलं व
 उवाकं ध्यायन्तु नन्द
 न॥ **ध्या** ॥ ॐ ॥ गंतीं अन्ता
 खनिष्कता ॥ **सा** ॥ ॐ ॥
 गंतीं नमदं विष्णुं शुक्र
 वसुधा नीयकां ॥ ॐ ॥ ह्रीं
 ध्यायन्तु नमो मिनिन्यं
 वरागवो ॥ गंतीं अन्ता यन
 म॥ **ध्या** ॥ ॐ ॥ ह्रीं ॥ ह्रीं
 निरुका नं ह्रीं वनधनं
 ह्रीं नृपतिं नमो नमो ध्यायन्तु
 ह्रीं ॥ यं कुरु मे नमो ॥ **ध्या**
 ॥ ॐ ॥ गंतीं अन्ता ॥ **सा** ॥
 ॐ ॥ अदसी वृषा संका ॥ गंतीं
 स्तनो नन्दन विष्णुं कालं
 जेय विष्णुं लं वरान्त मा मि
 ने ध्ये न॥ ॥ ॐ ॥ विष्णुं वध
 यनम॥ **ध्या** ॥ ॐ ॥ ह्रीं
 ह्रीं कल संरुग ॥ कं कं मा
 ह्रीं कन द्यु गं ग्यारु यं क
 नं ध्यायन्तु नमो ॥ गंतीं विष्णुं
 वरान्त ॥ **ध्या** ॥ ॐ ॥ नृक सांता
 गंतीं ॥ **सा** ॥ ॐ ॥ ह्रीं
 ह्रीं जतम सुखं लं का नो स

नमो सुभा नमो सा धि वने थं
 तिदं वनं नमो सु वि ली वणं
 ॥ ॐ ॥ ह्रीं ॥ यं नमो ॥ **ध्या** ॥
 ॐ ॥ धनं वीर कं ध्यायन्तु
 गंतीं नमो ह्रीं विष्णुं न
 वज कला ह्रीं नमो यद
 गा कव ॥ नमो ॥ **ध्या** ॥ ॐ ॥
 जायत नमो ॥ **सा** ॥ ॐ ॥
 नमो धनं नमो ह्रीं नमो
 ज कला ह्रीं नमो कं न ध्यायन्तु
 ध्यायन्तु ह्रीं यं यनमात्म
 न॥ ॥ ॐ ॥ गंतीं अन्ता यनम
 ॥ ॐ ॥ गंतीं अन्ता ॥ ॐ ॥ स
 नमो ह्रीं नमो ॥ ॐ ॥ या वका
 न॥ ॐ ॥ महल ह्रीं नमो ॥
 ॐ ॥ श्री गंतीं अन्ता ॥ ॐ ॥ क
 धि ला यनम॥ ॐ ॥ उ नृ वि
 ध्यायन्तु नमो ॥ नमो यं य
 नमो ध्यायन्तु नमो यं य
 धि वने थं यं नमो ति नमो
 ह॥ ॥ गंतीं अन्ता यनम॥ ॐ ॥
 नमो ध्यायन्तु नमो यं य
 ॥ ॐ ॥ ह्रीं ॥ नमो यं य

30
 25
 20
 15
 10
 5
 0 cms.

य नमः ॥ ॐ का ॥ ॐ का ॥ ॐ
 गा ॥ न का ॥ ये नमः ॥ ॐ व
 जे वि र द ॥ ॐ य व स
 गा य नमः ॥ ॐ व का ह
 नी य ल वा य नमः ॥ ॐ
 अ ध म य न ॥ स क क
 धु ध जा य नमः ॥ ॐ अ
 सा क मि ल ॥ ॐ व
 नू म य वा ग ह स य ज
 ला धि प ग य नमः ॥ ॐ
 नी ॥ ॐ ना ग वा ग म ध न
 ह स न ता य य ति वि ग्र
 हा ग म क ध व ल धा य
 ध नू र्ण म क ना स न ॥
 व द ॥ ॐ म म न नू र्ण
 ध र धी र व ॥ ॐ ॥
 ॐ ग कि या ग ध ना नि र य
 म क न स म ह न ल ॥
 नि म म ॥ ॐ क नू य य न
 मा सु व नू र्ण य न ॥ ॥
 व ल ना दि यू य धू य द
 य न व र्ण नमः ॥ ॐ का
 न व ति ॥ ॐ स य ति शार

वा य नमः ॥ ॐ य न व र्ण ॥
 ॐ य ज मा न स्या म क य ति
 ह य ल व र य नि दाना व
 ग या व ल यि म दि म न
 का क न २ क ३ नमः ॥ स्वा हा
 ॥ य ति ॥ ॐ म मा द ति ॥
 दान नु ति ॥ ॐ म ह वी र्था
 म ल का य स व धु स ह य
 ति ॥ ॐ य द न ति ग ॥ गे ल
 ह म क स ॥ म र न ॥ ॥
 ॐ अ हि ना व र य ल व
 क य र वि द्वा नि वा न य
 ॥ स म र्म य लू य जा स म
 ल क र गृ ह ग ता न व
 ना ज नि र्ण न क का र
 वा ॥ अ ग न्ध दि ॥ ॐ ति
 य ति म दाना व र वि धि ॥

ॐ ॥ ॐ क न व दाना व र
 सा दि य ल व र य लू य
 ॥ ॐ क न व दाना य नमः
 ॥ ॐ स क व दाना य नमः

॥ आवाहन ॥ ॐ अहि वा
 क न दान सु अरु नि वि
 धु सि द्य थ आ वा ह य मि
 द्र न सि न यु ज य धे नि गु
 ॥ अ गां ॥ ॐ श्री मा
 न शु न डि वा जा हि म क
 न क री थे जा गा यु नू त न
 द द द म म ना मि ॥ सु म
 नू श ना ना य ह्ना ग ध ना
 वि न सा नि ल स स्म न ह
 मि थ ज न वि वि व न रु
 व य ॥ ॐ द द री ॥ व म नू थ ॥
 व द ॥ ॐ द वी द्र न ॥ ॐ
 ० स द्वा ट वी धं म म यी न
 व द य ॥ आ न त्म न त न
 न ल क को र नू द का म ॥
 क मा न ल च मी व ता य व
 द ० न ल क को र नू द
 का म ॥ अ थ द द ॥ ॐ
 ला ये मि ॥ वृ थि वी न म ॥
 ॐ सो ना वृ थि वी ॥ द द वृ
 का य न म ॥ ॐ थ वृ द

मया दत्तुं ह्यं पय विषयं नमो

वृ थि वी ॥ म रु द द
 ना य न म ॥ ॐ द्रा ना द व
 ॥ आ ना य ना व ल य न म
 ॥ ॐ व ल नि र्म म ॥ व व
 ल न थ ना न म ॥ ॐ द ना य
 ला ॥ य थ थ ना न म ॥ ॐ
 अ म र्थ थ ॥ द्रा न यु मि ॥
 ॐ श्री गे ल नु सु म नू ना
 मा हि म न त्म व र मि द्वा ल
 या ना ना वृ द स मा क ला
 नि क न क न नी स ना स
 वृ न श ना र्मि ध म ना ह
 न ल नि व य थ नू श नि ला
 ० रु टि का ० सा ० य थ व
 त ना ज ना म मि व सा व न
 स द र कि ना ॥ ० ॥ ॐ वि
 थ थ ना य न म ॥ ॐ न
 ॥ ॐ न का र्मि म व ल
 व र वि थ व ना क स मि त
 ग दा व को मि र्मि व थ
 ० क सि दि रु ल द द
 ॥ व द ॥ ॐ य न दि वृ सु
 व म न वी थ ल मृ द्वा न

लीमः कृत्वा नामिनिहाय
 स्यात्प्रभृतिविक्रमभक्त
 विदियति उवना निवि
 ध्या ॥ **सा ५१** ॥ ॐ शुभमव
 धुमहाकार्यगदात्रका
 सिद्धाविर्षा ॐ शुभसिद्धि
 यदाता वविष्वक् नमाम्य
 हा ॐ देवता लोयनम
 ॥ **सा ५२** ॥ ॐ यकोस्यं कयि
 लं शुद्धि लवदा अक्ष
 विर्षा वयं किं गधनं कि
 ॐ मयुक्तं यत्तु सिद्धिदं
 ॥ **वद ॥** ॐ विष्णु वनादम
 सि ॥ **सा ५३** ॥ ॐ शिखरं विं
 गलं श्रीदं नीलाश्रमस
 मयरां यत्तु सिद्धिपदा
 गा वंद्यया लनमायु
 त ॥ ॥ ॐ शुभं वद
 यनमः ॥ **सा ५४** ॥ ॐ कृष्ण
 यति वद्वीर्यं कमलुल
 वनयुक्तं विदुषीयुक्तं
 या ॥ **ली** ॥ शुभं वद्वीर्यं
 संपन्न ॥ **वद ॥** ॐ लोद

धृगम २

दवी ॥ **सा ५५** ॥ ॐ कृष्णव
 धव उवाकमूकनकुक्ति
 तारुमं विष्णुमहिक
 वनित्यं मथर्वण नमायु
 ता ॥ ॐ कलियुगयनम
 ॥ **सा ५६** ॥ ॐ गदा दाला
 रुयाया लिलो न्ववक्तुं
 ॐ कमलं कृष्णदीपिक्कव
 ॐ वीर्यं यत्तु कलियुगं
 यति ॥ **वद ॥** ॐ शुभं वद
 य ॥ **सा ५७** ॥ ॐ कृष्ण
 जय उवाकं लोचनम
 नमस्ति ॥ ॐ नमसिद्धि
 दाता वनोमि कलियुग
 नन वति ॥ ॥ ॐ सत्यलोका
 यनमः ॥ ॐ कृष्णलोका
 यनमः ॥ **वद ॥** ॐ यजा
 यति यनति ॥ ॥ ॐ मा
 हृदयवद्वीर्यं यनमः ॥ ॐ
 हेमकुटयवद्वीर्यं यनमः
 ॥ ॐ शुभं वद्वीर्यं यनमः
 का वममि व यधमव

[illegible]

तत्रैवमार्क (७) या यवे नम
 ४१ ॐ ग न य त थ न म ४१ ॐ
 ग नौ ध नौ त्वा ॥ स न स्व य
 नम ४१ ॐ या व कान ॥ म ह
 ल द्वा नम ४१ ॐ यी य न
 ले द्वा ४१ ॐ न व सि ह य न
 म ४१ ॐ वि द्वा न ना ट म सि
 ॥ ग म या य न म ४१ ॐ न
 व द्वा नौ ॥ स व या य न म ४
 ॥ ॐ ॐ मा डो ने च ॥ दू वी
 य न म ४१ ॐ का ध यै त ॥
 व द्वा य न म ४१ ॐ त्वं जि
 द्वा दा ॥ यं व सू या य न म ४
 ॥ ॐ व द्वा ह वी ॥ य लू वा
 य न म ४१ ॐ अ ह्य सू य न
 ॥ ग ॥ ॐ मू मू स्व ध जा य
 नम ४१ ॐ अ म्मा क मि द्वा ॥
 ॥ ॐ कू य ना य ग दा ह
 स्मा य व ना धि य त थ न म ४
 ॥ य ॥ ॐ कू व नं ह य मा
 वृ हं सर्व ग स्व व वि प्र ह

॥ पूर्व रुद्र विशालादी सर्व
 सर्वविदायकां वद ॥ ॐ
 कृद्विदंगयवत् ॥ सा ॥ १४ ॥
 ॐ सर्वतत्त्वम (ध) य ॥
 सा मा न जा वृ वल्लि गः
 ॥ १५ ॥ कृ वृ वृ ग दा ह क
 कृ स सा मा त्म ज न म ॥
 च त्थ ना दि यू य धू व दी व
 ने व द्वा न म ॥ १६ ॥ ॥ त ता दा
 न व ल ॥ ॐ सू य नि द्वा रु वा
 य न म ॥ ॐ य न र्थ थ ॥ १७ ॥
 य ज मा न स्या मू क य नि
 द्वा य क्ता न रं य नि द्वा ना
 ज्ञे य या व दू क न दि द्वा
 न द्वा क न र क न म ॥
 स्वा हा ॥ १८ ॥ ॐ म
 नो द्वा नि ॥ द्वा न यु नि ॥ ॐ
 म हा वी र्थ म हा का र्यं
 द्वा द्वा टि क म नि र्द ॥ १९ ॥
 न द्वा गं लो लं हि म वत्
 सू र्ग म लि गं ॥ ॐ न दि ग

[illegible]

म॥ ॐ यावका न॥ लम्बे
नम॥ ॐ श्री गुरु लक्ष्मी
॥ गम मया यन म॥ ॐ गं
मृदा न॥ ॐ मवया यन
म॥ ॐ ॐ मानुषा य॥ ॐ
इवा यन म॥ ॐ कावृत्
॥ वत्ता यन म॥ ॐ त्वं
विद्वत् ॥ ॐ वत्ता यन
नम॥ ॐ वत्ता हने ॥ व
लवा यन म॥ ॐ अष्ट
सूयत्रा ह॥ ग॥ ॥ कृमद्व
जायन म॥ ॐ अस्माक
मिद्व ॥ ॐ अ॥ नय ॥
किह सायन म॥ ॐ अ॥
॥ ॐ सका द्विष्ट वं व विरा
वमदमालाक म॥ ॐ
॥ दालमालाक लं वकं
किह संवृत्त सन ॥ वद ॥
ॐ अ॥ निमृदा ॥ सा ॥ ॥
ॐ गीत गीत मयं वं वं वं
वर्तु महायूतिं वं वं वं

नमो किं हं मनिभवन
मा सुति ॥ चन्द्रनादिषु
मदीय हस्तने वद्यं नम
॥ बलि ॥ प्रमिष्टा ॥ ॐ
मना द्रुति ॥ वनपुति ॥
ॐ नृनय कृतवन कदी
यं सव्ययिदृष्टं विनिवा
तितायां दाना विदव
रिग ॐ नृ सुनिनकं
उासव सुदिनसेवा
अरुमधादि ॥ ॐ स्वा
मेय दाना च विविधि ॥

तमाने मृत्युदा नात्र
॥ न्यासादिषु ववक्त
त्वा ॥ ॐ नृ मृत्युदा नाय
नम ॥ ॐ नृ वृत्ताय
नम ॥ ॐ नृ कदी ॥ ॐ
गुत्वाया मि ॥ ॐ नृ थि
वृत्तनम ॥ ॐ नृ नाय
थिवा ॥ ॐ नृ थि नम

॥ ॐ नृ थि नम ॥ ॐ नृ
लिङ्गा नाय नम ॥ ॐ नृ
ना देवी ॥ ॐ नृ नृ थि
नम ॥ ॐ नृ वृत्ताय
॥ गल दाना नम ॥ ॐ
गल नात्वा ॥ ॐ नृ सव्य
नम ॥ ॐ नृ वका न ॥ ॐ न
हा लक्ष्मी नम ॥ ॐ नृ थि
लक्ष्मी ॥ ॐ नृ मयाय
नम ॥ ॐ नृ वृत्ताय ॥ स
मया म नम ॥ ॐ नृ मां नृ
दाय ॥ ॐ नृ थि नम ॥ ॐ
काधुता ॥ नृ नाथ नम ॥
॥ ॐ नृ विद्वता ॥ यत्र
सुगाय नम ॥ ॐ नृ नाथ
नृ ॥ यत्न वाय नम ॥ ॐ
अष्टमयना ॥ ॐ नृ
नृ नाथ नम ॥ ॐ नृ मा
कमिष्ट ॥ ॐ नृ नृ थि
यत्र नृ नाथ नाथ नाथ
विद्यतय नम ॥ ॐ नृ ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ नमो
त्यलदलनेयसु ॥ कथा
याविमयेद्यविकननाद
सम्भवं ॥ **वद** ॥ ॐ यत्कद
वी ॥ **सु** ॥ ॐ सर्वथा
धिया ॥ ध्रुवभेसृत्यानील
विग्रह ॥ वप्रहसामला
वीनानादसोनमासुते
॥ चन्द्रनादिवृषधूयदी
यरुलनेवद्यनमः ॥ **व**
नियदानं ॥ परिष्ठा ॥

ॐ मेनाद्रुति ॥ दानुमु
ति ॥ ॐ ॐ यवयक्तुगव
नकलीयेसवायिदृष्ट
विनिवारितय ॥ दाना
विश्वसिक्त ॥ ॐ सुक्तिं
नकांरुभसर्वसविग्रस
य ॥ अरुगंधादि ॥ ॐ गिर
नेमृत्वादानावधविधि ॥

तत्तावायदावावर्षी ॥ वा

सादिप्रवृत्तत्वा ॥ ॐ वा
यवृद्धोनायनमः ॥ ॐ
कंकवृद्धायनमः ॥ अथ
दर्श ॥ ॐ गत्वायामि ॥
धृतिवीनमः ॥ ॐ शाना
धृतिवी ॥ ॐ यथोत्थानम
॥ ॐ अथयथ ॥ ॐ य
दिवा नायनमः ॥ ॐ द
नादवी ॥ ॐ गानधायन
मः ॥ ॐ वत्ताविर्दृग्म ॥ ग
धायनमः ॥ ॐ गध
नात्वा ॥ सनस्तुत्य ॥ ॐ या
वकात ॥ ॐ द्यो नमः ॥
ॐ ग्रीष्मलक्ष्मी ॥ ॐ
मयायनमः ॥ ॐ गध
दाना ॥ सवयायनमः
॥ ॐ मा नूदाय ॥ दूदाय
नमः ॥ ॐ काधुताका
धुता ॥ नकायनमः
॥ ॐ तंजविष्टदा ॥ यं
वसुजयनमः ॥ ॐ न

नादिष्वथवृषदीवरुलने
वर्धनमश॥ वलियदान
॥ यतिहा॥ ॐ मनोद्वाति॥
दात्रमुति॥ ॐ अयत्रय
रुगवरदुषायमिति॥
अश्वगन्धादि॥ ॐ श्रीभान
वानावधविषि॥

गतः अथ द्वात्रिंशत् ॥ नमो
 सादिकेन्द्रकृतवृत्ताय नमः ॥
 मः ॥ अथ द्वात्रिंशत् ॥ अतः
 यामि ॥ यथिवी नमः ॥
 अं स्यात्तयथिवी ॥ यथि
 स्यात्तमः ॥ अं यत्तयथि
 ॥ अं यथिवी द्वात्रिंशत् नमः
 ॥ अं द्वात्रिंशत् ॥ अं अ
 मत्तवत्तयत्तमः ॥ अं
 वत्तवत्तवत्तमः ॥ गद्ययत्त
 यत्तमः ॥ अं गद्ययत्त
 ॥ सत्तवत्तयत्तमः ॥ अं य
 वत्तवत्तमः ॥ लत्तवत्तमः ॥

श्रीधर्मलक्ष्मी॥ (मम
 यायनम॥ ॐ नमो नमो
 सखयायनम॥ ॐ
 मां नमो नमो नमो नमो
 म॥ ॐ काष्ठाय नमो
 येनम॥ ॐ त्वदिष्टदा
 ॥ यत्र सगयनम॥ ॐ
 वक्राहणीयं नमो वाय
 नम॥ ॐ अष्टमयना
 (म॥ ॐ धर्मगोत्राय नमो
 म॥ ॐ अस्माकमिष्ट॥
 ॥ ॐ विष्णुवक्त्रकहसाय
 यागालो धिययनम॥
 ॥ ध्यान॥ जनकं यष्टु
 त्रीकाकं रुद्रमदशमं
 अतं विष्णुदामयति
 कां कृमी नृपयुज
 य॥ ॐ विष्णु
 का॥ सायनं यत्र मधि
 यति त्वमनकं नाम
 विष्णुं याता नवस

नमिहं मनकायनमा
 सुग॥ चित्तमदिवय
 धृषदीयस्तने वदति
 म॥ वलिद्यमान॥ धिति
 छा॥ ॐ मनाहृति॥ द्वा
 प्रभृति॥ ॐ अयं वयं
 तव प्रदलीयं सखायि
 दूष्टविनियोगितयं द्वा
 नाविदवस्ति ॐ लुप्त
 किं न कुरु मे सर्वदिन
 सखा॥ अष्टमयनादि॥ ॐ
 तिष्ठधर्मानां च विधिः॥

नमो नमो नमो नमो
 सादिकं वदति ॐ
 उद्धवाय नमो नमो
 वदति नमो नमो
 कर्ण॥ ॐ नमो नमो
 युधिष्ठिरं नमो नमो
 नायुधिष्ठिरं ॥ यथिष्ठिरं
 नमो नमो नमो नमो

ॐ ग नो ऽमे स्वा ॥ सा ग ॥
ॐ ग ज व क म हा वी नं सु
ल भा द क पा नि न । स व
वि द्य वि ता ण य गं म ध
उ न मा सु ता ॥ अ ग नं धा
दि ॥ ॐ ति ग ल य ति क ल
ग म च्छ ल वि धि ॥ ० ॥

त त णी ग न स य य ति म
उ क न स य वृ द्ध यु न क ल
ग य ज न ॥ ॐ यु न व न म
॥ धा न ॥ ॐ क क मा व ल
सं द ग म द मा ल ॥ स य
स क ॥ ॐ ग न दि ग मा
स्वा य यु न म ति च्छ य
ग ॥ व द ॥ ॐ वृ द्ध स य ज
ति ॥ सा य ॥ ॐ द वी ना
व स च्छ य म यी ना च न द
द य ॥ ॐ यु न म ति न म स
स च्छ य म ति ग न द ॥ अ
ग न धा दि ॥ ॐ ति यु न क

ल ग म च्छ ल वि धि ॥

त त णी ग न स य य ति म
य ति म य ति क ल ग म च्छ
ल ॥ ॐ आ गि न न म ॥ अ
वा ह यी ना दि ॥ धा न ॥ ॐ
ध्या न व लु च सा द वी स च्छ
न द ल स य ग ॥ नै मृ ता द
दि ल स न य ति नी स ग
न म ॥ व द ॥ ॐ जा ग व द
ग ॥ सा य ॥ ॐ उ ल क
धा दि ली द वी क य ल
क रि धा नि ली वि धि म
द क वी व य ति नी स
व द न म ॥ अ ग न धा दि
॥ ॐ ति आ गि नी क ल ग
च्छ ल वि धि ॥ ॥

त त वा य व स य द ति ल
य ति म य ति क ल ग य
ल य ज न ॥ अ ग य ल य
न म ॥ धा न ॥ ॐ व द न

धिगं कं प्रवृद्धिगं धिगं गुला
चनं। वृद्धिगं प्रवृद्धिगं
धिगं लवकया लिनं॥ व
दा॥ वृद्धिगं प्रवृद्धिगं
वृद्धिगं प्रवृद्धिगं प्रवृद्धिगं
यवाय वृद्धिगं प्रवृद्धिगं
शसवृद्धिगं प्रवृद्धिगं
क्षयवा लनमा सुगं॥ अ
वृद्धिगं प्रवृद्धिगं प्रवृद्धिगं
या लवकया लिनं॥ ० ॥

गमा प्रवृद्धिगं प्रवृद्धिगं
कलमं प्रवृद्धिगं प्रवृद्धिगं
वृद्धिगं प्रवृद्धिगं प्रवृद्धिगं
अनमं॥ वृद्धिगं प्रवृद्धिगं
सत्वाय वृद्धिगं प्रवृद्धिगं
त्वमाधृतं॥ अस्मिन् वृद्धिगं
वृद्धिगं प्रवृद्धिगं प्रवृद्धिगं
वृद्धिगं प्रवृद्धिगं प्रवृद्धिगं
वृद्धिगं प्रवृद्धिगं प्रवृद्धिगं
वृद्धिगं प्रवृद्धिगं प्रवृद्धिगं
वृद्धिगं प्रवृद्धिगं प्रवृद्धिगं

न कल्य कां॥ वृद्धिगं प्रवृद्धिगं
जगन्मातृत्वं मम सुखं सत्त्वं
सत्त्वाय वृद्धिगं प्रवृद्धिगं
यनमा सुखं यत्नं विदुः
विदुः प्रवृद्धिगं प्रवृद्धिगं
दि॥ वृद्धिगं प्रवृद्धिगं प्रवृद्धिगं
वृद्धिगं प्रवृद्धिगं प्रवृद्धिगं

गमा प्रवृद्धिगं प्रवृद्धिगं
कलमं प्रवृद्धिगं प्रवृद्धिगं
वृद्धिगं प्रवृद्धिगं प्रवृद्धिगं
अनमं॥ वृद्धिगं प्रवृद्धिगं
सत्त्वाय वृद्धिगं प्रवृद्धिगं
त्वमाधृतं॥ अस्मिन् वृद्धिगं
वृद्धिगं प्रवृद्धिगं प्रवृद्धिगं
वृद्धिगं प्रवृद्धिगं प्रवृद्धिगं
वृद्धिगं प्रवृद्धिगं प्रवृद्धिगं
वृद्धिगं प्रवृद्धिगं प्रवृद्धिगं
वृद्धिगं प्रवृद्धिगं प्रवृद्धिगं
वृद्धिगं प्रवृद्धिगं प्रवृद्धिगं

ॐ

॥ अदि॥ कृतिजुमुकल
॥ अर्चनविधि॥

३ ककलम्भचर्मा ॥ ३५ ॥

नाडकनसुदुव्वं
 नसुयप्रिमंभक्तिके
 द्विकोत्यानमः॥
 ॥ॐ सर्वं भक्तिकं
 त्वंलाकानांयद्विदायकं
 तथोपवंधविश्रुवाथ
 वृजथद्वरुसंनिधि॥
 ॥ॐ श्री ४८ भक्तिः॥
 शुभकं॥ ॥ ४८ भक्तिः॥
 भक्तिकायनमसुत्ययुधि
 कायनमानमः॥
 ममाध्वप्रवद्राकनूतदि
 धनागत्यत॥ ॥ ४८ भक्तिः॥
 ॥ॐ भक्तिः॥
 द्विककलगात्रविधि

नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १ ॥
(नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १ ॥)

कलमूर्त्तय नमः॥ ॐ नमः
कलमूर्त्तय नमः॥
वद॥ ॐ नमः॥ ॐ नमः॥
॥ ॥ गददिक॥ ॐ नमः॥
कलमूर्त्तय नमः॥
वद॥ ॐ नमः॥ ॐ नमः॥
नमः॥ ॥ वाम॥ ॐ नमः॥
कलमूर्त्तय नमः॥
वद॥ ॐ नमः॥ ॐ नमः॥
ॐ नमः॥ ॐ नमः॥
ॐ नमः॥ ॐ नमः॥

[illegible]

वृषामयिसंमुदा॥ अरु
 नभ्रादि॥ लुगिजसक
 लण्णसुनविधिः॥ ॥

गण्ड्यादिकलगीवृज
नं॥ ॐ उद्यादिकलगीवृज
नमः॥ वद॥ ॐ श्रीजिघ
कलगीमिआलाविसंगि
दवायूननूजानिवरुख
सासनसरुप्रधुकावृज
नायय४स्वगियूनम
विगण्ड्यादिकलगीवृज
॥ ॐ ॥ ॥

गगनं तिलाययुवा
 रिमयीसुता ॥ धंति
 लावर्ण ॥ उं अयादि
 ॥ सुयायी ॥ वृथराज
 नं ॥ न्यासधर ॥ उं अधा
 वधकथनमशु ॥ सुता
 यावाहनं ॥ उं गनेरा

सनायनम॥ ॐ सुवल्गु
सिगनूमात्रिविभक्ति
गमयुर्गवद्वृद्धयत्त
नयत्तीक्ष्णमआत्माकु
न्दा॥ ॐ गेनि ययै ३॥
विनाम। सामगननूव
मदवांयत्तायत्ति यव
कुपुष्टासक॥ सुवल्गु
सिगनूमात्रिविभक्ति
स्व॥ यत्त॥ ॐ द्वात्रायन
म॥ ॐ द्वात्रायन॥ ॐ
तात्रायनम॥ ॐ य
त्ता॥ ॐ गमयुर्गवद्वृद्धयत्त
ॐ आमिन्दुवि॥ ॐ ग
त्तायामि॥ ॐ द्वात्रायन
द्वात्रायन॥ ॐ गमयुर्गवद्वृद्धयत्त
नत्ता॥ ॐ द्वात्रायन॥ ॐ
ॐ यत्ता॥ ॐ द्वात्रायन॥ ॐ
नमावत्त॥ अथ दम
लावत्ता॥ ॐ द्वात्रायन॥ ॐ

जातमिदं ॥ उं नमि सुदा
॥ उं यम नदं ॥ उं यम नदं
बी ॥ उं ॐ मं मं व नुन कु
धी ॥ उं ग व वा य ॥ उं क वि
दां ॥ उं ग मी धा नां ॥ उं गी वि
यदा ॥ उं व द्वा ल स्यात् ॥
आ वा रु ना दि ॥ अथ द
वान नू य ल द व सा ध्या
न य ॥ ०७ ॥ वि रु द्वा ल व
न या व द ॥ उं अ न ता य
न म ॥ ॥ अथ द धी व ता
न य ॥ उं म स्या य न
म ॥ वि द ॥ उं अ रु क न
म य ग द व स्या य ॥ ०८ ॥
रि या स मं वि द्वा वि द्वा
मा त्वा व क मि यं व स म
गी मं ॥ ग र क या म य
सु म वि द्वा सा न म सी
ग ॥ ०९ ॥ वा वी य म क ॥ १० ॥
दु द्वा व न आ सा ग ॥ ११ ॥
उं अ रु क न म सि रु वि द्वा

नं ॥ ०१० ॥ रु स मा द्वा मा त्वा य
न य रि द्वा यी ॥ वि द्वा सा
क म ता म नू नी वा ता आ
य रु ता ॥ न का य वृ क्ता य
॥ १२ ॥ उं धा ग धा मा नू
स मि न म ॥ य य ग न वा
क वि रु न ॥ आ या स ॥ १३ ॥
ग रु ता दू द नू म य स्या वि
ध्या ॥ य न मं य द म व र
वि रु नी ॥ १४ ॥ उं न ग द
न य न मा ॥ वि रु जा ॥
स्या रु य या हि रु वि द्वा
रि नि स्या म ॥ सि ना य क
धु स व ना कृ ग मा य का
आ वा लं म मि धा न अ ॥
॥ १५ ॥ उं वृ द्वा मि रु
त्वा य न मं कं वृ थि र्वा
यो वृ द्वा मि य नं रु रु व
न स्या ना रि ॥ १६ ॥ व ग ॥ १७ ॥
क मि वा र्ग ॥ य न म स्या
॥ १८ ॥ उं वि रु द्वा व स्या
॥ १९ ॥ वृ नू का वि रु नी

यीगवाज्जाधुमानाय
 मःसूयमानाविष्णुः
 रिचमानावायः
 जमानाःशुकःपुनः
 शुक्रःश्रीनमोमीश
 कुश्रीविष्णुदेवी॥३॥
 ॐ ह्रीं धृक् पाठायाः
 वमानावृषाद्याः
 जनयःखधानाःमनी
 रिचिष्टविष्णुनाथ
 सुवीनोवीनगमाय
 ॥१॥ ॐ विष्णु कर्माणि
 ॥२॥ ॐ धीमानादिति
 ॥३॥ सवितादश्वनाय
 जायतिर्निधियादः
 वज्रमिश्रविष्णु
 पुजयासःनमो
 जयमानायद्वितनद
 धानसाहा॥४॥ ॐ
 धीमासि विष्णुनाथ
 धर्वात्वायधमानिन
 मथनोमुखाविष्णु

वाद्यतः॥१०॥ ॐ गिदम
 वतानकलभाच्चैव
 धिः॥ ॥

ॐ कर्णाय प्रणमः
 ॥१॥ वद॥ ॐ यजतां
 श्रीपुनः॥ ॐ नोवायत
 यवानां प्रणमः
 वद॥ ॐ ह्रीं विष्णु
 ॐ आविताय लक्ष्मी
 धर्मनक्षत्रानां
 कर्णे। मथ्येयिधुन
 यवनां प्रणमः
 धर्मात्वात्तुनाथ॥
 २॥ ॐ मोधवायका
 नैनमः॥ वद॥ ॐ
 नोवती॥ ॐ ह्रीं नानु
 धाड्यावादीदमः
 मायः॥ ययनवानां
 प्रणमः॥ ॐ ह्रीं नानु
 धाड्यावादीदमः
 ययनवानां॥ ३॥ ॐ

[illegible]

महिमायै नमः ॥ १ ॥
ॐ ह्रीं श्रीं नमः ॥ २ ॥
विष्णुमाहि ॥ ३ ॥
वित्तिकृतिज्ञानः ॥ ४ ॥
यमदत्तः ॥ ५ ॥
महाशक्तिः ॥ ६ ॥
तत्त्विकः ॥ ७ ॥
याविनाजति ॥ ८ ॥
तिष्ठति ॥ ९ ॥

कन्यादि॥ तुलमल
 ॥ उँ की सन मो ना ना
 अल यति श्रुत भक्त
 स्वाहा॥ उँ की वागीश्वरी
 श्री स्वाहा॥ उँ की लक्ष्मी वा
 सुदवायकी स्वाहा॥ अथ
 भक्त्या॥ उँ गता नाय
 ल यति श्रुत महावीर्या
 यधीमही गता विष्णु
 यथा दयाग॥ उँ विष्णु
 नृपाय विद्महे वासि
 ष्ठा यधीमहि गता
 वागीश्वरी दयाग॥ अथ

पूर्वोक्तं आदित्यक
 लम्बं चर्मा ॥ ॐ आदि
 त्याय नमः ॥ ध्यान ॥
 ॐ यद्वासनयुक्तं
 प्रति ॥ वंद्य ॥ ॐ आक
 र्क ॥ ॐ शुभको ॥ ॐ अ
 निद्वत ॥ सा ॥ ॐ
 वधूकयस्य संका ॥
 नको ललसमेव
 । लोकनाथ जगदी
 यगति यद्वदुक्त
 नमः ॥ ॐ

ह्यादित्यकलमार्चनवि
धिः॥ ॥

[illegible]

सुमं गायनमानमः॥
सुखिनिस्वद्वयाय
लेयालिनेमः सुतः॥
गर्गधादि॥ॐ॥ सुख
अथकलभीर्वाविधि

तथा गायमयलिं गाय
नं॥ॐ॥ सद्यजो गाय
यश्चक॥॥॥ ध्यानं॥ॐ॥
एवया॥ॐ॥ मयलिं ग
विषसर्वकृत्विर्वा
वकांष्ट्र्यायि गंदव
मा॥ॐ॥ अथ वनं ध्यानं॥ॐ॥
द॥ॐ॥ नमः॥ॐ॥ रुवाय
व॥ॐ॥ १॥॥ हिमक
धुनिरुदवं गंगाम
दध्याविर्वा सद्यजो य
हव॥ॐ॥ एव वदहं यनम
विर्वा॥ॐ॥ गंगाम
ति॥ॐ॥ मयलिं गाय

तथा गायकृत्विर्वा नवि
धानं॥ॐ॥॥॥ तथा गाय
कृत्विर्वा॥ॐ॥ अथ नकादि
अथकलना गंगाम
नमः॥ॐ॥ ध्यानं॥ॐ॥ अथ
काद्यकना॥ॐ॥ रुवाय
धुनिरुदवं सन॥ॐ॥ यन
गंगाम विद्वाना मधि
नार्थविद्वाना वयन॥ॐ॥
द॥ॐ॥ नमः॥ॐ॥ सुसद्यजो
॥ॐ॥ १॥॥ॐ॥ एव
॥ॐ॥ मयलिं गायकृत्विर्वा
मयलिं गायकृत्विर्वा
मयलिं गायकृत्विर्वा
मयलिं गायकृत्विर्वा
मयलिं गायकृत्विर्वा
मयलिं गायकृत्विर्वा

अथ यद्यकृत्विर्वा
नं॥ॐ॥ यद्यकृत्विर्वा
सद्यजो यनमः॥ॐ॥ ध्यानं॥ॐ॥

ॐ वामलिङ्गिगणं वीवरु
 लमलिङ्गानि अष्टपृष्ठ
 लिङ्गांश्चाथर्गसर्वेन तस
 मन्त्रिणां ॥ वद ॥ ॐ अग्न
 अक्ववदहनं श्यगिन
 ४ समभारुवायनाय
 कुरुते अजित ॥ हिधन
 दाजसि स्वाहा ॥ यनाय
 कुरुते माधव्याय वद
 हस्यगि ४ यवाधवीद
 दाउन ४ स्वाहा ॥ सा ४ ॥
 ॐ कुरुते ४ यनव ४ भक्त
 ४ सदा ४ विममन्त्रिग ४
 नृकणधियगे ४ सोम
 नृमन्त्रिणं नमानम ४
 अग्नगंधादि ॥ ॐ त्रिभ
 कुरुते कलीयुजने विधि ४ ॥

अथ यालक्ष्मीपूजनं ॥
 ॐ त्रिभुवनेश्वर्यद

साय नमः ॥ ध्यान ॥ ॐ
 यथापनिस्त्रिगाद
 वीनीलायलदलव
 र्गा ॥ सिद्धयुयदहस
 ४ कान्ति ४ वनकीर्ति
 दा ॥ वद ॥ ॐ यावका
 न ॥ सा ४ ॥ ॐ नमस्तु
 यं धियादवा सिद्धना
 सुगंधानिदी ॥ लोका
 नृजीवरुगायने नदा
 येन नमस्तु ४ कर्मणि
 ॥ ॐ तुल्य ॥ दय्यलह
 साय नमः ॥ ध्यान ॥ ॐ
 यथापनिस्त्रिगादवीधु
 दसुटिकसंनिता ॥ अद
 दय्यलहसाव धनधान्य
 वययदा ॥ वद ॥ ॐ श्रीधन
 ॥ सा ४ ॥ ॐ नमस्तु रुविरुया
 ये यमदय्यलयालिनी ॥ अ
 स्मिन्नकुरु वनकाकुरु सुद
 विजयिक ॥ अग्नगंधादि ॥

ॐ निशील न्म चर्ण ॥ ० ॥

नमः मूलकलत्रमन ॥ नि
वयजमानन धकिचय
जमानाधुवा ॥ मूलमल
॥ ॥ उमणवा ॥ ॐ श
शाल्यलाकयाल ॥ य
नीयविसूत्रादिगा ॥ वि
द्यानाधिसनाथययु
यं वामुगिवाक्या ॥ य
रुसं नक्ष ॥ ॐ य ॥ विद्या
नाधिसनाथय ॥ ययं स
वाहनकायसीनिधा ॥ य
गिवाक्या ॥ ॐ य ॥ ॐ य ॥
रुणी ॥ यन ॥ कल ॥ ॐ य ॥
ॐ य ॥ कल ॥ ॐ य ॥
नाममनिधायवाकु ॥ ॐ
उमायरुगवृथायलिग
नृयधनोयवो ॥ कवाय
नमः सुयं ॥ रुका ॥ नृय ॥ रुका
नका ॥ य ॥ ॐ य ॥ कल ॥ ॐ य ॥
रुगवा ॥ मयमलुल ॥ मयि
नयि ॥ ॐ य ॥ सनयुज

नमः मूलकलत्रमन ॥ नि
वयजमानन धकिचय
जमानाधुवा ॥ मूलमल
॥ ॥ उमणवा ॥ ॐ श
शाल्यलाकयाल ॥ य
नीयविसूत्रादिगा ॥ वि
द्यानाधिसनाथययु
यं वामुगिवाक्या ॥ य
रुसं नक्ष ॥ ॐ य ॥ विद्या
नाधिसनाथय ॥ ययं स
वाहनकायसीनिधा ॥ य
गिवाक्या ॥ ॐ य ॥ ॐ य ॥
रुणी ॥ यन ॥ कल ॥ ॐ य ॥
ॐ य ॥ कल ॥ ॐ य ॥
नाममनिधायवाकु ॥ ॐ
उमायरुगवृथायलिग
नृयधनोयवो ॥ कवाय
नमः सुयं ॥ रुका ॥ नृय ॥ रुका
नका ॥ य ॥ ॐ य ॥ कल ॥ ॐ य ॥
रुगवा ॥ मयमलुल ॥ मयि
नयि ॥ ॐ य ॥ सनयुज

नमः मूलकलत्रमन ॥ नि
वयजमानन धकिचय
जमानाधुवा ॥ मूलमल
॥ ॥ उमणवा ॥ ॐ श
शाल्यलाकयाल ॥ य
नीयविसूत्रादिगा ॥ वि
द्यानाधिसनाथययु
यं वामुगिवाक्या ॥ य
रुसं नक्ष ॥ ॐ य ॥ विद्या
नाधिसनाथय ॥ ययं स
वाहनकायसीनिधा ॥ य
गिवाक्या ॥ ॐ य ॥ ॐ य ॥
रुणी ॥ यन ॥ कल ॥ ॐ य ॥
ॐ य ॥ कल ॥ ॐ य ॥
नाममनिधायवाकु ॥ ॐ
उमायरुगवृथायलिग
नृयधनोयवो ॥ कवाय
नमः सुयं ॥ रुका ॥ नृय ॥ रुका
नका ॥ य ॥ ॐ य ॥ कल ॥ ॐ य ॥
रुगवा ॥ मयमलुल ॥ मयि
नयि ॥ ॐ य ॥ सनयुज

三

यत् ॥ वृत्त ॥ हुं धूमसि ॥ वा
 य ॥ हुं गंगा सि ॥ गो मूल ॥ हुं
 नमः वल्लभाय ॥ हुं स्वस्ति
 नः ॥ श्रुति ॥ ज ॥ यति ॥
 हुं मनाद्रुति ॥ यथायव
 सु ॥ सु ॥ य ॥ ७० ॥ अङ्ग
 धादि ॥ ०० ॥ ति ॥ न विधि ॥

बा

तगामधुयसाधुसिंध्यासा
 दयुजन॥ॐवास्त्वधिय
 गयवृक्ष॥१२॥ॐवृक्षय
 कान॥ॐअवृक्षवृक्षयि
 वा॥ॐसकयुञ्जनि॥ॐ
 पल्लवाय२॥ॐवनस्याग
 विष्टं॥गहिरुयाअस्मा
 नसत्वायगत्र॥४सूवीन
 ४॥गहिरु४संतद्धाअसि
 वी४यसासुगाग४य
 उजत्वानि॥ॐनकाय
 २॥ॐलंजविष्टदा॥ॐ
 यजायतिदवगाय२॥ॐ
 अस्माकमिद॥ॐयत्वा
 म४मिवनृगसाया४म
 सनत्वावध्नासुक४१॥

मृतस्य आत्मा सुकृतस्य ला
 कविशब्दासहयुक्त्या द
 धामि ॥ **यतिशब्दा** ॥ **उमना**
 द्वागि ॥ **ल्लिथि** सादत्त
 वन ॥ **सोर** ॥ **उदवदा**
 दानवगंधर्वीयकनाद
 सपन्नं नैगमसर्वमसाध
 न्नकाकवृत्तिसमदाह
 ता ॥ **ल्लि** दिलाकयाल
 त्यादि ॥ **नमन** सादय
 जन ॥ ॥ **समि** नूनं न
 सादानययक्तयनिस
 माययावतावत्ययक्त
 नकाकनूरु ॥ **नम** ॥ **स्वा**
 हा ॥ **नम** ॥ **नम** ॥ **नम**
 वनमनूभा ॥ **नम** ॥ **नम**
 ॥ **नम** ॥ **नम** ॥ **नम**
 गममयुक्तिगमयनम ॥
 सा ॥ **नम** ॥ **नम** ॥ **नम**
 तातिस्तवतज्जमानि
 वावकेविष्णुभुवन
 ॥ **नम** ॥ **नम** ॥ **नम**
 जनविधि ॥ ० ॥

नमः कुरु सयंगत्वा ॥

ॐ नमः शिवाय हवीमस
 दारुवनुविशती ॥ **नम**
 वारुयुन विश ॥ **नम**
 निसकुलकुलुस्य
 न ॥ **नम** ॥ **नम**
 नायतसूययनेना
 यत ॥ **नम** ॥ **नम**
 थगवुमोददिय ॥ **नम**
 माम ॥ **नम** ॥ **नम**
 मखेलासायन ॥ ॥
 ॐ नमः शिवाय हवीमस
 विनिवीशानुगन
 न ॥ **नम** ॥ **नम**
 यति ॥ **नम** ॥ **नम**
 कुरुत्यानरुन ॥ **नम**
 निसकुलकुलुस्य

नमः कुरु सयंगत्वा ॥
 मदिबिषिगर्गकुला
 ॥ **नम** ॥ **नम**
 निसकुलकुलुस्य
 दवतासहितयुज
 न ॥ **नम** ॥ **नम**

सत्ययज्ञं ॥ ॐ ॥ गोतम
 यत्नदाजाविष्णुमिश्रसा
 येवव ॥ यमदनिवृत्ति
 ह्यकाग्रपाः ॥ ३ ॥ सा
 वव ॥ सायानसककाना
 येयथासंख्येनवायेय
 ॥ ४ ॥ जन्तु ॥ ॐ ॥ हलाका
 अग्नितमसुषयजनि
 द्वायमस्यैरीकृत्यस
 नमः ॥ ५ ॥ ॐ ॥ तुवलाका
 यत्नदाजं सुषयवाय
 द्वाययद ॥ ६ ॥ कृत्य
 सनमः ॥ ७ ॥ ॐ ॥ हलाकाय
 रुवद्विष्णुमिश्रसुष
 अजादित्यदवायज
 नृक्षयकृत्यसंनमः ॥ ८ ॥
 ॥ ॐ ॥ महलाकाययमद
 निवृत्ति ॥ ९ ॥ अतृहस्यति
 द्वातायवृहस्यतिव
 दसंनमः ॥ १० ॥ ॐ ॥ जन्तु
 लाकायवनिवृत्ति
 यत्नदवाययम
 किमुन्यसंनमः ॥ ११ ॥
 ॐ ॥ गवलाकायकस्येव

यत्नदवाययम
 द्वायवृहसंनमः ॥ १२ ॥ ॐ ॥
 सत्तलाकायजनिमृष
 यत्नदवाययम
 जगतिवृहसंनमः ॥ १३ ॥
 ॥ सायानसककाना ॥ १४ ॥
 यत्नदवाययम
 नृक्षयकृत्यसंनमः ॥ १५ ॥
 यत्नदवाययम
 वत्तानिगृह्णा ॥ १६ ॥
 सायानसककाना ॥ १७ ॥

यत्नदवाययम
 ॥ १८ ॥ ॐ ॥ हलाकाय
 कृत्यदवसंनमः ॥ १९ ॥
 त्वामसुषयजनि
 ॥ २० ॥ यत्नदवाययम
 द्वाययकृत्यसंनमः ॥ २१ ॥
 माविष्णुमिश्रसुष
 जन्तु ॥ २२ ॥ ॐ ॥ गवलाकाय
 यत्नदवाययम
 नृक्षयकृत्यसंनमः ॥ २३ ॥
 ॥ २४ ॥ ॐ ॥ हलाकाय

कर्म विमर्श उ॥ कृत्य
 गुरुमन्त्रलाभजन ॥
 काजस्य वदुवनस्य ना
 रि काया वापृथिवी अक
 रि का। कः स्य स्य वदवृ
 हताजतिरुका वदवदु
 मसंजताजा ॥ ॥ अथ
 यागदकना अथ कर्ण
 ॥ अथ विष्णुका ॥ ॐ अथ
 सहसा दगत मूर्धधुन
 कृपाग ॥ त्वं साहस
 स्यानाय वृत्तिविशेषेण
 विधनवाजाय साह ॥
 वृत्तिमर्कगवैश्वकदनि
 द्रवता कृष्णमध्वयजन
 ॥ वृत्तिवृत्तिविधिस्तमाकं ॥

तागसर्ववाक्काधनरिवाय
 सिंहासनमात्राहता ॥ अ
 भिकायकत्रामीगसगर्भय
 कसंयतां हनत्वं सर्वविद्या
 निवनमाकाशदहिम ॥ नि

वगकिस्वतृवायसर्वलाक
 रिगायवा त्वदीय वादय
 मायः तमात्रुविष्णुमर्क
 य ॥ ॐ मृगवदकृष्णशब्द
 दसामवदत्वथवलागु
 नसाधकअहकृष्णमा
 गुनसक्तता ॥ क्रिया कर्म
 विधानश्चसत्यधिकत
 यकारं। वगतांचयेथिवे
 वंयक्षायायतकार्थकं ॥
 सिंहासनमात्राहकनामि
 गुणजैष्टकं। तमामियुष्मा
 नहा। मेनाकादिदामिस
 त्वनं ॥ यथकृष्णनी ॥ अमि
 देवता कृष्णमध्वयजन
 ॥ सर्वविद्यानिष्ठादयनी
 ॥ वक्रिगायगाजय ॥ ॥
 ॐ वक्र। ग २ ॥ यजमानत
 स्यादीकृत्वा ॥ यथराज
 नं ॥ मृत्तावायसुयथासं
 गकादीनां वृहस्यति ॥ ग १
 वममयकृष्णवायुत्वं
 वयरा ॥ यथराजनसम

यथासि ॥ अथैतदुक्तं
 ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ अ
 धुक्कृष्णकर्मकालयत्
 ॥ ॐ अथैतदुक्तं ॥ ॐ अथैतदुक्तं
 ॥ ॐ सिद्धिं ननु ॥ युवस्मिन्
 मासाय ॥ नमो भगवते वासुदेवाय
 वासं कालयत् ॥ विष्णोवा
 द्याय साधनां अथैतदुक्तं
 दाल्या ॥ दयमं नुं वस्त्राव
 नां ॐ ॐ मं मं गं गयस्मिन्
 ॥ ॐ गं गं वयस्मिन् वयं
 दावा निसवस्मिन् निर्मद
 सिध्का वनिजस्मिन् नमः
 निधी क्व ॥ ॐ तिती धाति
 संकल्या ॥ अथैतदुक्तं
 दिय ॥ ॐ अथैतदुक्तं
 कृष्ण अलिङ्ग्य वसन्त
 पुला ॥ तिल ॥ सिद्धार्थकं
 चैव अर्घ्याङ्गि ॥ यती रि
 ता ॥ ॐ का वदं कनसा मा
 द्याय ययुजा ॥ ॐ या न
 याम ॥ ॐ या न य स्वाहा ॥

यानां स्वाहा ॥ यानां स्वा
 हा ॥ चक्रं स्वाहा ॥ ॐ नमो
 यस्मात्कथं स्वाहा मन
 स स्वाहा ॥ ॐ तिती ननु दि
 ॥ तज्जलं नात्मानं सिद्धय
 त् ॥ तिलकं विक्षययुक्
 च ॥ यत्तु यत्तु निवी कर्ण ॥
 ॐ याता वधी ॥ पूर्वजा ता
 दवत्यस्त्रियुगं यना ॥ मन्त्र
 न्द्रुक्कृष्णमहं गता धामा
 निसक्येव ॥ यत्तु सहावनि
 विकर्ण ॥ ॐ महं ॐ ॐ द्या
 ज्जहस्मथाङ्गी कं गं म
 यत्तु ॥ हनुवा यथास्मा
 द्दष्टियं वयं दिव्य ॥ ॐ
 नं त्वेर्गं गृहीत्वा वामहस्ते
 निक्षिप्य ॥ ॐ समित्तं संक
 ल्य यता ॥ स विद्याया वि
 श्वसु मनस्य मा नो ॥ ॐ
 मूर्ध्नि महिसं वमानो संवा
 क्तु ॥ ॐ सिसं यजा समवि
 त्या न्या कर्वा ॥ अग्ने यन्नी य

धियाहवतत्तं ॐ ययस्य
 मानाय धिहि ॥ यजनं ॥
 ॐ ह्यय २ ॥ ॐ वरुहसाय
 २ ॥ ॐ सुनाधिवतय २ ॥ च
 ननादियुजनं ॥ वलिप्रदा
 नं ॥ ॐ गंगदधितय २ ॥
 ॐ गनोतां ॥ ॐ कोक
 जयालाभ २ ॥ ॐ वरुणाय
 ॥ कुरुवलि ॥ ॐ कोदने
 ये २ ॥ ॐ यातवदागृष्ट
 यामसाममनातीयमानि
 जहातिवद ॥ सन ४ वविष
 गतिदग्निनिविष्टतावव
 संगद्विगात्यग्निः ॥ दग्नि
 वलि ॥ चन्द्रनादिधूपदी
 यस्तो १ ॥ ० ॥ ॐ गंगा
 द्यप्रकमानय ॥ दग्नि ॥
 आग्निनीगध ४ ॥ रुद्रवी
 यकनागभुक्त ५ ॥ गंध
 निनीगध ४ ॥ रुद्रवीयक
 नागभुक्त ५ ॥ रुद्रगध
 रुध ॥ १ ॥ रुद्रवलि ५

ॐ नंदवातयकमानय ॥ अग्नि १०
 जामसुस्ति ५ ॥ विष्णवत
 ४ ॥ रुद्रविष्णुसंघात ५ ॥
 कुरुसमयिगान ॥ अग्नि ६
 धादि ॥ वलि ५ ॥ ० ॥
 ॐ वरुणविष्णुसंघात ५ ॥
 दिगृष्टधामिना ॥ रुद्रागाक
 मगतमना ॥ ॥ ॥ ॥
 ॥ ॥ यनगीयगीमकुष्टक
 धुनीनीदग ॥ ॐ यद्वदा
 वरुमागसादनसाविष्ण
 नृष्ट ५ ॥ रुद्रसंघातिसम
 रुष्ट ॥ ॐ मानसाकतनय
 मानजायविमाना ॥ गंध
 माना ५ ॥ रुद्रविनीय ४ ॥ मा
 नावीनां रुद्रविनावधी
 रुद्रविष्णु ४ ॥ सधमित्वा
 वामरु ॥ ॐ यनयनी ॥ ॐ
 मृत्विन्नसत्यगितन
 रुद्रका ४ ॥ सवर्ग ४ ॥ सत्व
 नृष्टिगवद ५ ॥ रुद्रधूप
 मरुस्थाना ५ ॥ रुद्रव ४ ॥

स्व॥ ॐ नमः सत्यमिन्द्रां वि
 यमिन्द्राकास्यहं सतिमक्ष
 मयासिंसि ॥ ॐ नमः ॥ नमः
 नमः यदी ॥ ॐ नमः यद्यम
 यवाद्यमवोमाद्यमतिलाद्य
 मनाद्यमखलाद्यमधिर्यन
 वद्यमलवद्यमग्यामाकाद्य
 मनीवानाद्यमगधूमाद्य
 ममसूनाद्यमयकूनकल्या
 नां ॥ वीहिविकयदी ॥ ॐ
 यवस्यत्वति ॥ कृष्णसर्न ॥
 ॐ हिनल्यगर्हति ॥ विहना
 गतं ॥ ॐ यद्यातनयद्यति ॥
 सूवर्धुनजगयद्यनिक्षाय ॥
 ॐ गा ॥ सविहव्वधस्य
 विगामाहव्वधसमतिवि
 ष्वजत्याम ॥ यामस्यकलु
 अहहवव्यदीना ॥ सरुम
 क्षनां वयसामहीगुम ॥
 यवनतन्निधीया ॥ ॐ गता
 सिधुकमसीति ॥ धृतासर्न

ॐ श्रीकृष्ण नमः सावयं दवस
 सविदुः सत्रा ॥ स यो ग्या
 य ग क्ता ॥ वागीश्वरी पूज
 नं ॥ ॐ वक्राह नं वने दंत
 य ह लं वै पूवी मिद म ह
 कं वल ग मूक्ति नाम य क्तो
 भ मिष्टाय म मा खानि वः
 खा न द म ह कं वल ग हं म
 क्ति नाम य भ म मा नाथ
 म स मा ना नि व खा न द म
 ह कं वल ग मूक्ति नामि य
 भ म स व थ य म स व थ नि
 च खा न मे द म ह कं वल ग
 मूक्ति नामि य भ म स जा ता
 य म स जा नि व खा ना ल्हा
 कि नामि ॥ गि ह्नी क लु व
 ह नं यं व स ग ल वा न कः
 व भु ल ॥ ॐ हि न ल व लु
 ह नि ती स व लु न ज त ४ स
 ता ॥ व द्या हि न ल यी ल द्मी

जात व दाम मा व ह कां ॐ
 आव जा दाल द्मी म न स
 ग मि नी ॥ ल द्मी पू ज नं
 ॥ ॐ म भा द्वा गि ॥ स क्ता न
 य ति षा ॥ ॐ त्वां मू क्ति वि त्त
 ॥ का ष्ट य ह लं ॥ ॐ ग त्वा
 या मि ति का ष्टा य द्मी ॥
 ॐ ॐ ध ना स्त्वा ग त ० हि
 मा धू म क ० स मि ध म हि
 । व य स क्ता व य ल ग त्त
 दं ह न म द द्वा सा म्दा ल्य
 वि ग व सा स क्ति त्वा न
 म सी य ॥ का ष्ट नि धा य ॥
 म य यी ॥ ॐ मू त व ष्ट ति
 का ष्ट क लु पू ज नं ॥ व न्द न
 सि न्द्र य क्ता य वी त य थ ॥

ॐ ह स क ॥ मू क्ति ग ॥ अ म स

ग मा नै मू ल्य द्वा ना वा य
 य ज मा न न स य का का
 द न ल द्दि ज य ह द्वा स
 य हा द्वा व म्नि य द्वा ल्या ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ धि
 वीथमसि वीथमहि वल
 मसिवलं मेधि धिस्वाजा
 म्वास्वाजामयि धिमवुन
 सिमवुं मयि धि ॥ गतमे
 नुत्तमि व का ला ह न का स
 गुत्तादि ॥ म गु मं ग म्मा ॐ
 अग्निमूढा दि व ॥ कू य ति
 ४ वृ थि या मूर्य ॥ अ पा ४ व ता
 ० सि जि त्व ति ॥ य ज मा न न
 त द नि मा चा य ह क स म य
 ० ॥ आ चा य ॥ त म नो द कि
 ० ॥ स्म य ॥ ॐ न का हा ० ति
 ॥ अग्नि निर्म चूर्त ॥ ॐ अ ध
 वा च ति ॥ व लि पु दानं ॥ य
 वा क त ति ल नो ॥ ॐ क वा द
 ० ग य स्वा हा ॥ ॥ ति ला क ति
 ० यं दृ तं च ॥ ॐ क वा द नं म
 मि य हि ता मि दू नं य म वा अं
 ग वु द वि पु वा हं ॥ क वा द
 मि सं य वि स्त आ व हि ० दि
 य म् ॥ ॐ य य नं ॥ ॐ ० ०

वायमि तत्रा जा त व दं द व
 स्वा ह वृ व रु उ य जा न न ॥ अ
 न्ना व क ० ॥ ॐ अग्नि मू षी त्व
 नि ग्रा स ॥ अग्नि वी ज ना
 नि ग्रा स पू ज नं ॥ ॐ ३
 नूं ३ वां ३ व कि मू र्थ य ॥
 अ म्भु सं व द ॥ क व रं ना व
 गु ल न ॥ ग य गी त्र स ग ॥
 ॥ ॐ न म्भु दा मृ ती कृ त्वा
 ॥ ग ता अग्नि कृ ती त्वा ॥ ॐ
 त जा ० न व द व आ ति य
 की कृ त्वा न ल ग यं ॥ ॐ क
 ह य म मं अग्नि वि ति आ ति
 रु था स म न ॥ आ ता नं ॥
 व थ ॥ ॐ कृ त्वा य व द कि क
 ल य ॥ ॐ य म म न म ति मा
 लु की आ ती नि धा य थ ॥
 ॐ अ त्व गि नू य सा म
 य म क र्ध त्व ह नि य थ मा
 जा त व द ० अ नू स य थ
 य नू गा व न मी न नू या वा
 वृ थि वी आ त तं ॥ अग्नि
 कृ त्वा य द कि ती कृ त्वा ॥

यद्गुणानि स्थापयन्तस्म
कुरुमस्तु। उं मेयि गृह्णात
यमनि १२ नायस्था वायु
सुपजात्वा यस्तुवीया
यमामयवता १ सुवता
१ स्वस्ति स्वाहा ॥ स्वाहा न
हामो उं स्वस्ति नाममीत
त्यादि ॥ य ८०७ ॥ अग्निपु
रुं द ॥ उं ममो निग वम
ल क द या नि सा म स्त्वा
नाजामृगना नू व काम ॥
उना व प्री था व नू ल सै क
८०७ ॥ उज यं तं त्वा नू द वा
म दं ॥ वाल का नि न का
०० ॥ नू नू नू नू नू नू नू
क वें अ ॥ उं यष्टा दि विष्ट
०० ॥ अग्नि १४ विष्टा यष्टा
विष्टा अ यष्टा ना दि व ग १
विष्टा न ना सह मा यष्टा
अग्नि १४ स ना दि वा स नि य
त्या उ न का ॥ अग्नि स म द
न ॥ अग्नि य य का ॥ ॥

युर्व ३
दक्षि ३
वायु म ३

मृगदादि च उ व द स नं ॥
कृष्ण द ता ॥ उं मृगदाय
०० दं मा स नं ॥ उं अश्व दाय
०० दं मा स नं ॥ उं साम व दाय
०० दं मा स नं ॥ उं अथ व दाय
०० दं मा स नं ॥ उं नम ॥ उं
०० ॥ अग्नि मा उ य ना दि
न मिति ॥ युवा द ता वा ट नं
॥ उं ०० व ले ति ॥ द कि ००
द वा ट नं ॥ उं ०० नू नू नू
वा दि वी ॥ यष्टि नू द वा ट
नं ॥ उं नू नू द वी ति ॥ उं
नू नू द वा ट नं ॥ उं ००
द यून नं ॥ उं मृगदाय
अग्नि १४ नू नू नू नू नू नू
य नू नू नू नू द स न म १॥
०० ॥ अश्व दाय नू नू नू नू
०० ॥ अथ व दाय नू नू नू
०० ॥ साम व दाय नू नू नू
०० ॥ अथ व दाय नू नू नू
०० ॥ अथ व दाय नू नू नू
०० ॥ अथ व दाय नू नू नू
०० ॥ अथ व दाय नू नू नू

दायवदानस्य। गणायः
द्वयवता यमनृद्वृद्ध
सनमः॥ ॥ तालाक
या लावेनां उं ॥ लायव
कुरुसायगजासनायसु
नाधियतायनमः॥ ॥ उं
अनयगकिरुसायसंन
कृगमसनायगजाधियग
य२॥ उं यमायदगुरुसा
यमहिवासनायधिताधि
याय२॥ उं नैमृगयवम
रुसायनववाहमायना
कसाधियतय२॥ उं वन
नायवागहसायमकना
सनायजलाधियतय२॥
उं वायवधजहसायमृग
वारुनाययवनाधियतय
२॥ उं कवनायगदाहसा
यमृधवाहनाययकाधि
याय२॥ उं ॥ नानायधि
गुलहसायवृषरासना

यसर्वरुताधियतय२॥ उं
विष्णुवचकहसाकसास
नाययातनाधियतय२॥
उं वक्राणहसासनायक
मधुसूहसायसुमेधिय
तय२॥ उं सुमेय२॥ उं
मत्याय२॥ उं यातनाय
२॥ उं मध्याममसुदवती
मूढमसायलाहिवधु
यध्वरुसायहववाह
नायसाहवतीसमावि
तायगजाधियतयनमः॥
॥ ॥ दसमिधहामंनकं
उं कायनकं दधुश
क्याता॥ उं नवाहदवध
गिमुनयवो२॥ यवोहजा
ग२॥ सउगहक२॥ स२॥ वजा
ग२॥ सजनिधमान२॥ यव्यज
नानागिगिगिसव्वीताम
स्वीमृनिमंस्वीकवली॥
स्वायवक्रासनेयवीतास

न॥ यत्नं नात्मा सत्तां ॐ व
 क्क॥ ॐ दं मा स न॥ ॐ यत्नी
 ता यत्नं दं मा स न॥ आत्मा
 सत्ता यत्नं ॥ ॐ निवला सत्ता ॥
 ॥ ॐ हि न॥ ग र्क ति ॥ क॥ दुद
 कि॥ ॐ व द्मा सत्ता ॥ ॐ दं वि
 वृति ति ॥ क॥ ॐ रु न॥ यत्नी
 ता सत्ता ॥ ॐ नि कि ना सत्ता
 ॥ व द्मा सत्ता ॥ ॐ दं
 व सत्ता ॥ ॐ यत्नी ता सत्ता
 क॥ न॥ यत्नी ता सत्ता ॥ ॐ
 ॐ यत्नी ता सत्ता ॥ ॐ यत्नी
 ता सत्ता ॥ ॐ यत्नी ता सत्ता
 क॥ न॥ यत्नी ता सत्ता ॥ ॐ
 ॐ यत्नी ता सत्ता ॥ ॐ यत्नी
 ता सत्ता ॥ ॐ यत्नी ता सत्ता
 क॥ न॥ यत्नी ता सत्ता ॥ ॐ
 ॐ यत्नी ता सत्ता ॥ ॐ यत्नी
 ता सत्ता ॥ ॐ यत्नी ता सत्ता
 क॥ न॥ यत्नी ता सत्ता ॥ ॐ

मीन सत्ता सत्ता सत्ता सत्ता
 ॥ ॐ दं मा स न॥ ॐ यत्नी
 ता यत्नं दं मा स न॥ आत्मा
 सत्ता यत्नं ॥ ॐ निवला सत्ता ॥
 ॥ ॐ हि न॥ ग र्क ति ॥ क॥ दुद
 कि॥ ॐ व द्मा सत्ता ॥ ॐ दं वि
 वृति ति ॥ क॥ ॐ रु न॥ यत्नी
 ता सत्ता ॥ ॐ नि कि ना सत्ता
 ॥ व द्मा सत्ता ॥ ॐ दं
 व सत्ता ॥ ॐ यत्नी ता सत्ता
 क॥ न॥ यत्नी ता सत्ता ॥ ॐ
 ॐ यत्नी ता सत्ता ॥ ॐ यत्नी
 ता सत्ता ॥ ॐ यत्नी ता सत्ता
 क॥ न॥ यत्नी ता सत्ता ॥ ॐ
 ॐ यत्नी ता सत्ता ॥ ॐ यत्नी
 ता सत्ता ॥ ॐ यत्नी ता सत्ता
 क॥ न॥ यत्नी ता सत्ता ॥ ॐ
 ॐ यत्नी ता सत्ता ॥ ॐ यत्नी
 ता सत्ता ॥ ॐ यत्नी ता सत्ता
 क॥ न॥ यत्नी ता सत्ता ॥ ॐ

नगायथायथाविधि मन्त्रं
लकलगायनां यद्विला
दि। अथवा गृहीत्वा। य
च्च वदितं ननु वदना
दियकि कर्मलसा। मया
गकलगायनायुज्यं०॥
नागयदयकलीयल
क्षी। गमयलिं गदिस

अथ कृष्णसमीपं गत्वा ॥ तमा
स्थवरासाधनं ॥ दक्षिणं ॥
दक्षिणं पृथक् ज्ञानः कम
बुद्धः यद्विषयं दत्तानि ग
नियद्विषयः ॥ दक्षिणं
पृथक् ॥ अस्मिन् ॥ वपुः
लीः समीपं न कृणु ॥ उप
यमन कृष्णसमीपं ॥
४८ ॥ अस्मिन् ॥ उप
मृगलक्ष्मणं दृष्ट्वा ललितं
पृथक् ॥ अस्मिन् ॥ उप
वेष्टव्यं ॥ अस्मिन् ॥ उप
कं ॥ दक्षिणं ॥ उप
स्यत्वा ॥ अस्मिन् ॥ उप
ली ॥ उप ॥ अस्मिन् ॥ उप
पं ॥ अस्मिन् ॥ उप
सत्वा ॥ अस्मिन् ॥ उप
प्रा ॥ अस्मिन् ॥ उप

न कथं कदापि च कर्म
 दहि ॥ अथ स्तोत्रं ॥ मा अ
 सि निधाय ॥ ॐ नमो स्तु
 वधूत ॥ नमो वधूत ॥ न
 गा अनायादित्या स्तुत
 सि यति त्वादि तिष्ठ ॥ ॐ
 कृष्ण नमो दाया ॥ ॐ अ
 दिप्रसिवा नमो स्तुत ॥ अवा
 सि यथ वधूत ॥ यति त्वादि
 त्या स्तुत ॥ ॐ कृष्ण जिन
 रुमी निधाय ॥ नमो यथ
 दस्वत्त निधाय ॥ तदय
 निधायि ॥ ॐ कान
 ॥ ॐ अदि त्यो नमो सि
 विष्णु वधूत ॥ ॐ कृष्ण
 दस्वत्त निधाय ॥ ॐ कृष्ण
 त्या मि ॥ ॐ कृष्ण निधीक
 ॥ ॐ अदि त्यो नमो सि
 नसिवाया विमर्जन ॥ द
 वधीतया स्तुत ॥ नमो

* ॐ ह्रस्व लगु लीनिधाय ॥ ॐ

पुन्यहर्ष ॥ ॐ वृहदा वा
 सिमान त्वाद्य ॥ ॐ दं
 वधूत विशा ॥ ॐ कृष्ण
 ॥ ॐ समीप ॥ ॐ समीप
 हविष्क दहि हविष्क दहि
 ॥ मंगल ग्रह ॥ ॐ कृष्ण
 था सि मधु जिह्व ॥ ॐ वधूत
 मावद त्वाद्य ॥ ॐ वधूत
 नमो वधूत ॥ ॐ वधूत
 नमो ॥ ॐ यथ वधूत वधूत
 यति त्वाद्य वधूत वधूत ॥
 तदुत्तम ॥ ॐ निधाय ॥ ॐ
 यनायुत ॥ ॐ वधूत
 युता अनाया ॥ ॐ वधूत
 यवातन ॥ ॐ अयुत ॥ ॐ
 वधूत वायु विविनकु
 ॥ ॐ वधूत निधाय ॥ ॐ
 कृष्ण ॥ ॐ दवाव ॥ ॐ वि
 नहि नमो यति ॥ ॐ यति
 टकाव ॥ ॐ वधूत निधाय
 तदुत्तम ॥ ॐ दवाव

ॐ ह्रीं श्रीं ॥ किं शिखरं
नंदि ॥ ॥ गये वरिष्ठ
कं वा का न य ॥ ॐ धू न
सी ति ॥ उ द क न त धू ल
य काल न ॥ ॐ सु मि रिया
न ति ॥ उ द क नि धाय ॥ ॐ
आ या य सु ख ति ॥ की नं
नि धाय ॥ ॐ ग आ सि ति ॥
धृ त नि धाय ॥ ॐ अ या ॥
व स त ति ॥ ग क न नि धाय
य ॥ य वि श ल स क्ता य ॥ पु
ज न ॥ व त्प सि द्ध व य क्त
य वी त य य न ॥ ॐ व क्त
॥ २ ॥ ॐ वि श्व व र ॥ ॐ
स दा नि वा य र ॥ ॐ य ज
य त य र ॥ ॐ व क्त य क्त
न ॥ ॐ ॐ द वि श्व ॥ ॐ न
म ॥ म सु वा य न ॥ ॐ य
जा य ग न ति व नू ज न ॥
॥ ॐ म ग्न अ रि त्रि ति ति
ह

ॐ व य लि क ल्य ॥ ॐ म न
कृ ति त्रि ति य ति ति ॥ ॐ ॐ
य त्वा क्त व ति ॥ अ य क्त लि व
नू क्त लि अ रि क्त अ य ति य न
ॐ अ य ह त अ स न व का ॥ स
अ दि य द ॥ अ नू यो ति य ति म अ
मा ना अ स न स क्त व य य व न
ति ॥ य न य न नि य न य र व क्त
नि धा त्वा को य व द त्वा अ ति
॥ कृ ग नो व अ ति ती ॥ व का क्त
म र्थ ॥ य न व न अ ति ति ॥ ॐ ग म्हा
द सि मृ ति ति र्द व सा मं दानं मं ध
स ॥ अ रि व य ल स गि व य ल
दृ गी ति र्द व चो से ॥ य य मिक
न ल ॥ ॐ द व स त्वा स वि उ ति
त य द ली ॥ ॐ ग ता न ति द ति
॥ अ व द वि य त य र्थ ॥ ॐ ॐ व त्वा
कृत ति ॥ अ य व नू क्त ला ॐ न ॥
॥ य क ली व क्ति ता अ य मू क्त न
ग स्या य नि धाय ॥ कृ ग य म स रि ता
न कृ क्त अ व य अ न नि म य क
गी ॥ ॐ स वि उ र्द व त्वा य ग व उ य म

मयि विदुः पवित्रं गच्छेत् नमिनि
 शास्त्रं कृतं वरुणं ॥ कुरु नानि म
 र्कणं ॥ उं स विदुः पवित्रं गच्छेत् नमि
 नास्ति विदुः पवित्रं गच्छेत् नमि
 रिशा ॥ आत्मा कृतं वरुणं ॥ उं ग
 आसि युक्तमसि ॥ आ आ व
 कर्णं ॥ य विदुः पवित्रं गच्छेत् नमि
 आ वरुणं मरुतं गच्छेत् नमि
 हा संस्कारं वरुणं ॥ उं य
 विदुः पवित्रं गच्छेत् नमि
 उं द वी नाथा ॥ यथा दान
 णं ॥ उं यथा कुरु ॥ नमि
 नमः पवित्रं ॥ अथ यथा शर
 अमिथा कर्णं ॥ उं कुरु अ
 स नमः पवित्रं गच्छेत् नमि
 कामि वरुणं मरुतं गच्छेत् नमि
 कर्णं कामि वरुणं मरुतं गच्छेत् नमि
 स्वाश कर्णं कामि ॥ सर्वथा
 कर्णं ॥ उं नमः पवित्रं गच्छेत् नमि
 नि कुरु पवित्रं गच्छेत् नमि
 ॥ उं अदि यथा नमः पवित्रं

विदुः पवित्रं गच्छेत् नमि
 कर्णं मरुतं गच्छेत् नमि
 ॥ उं द वी नाथा ॥ यथा दान
 णं ॥ उं यथा कुरु ॥ नमि
 नमः पवित्रं ॥ अथ यथा शर
 अमिथा कर्णं ॥ उं कुरु अ
 स नमः पवित्रं गच्छेत् नमि
 कामि वरुणं मरुतं गच्छेत् नमि
 कर्णं कामि वरुणं मरुतं गच्छेत् नमि
 स्वाश कर्णं कामि ॥ सर्वथा
 कर्णं ॥ उं नमः पवित्रं गच्छेत् नमि
 नि कुरु पवित्रं गच्छेत् नमि
 ॥ उं अदि यथा नमः पवित्रं

गच्छेत् नमि
 कर्णं मरुतं गच्छेत् नमि
 ॥ उं द वी नाथा ॥ यथा दान
 णं ॥ उं यथा कुरु ॥ नमि
 नमः पवित्रं ॥ अथ यथा शर
 अमिथा कर्णं ॥ उं कुरु अ
 स नमः पवित्रं गच्छेत् नमि
 कामि वरुणं मरुतं गच्छेत् नमि
 कर्णं कामि वरुणं मरुतं गच्छेत् नमि
 स्वाश कर्णं कामि ॥ सर्वथा
 कर्णं ॥ उं नमः पवित्रं गच्छेत् नमि
 नि कुरु पवित्रं गच्छेत् नमि
 ॥ उं अदि यथा नमः पवित्रं

ॐ गङ्गा अस्या वधीनां गङ्गा व
नसा गीतां ॥ गङ्गा विष्णुस्य ह
नसा ॥ न गङ्गा अयामसि स्वा
हा ॥ ॐ हं सि नमस्वाहा ॥ ॐ
यस्य वदो नाय स्वाहा ॥ ॐ स्व
मित्यक्तमनुचला ॥ हं नि स्वा
ये स्वाहा ॥ हं सीमन्ता नय
नाय स्वाहा ॥ ॐ मारिहृन्मा
युदा कलुमरुजातानान्व
यहि ॥ दृष्टा स्वकल्याणमृषं
ये ॥ स्या यथा अनस्वाहा ॥ हं
कवचाय हं ॥ ॐ हं जातक
महं न स्वाहा ॥ ॐ कोय स्वाहा
कस्मि स्वाहा कस्मि स्वाहा धीमा
ताय स्वाहा मनूजाय सताय
स्वाहा विहं विहं ताय स्वा
हा दिव्यं मय स्वाहा दिव्यं सु
मृगी काय स्वाहा मनस्वत्यै
स्वाहा सनत्यै स्वाहा वावका
य स्वाहा सनत्यै वृहत्यै
स्वाहा वृक्ष स्वाहा वृक्ष समक्षाय

स्वाहा वृक्ष ननं वि काय स्वाहा
त्वष्ट्र स्वाहा त्वष्ट्र ननुनीय
याय स्वाहा त्वष्ट्र ननुनीय
य स्वाहा विष्णु व स्वाहा विष्णु
व नित्यं याय स्वाहा विष्णु
निव विष्णु याय स्वाहा ॥ हं न
यय स्वाहा ॥ ॐ हं सद्यस्वरा
कनाय स्वाहा ॥ ॐ त्वमग्ने
युरिषा ॥ हं अग्नाय स्वाहा
॥ ॐ निष्कमनाय स्वाहा ॥ ॐ
यस्माय स्वाहा अग्ने निवाच
वावददस्य यवयमृग
जातवदस्य यमिषं नम
॥ सिष स्वाहा ॥ ॐ हं अग्ने
राधेनामकलमय स्वाहा
॥ ॐ याधय स्वाहा यानाय
स्वाहा दानाय स्वाहा वद
य स्वाहा ॥ अयाय स्वाहा वा
य स्वाहा मनस स्वाहा ॥ ॐ
हं रुतया गनाय स्वाहा
॥ ॐ या रुतिलिनी ॥ ॐ हं

ॐ

अनया नायस्वरा ॥ ॐ अ
नयतय ॥ पूर्ववदावमन
॥ ॐ दूददादिवमं वात नि
नस्तानेनामनादिवायुत
यत्रिगुनेवाक्रमाय शुभ
उमेनसः स्वरा ॥ ॐ कंठु
हंदायस्वरा ॥ ॐ रुद्रं क
लुहिः शुभयामदवार
दयः शुभा किरीशय
॥ ॐ विवः नेमुदवा ॥ स
सुत्रिवासमहिदवदि
तयदायस्वरा ॥ ॐ रुद्र
जकनयस्वरा ॥ ॐ मू
क्षीनादिवान्नगिपुधि
यावेष्ठा नवमृत्तम ॥ जा
तमर्नि कवि ॥ संयाजम
तिथिजनातामासनाया
जंजनयकदवा ॥ स्वरा ॥ ॐ
रुद्रं वतवधनायस्वरा ॥ ॐ
वतं रुद्रं वतं रुद्रं गोनि
वक्तायेयस्वावनस्यगिथ

क्रियादववीर्यमतामदस
मृतीकामहिषयववीधाय
क्रिवाहसः स्वगीधनाअ
सदभस्वरा ॥ ॐ रुद्रं व
स्वः गायत्रीयदाधयस्वा
रा ॥ ॐ वत नदी कामाप्ता
तिदीकयाप्रागिदकिध
क्रिदीलपयदानाप्रागिध
दयासत्यमायागस्वरा ॥
ॐ रुद्रं ममलाभावनायस्वा
रा ॥ ॐ रुद्रं रुद्रं वतवधनाय
मसदविममम ॥ यथाय
अथावयमादित्यवत
वानो नमाअदितयस्याम
स्वरा ॥ ॐ रुद्रं समावर्तना
नायस्वरा ॥ ॐ अरुद्रं
॥ ॐ रुद्रं विवादायस्वरा ॥
ॐ रुद्रं वतीरि नृत्तवादिन
प्रधानाकं गरीनामदग
स्यलाकं गरीयपुष्टमधि
भावनदिवस्वरा ॥ ॐ रुद्रं

ॐ श्री साहा ॥ ॐ शुभकंजं
महं ॥ ॐ हं मातृयुतं विस
कुतायसाहा ॥ ॐ मातृव
कृपयुथिवीयनिषमनि
संथातावरावृषा ॥ गान्धि
वैद्यं वैमृष्टिः संविदान
संजायति विम्वकम् ॥ वि
मंशुसाहा ॥ ॐ हं सर्वोय
साहा ॥ ॐ हं समस्तो कल
भयसाहा ॥ ॐ न वा हृद
यति ॥ ॐ हं हं वै ॥ ॐ हं व
संविम्वकम् ॥ सायसा
हा ॥ ॐ हं मनयायसा
हा ॥ ॐ विम्वतयद्रवगा
॥ ॐ हं सुयति सायवक
॥ साहा ॥ ॐ मनाहाति ॥
विति ॥ ॐ हं मुदगक्रिया ॥

समाप्तं ध्यानं यत् ॥ ॐ
नीला ललदलं मासु
उमचात्रुलावनो सचनक

ॐ संयुक्तं सर्वोयवदवि
नं ॥ अदगां के धृतां हं वा
मयुक्तं यिभुलधा ॥ धात्यह
माविधायी अमिधायी
उवीजवता ॥ ॐ निविम्वय
तिष्ठति ॥ गेयध्यानं ॥ मखा
वृत्तं यदा काचित् ॥ किह
सां दगागता ॥ कुरुं वा
वैवकं यवकालित्योवक
युतिः ॥ सफवदुखविक्रि
कायुवमृन्दकिंलकया
साहायतीतिगावाम्भू
नचुभक्तिकावक ॥ ॐ
यदमर्गध्यानं यत् ॥
ॐ हं ध्यानं ॥

ॐ समिधानिद्वयस्यतद्यु
नं वीधयतातिथिं जा
सिद्धवाशहातन ॥ अथा
दगममिधमादाय ॥ ॐ
सुखं वाग्निरुदादित्यसु

तामानसं विन्वा ॥ वक्राष्ट
 क्षीतवदलोकया लाघुन
 ॥ यूनदीमयव वगावृत्त
 ॥ कलुषययातवृत्तमलु
 लं कलालय ॥ तल्लु
 लो ॥ उवक्राष्ट ॥ उवगा
 ताय ॥ उमृत्तदादिवउ
 वदासत ॥ उवृत्तादि
 दलाला कया ललानम ॥
 गलयति दृग्मसक्तानक
 जया ला य ॥ उविवया
 य ॥ उवउथ ॥ अय ॥
 उववगताय ॥ उदि
 म ॥ उविदि ॥ म ॥ उ
 सग्नय ॥ उमयाय ॥
 ॥ उयागानाय ॥ उमे
 य ॥ उवग ॥ उवक्राष्ट
 य ॥ उवउथ ॥ अय ॥
 यागीवनाय ॥ उमला
 या ॥ गीवनाय ॥ उवउथ
 या ॥ उवउथ ॥ उवउथ
 लिमविद्या ॥ उवउथ



1812

गङ्गासमिधः सयः शिवा
 सकृत्सुषयः सकृदधमयि
 यामिसकृदागः सकृदधत्वा
 यजति सकृदातिरायुगस
 दृष्टतत्वाहा॥ सकृजिवा
 सामं॥ ॐ एकजिवास्तु य
 नं॥ ॥ गङ्गाधरगवाहा
 मं॥ ॐ ॐ नावगीधनमध
 हिरुता॥ हयवमीनीमत
 थदगस्या॥ शुक्लानाद
 सीविपूवतदध्वथपृथि
 वीमहितामयूयः स्वाहा
 ॥ ॐ द्रविष्णुवित्रकमर
 धानिदधयदम्॥ समुद्र
 मस्यया॥ सुवस्वाहा॥ ॐ
 मातस्काकगतं॥ ॐ वृश
 वहिर्तयवकातय॥ ॐ मे
 गङ्गादगांजीवमगुत्रद
 गांस्वदयामगङ्गादगां
 बुववामिगङ्गादगांम
 दीनोऽमिगङ्गादगां

हयधमगङ्गातां॥ ॐ विम
 दंवातामदग्मा॥ ॐ अम
 थस्वदिकगयस्वास्वाहा॥
 ॐ दंमययस्वदिकगय
 लोगशा॥ ॐ गिर्यचगवाहा
 मं॥ ॥ गङ्गाधदाकृति॥
 ॐ सुवदायस्वाहा॥ ॐ द
 सुवदाय॥ ॐ वृथिस्वा
 हा॥ ॐ दं वृथिस्वा॥ ॐ ॐ अ
 न्यस्वाहा॥ ॐ दंमय॥
 ॐ यीतवृथिस्वाहा॥ ॐ
 दं यीतवृथिस्वा॥ ॐ दं वृ
 स्वाहा॥ ॐ दं वृथिस्वा॥ ॐ मा
 मायस्वाहा॥ ॐ दं मा माय
 ॐ यजायतयस्वाहा॥ ॐ दं
 यजायतय॥ ॐ दं यजाय
 स्वाहा॥ ॐ दं यजाय ॥ ॐ
 लदीयस्वाहा॥ ॐ दं ल
 दीयस्वाहा॥ ॐ दं वागीधनीय
 स्वाहा॥ ॐ दं वागीधनीय
 ॐ दं यजायस्वाहा॥ ॐ दं यजा

४ सा हा ॥ ॐ दं व नू न
 यादि त्या धिय न थ ॥
 ॐ नि य ३ वा नू र्ण ॥
 ॥ ॐ रू रू व ४ स्व ४ व फ
 ल सा हा ॥ द हा य ३
 उ र्थ वा ॥ न थे व वृ क्त
 य ही न व द ला क या
 ल क ल हा क लिल
 ना ग य क उ क ही
 ही ल म्मी ग ल गु व
 या नि त्या दि ॥ स वी दि
 क ल हा ॥ वि दि क ल
 हा ना ॥ स्व स्व म क हा
 घृ ना कू नि द या न
 ॥ ॥ ॐ कार्म काम
 धू य धू क मि ग य व
 वृ क्ष य च ॥ ॐ ला आ
 धि र्या य धू य आ थ
 ४ आ य धी य ४ ॥ सी हा
 व घृ न य ल व य धी न
 ति धा य ॥ ६ क हा व
 न ॥ ॐ य क न म्मे

समिध ४ सक जि हा सक मृ
 व य ४ सक धा म थि या मि
 सक हा हा ४ सक (धा) ला ज
 य नि सक या नि ना घृ व ल घृ
 ग न रू ४ म्मा हा ॥ ॐ नि घृ ना
 कू ति य धू ॥ ॥ ग रू किला
 कू ति काल थो ॐ द व स्य ला
 स वि रु नि ति वी दि या ग लू
 क ली ॥ ॐ य लू र ४ व क र्ण
 ॥ य त र्थ र्ण ॥ ॐ म न सि ता मि
 ना सी ति ॥ स मा ऊ न वी दि
 या व वी दि ति धा य वा य
 ॥ ॐ य वा क त ति ल मि र्ण
 ये ४ मृ ता स मि य क ॥ स मि
 धे ४ रू ल य र्थ व क व म्मा
 क मा लि का ॥ न त ति धा य
 ॥ गु वी या य धू र्ण त ॥ रु क
 धे व द नू य म्मा य वी त व
 क आ ल का ना दि य धू
 ४ ॥ धू य दी य ४ वी ही या

ॐ यदौक्यदायं कुशाकुं
 सवालं कानसंयकं कंकनं
 मृदिकागिच। कुलानि
 मृकण्डलितुन्ययतिगृह
 तां। यथायत्नं कलंयसमि
 माथसर्वसाधकं। मया
 क्तिता निखंयुन्यंयुतिगृ
 तां। आयुष्ययश्चकल्या
 लं कृणोयधनानित्। रुव
 तां। युन्यसादुतसर्वकाथ
 च सिद्धिदं। यदौक्यमत्।
 आवायुष्यगृहीत्वा। ॐ द २१
 ॐ हविर्गि। वीहि युजनं।
 मयथाजय७। कृणु क
 तलं जलन। यथा नामा
 यथवेधननायगिलाह
 तिसं कल्य सिद्धि नमु॥ म
 हायाह गिष्ट्वं गिलाह
 तिकालयत्॥ ॥ वस्मः
 प्रणीतः यदः लाकयाल

गभायति दुर्मदि॥ पूर्वदि
 कलगा॥ ज्यादि ८ वद ४॥
 यग ४॥ गभावि॥ अरुवा
 मु॥ लक्ष्मी॥ गभाकिं किक॥
 यष्टिका॥ आगमुकेलगा॥ ना
 गा॥ यका॥ यदगी॥ गील
 क्षी॥ गिव॥ मूलकलगा॥
 मृत्कं जयकलगा॥ यगिमा
 कलगा॥ रुहिलादि॥ स
 व्वं गिलाह गिर्शुद्रया
 ७॥ शिष्यश्चमन्वा॥ घृताह
 तिकं मगा॥ अष्टातनं गतं
 दत्वा॥ ॐ पूर्वदिष्ट्विपना
 यनगसुष्टुयुननायत
 । वस्त्रवेदिकीभवनारू
 ममूर्ज ७ गतकागोस्वाहा
 ॥०॥ ॐ गिलाह गिष्ट्वु॥

ततायथाकर्मकालथ७।
 ॥ स्वर्गुमयं वा॥ प्रजगता

सुमय छिली वा मुलि
 का वा ॥ यथल कच
 य वसुकि ॥ ॥ य
 रु मधु या द दिनी
 छानका (ह) स्नातम
 धुय ॥ य वस्नाय धा
 का प्रथन ॥ य को वै
 या या व दे ध य य
 प्रय नि या य ॥ य व
 की या दि मि दि ग क
 ल हा अष्ट कल हा
 न ॥ य व की या द
 (था) स कं गया व ध
 व लं न ॥ य य व ना
 मुरा (धु) नि धा य ॥
 क व न स्नात आय
 धी ॥ ॥ अथ उदक
 वलिय दान ॥ यून
 ॥ ॐ ग न्ना मां त्वा ॥ ॐ
 अम्भे अम्भिके ॥ ॐ

नमो वरुणाय ॥ ॐ अमं स्त्रा
 ता ॥ ॐ या द्ये दि (ग) स्वा हा ॥ धृ
 य दी व ॥ जाय सा य ॥ वलि वि
 सृज न ॥ स्नातम धु म धा य का
 वस्नातम वा व क ॥ ॥ न
 श्रु या या दि ॥ या स व ॥ अ
 द्या य यून न ॥ ॐ रु द क
 (धु) अष्ट कल ग मा ती य ॥
 ॐ अ जि ध क ल र्ण ॥ स्ना य
 न ॥ ॐ ॐ म म ग (ग) य म न
 ॥ वा वि धे धू न र्ण ॥ ता क
 थ वा रु न ॥ ॐ अ ग न्नु कु
 महा रा गा : समु द्रा श्र नि
 ग रु मा श्र रा सा मि ध
 श्रि व क र्ण ॥ य य व न
 यां ल ॥ ग ल या म व (ग)
 क र्ण न म द ध्रु स व र्ण
 । ग म व य म न्ता य : नि मि
 य न्द्र म हा ल य ॥ न ल ग
 व श्र (ग) म र्ण य व र्ण
 म व सृज न ॥ (ग) दा

वलीशमनथासहीवेसिधु
 भवव॥विश्वयादक्षिता
 यवहिसवक्तविनिमेता
 १॥अथयैवमहातीथआ
 गकुरुंरुवउ॥लानाथ
 धवधवीनाःमयासंघनि
 मिनिता१॥सत्रिता१साग
 ना१सर्वसंसेदानेअक
 दातदा१आयानुयज
 मानस्यद्विगदयकात्रि
 का१॥ॐत्यावाअ॥गज
 लनयुक्तु॥॥अथयुज
 नं१॥ॐयुक्तुअनकाय२॥
 ॐकालसमूदाय२॥ॐ
 समूदादमिममभूमा३
 उदानउया१युनासमसृ
 तस्यमानाघृतस्यनाम
 पुअयदक्षिजिज्ञादवा
 नामसृतास्यनारि१॥॥
 ॐमृत्तिकायै२॥ॐअ

मृत्तिकायै२॥ॐअ
 काकवथकाकविधु
 काकवसुधन॥ॐदतासि
 वनाहनैकवैनगागवा
 रुना॥मृत्तिकावधुगंद
 लाचकागयनारिमनि
 ता॥मृत्तिकाहनमयाय
 यनयादक्षगंका॥॥
 यादगनयायनसर्व
 याय१यमूचा॥॥
 आनयवासुकि॥१२
 ॥ॐक्रीनसमूदाय२॥
 ॐसमूदंजडासलिल
 समध्यात्यनानायय
 निमिषमाता१॥ॐ॥
 यावनेंजीवृषशानना
 यताआयादवीत्रिह
 नारुवतु१॥कखाय॥
 ॐविश्वानवाटमसीति
 ॥॥॥दक्षिणःतदका
 य२॥ॐदधिसमूदाय

२॥ ॐ समुद्राय स्वाहा वागाय
 स्वाहा सवित्राय स्वाहा स्वाहा
 वागाय स्वाहा अनाद्यै स्वाहा
 यत्वा वागाय स्वाहा अत्र
 स्वदेवा वागाय स्वाहा
 निमिदो यत्वा वागाय स्वाहा
 ॥ ॥ यत्वा ॥ ॐ ॐ
 दक्षिणवर्ति ॥ ॥ नै
 मृत्यु ॥ कर्कटकाय २॥
 ॐ धृता समुद्राय २॥ ॐ स
 मुद्रा ददय मय्युक्तः
 सत्वा विष्णोः स्वाधीनता
 यः यत्वा स्वाहा यत्वा
 गत्वा काको नमा वाक
 विष्णोः स्वाहा ॥ ॥
 यत्वा मृता ॥ ॐ मृता वत्सा
 मृता वृद्धः मृता वृद्धः
 मृता वृद्धः मृता वृद्धः
 मधुयुगा विना ॥ ॐ

नामकामध्यामूकीमाना ॥
 ॥ यत्वा मः यत्वा यत्वा ॥ ॐ
 सत्वा दत्त समुद्राय २॥ ॐ
 समुद्रा सि विष्णोः स्वाहा
 अत्र कया ददि न सि वत्सा
 वागाय स्वाहा मसि सदा स्ते
 दत्ता ममा सत्ता क मध्वना
 मध्वना पतिता नि वत्सा
 सि मसि न्यायि दव यान
 दयाता ॥ ॥ यत्वा दयः
 ॐ वत्सा यत्वा नमिति ॥
 ॥ वायवाः मलाय दयाय
 २॥ ॐ दत्ता दक समुद्रा
 यत्वा ॐ समुद्रा सि नरु
 त्वा ना ददा नः गति मी
 यात्वा नरि मा वा दि स्वा
 हा मन्त्रा सि मन्त्रा गेव
 ४॥ मन्त्रा सि मन्त्रा गेव
 वा दि स्वाहा वत्सा नमि
 दव स्वाहा मन्त्रा गेव

रिमावादिस्वाहा॥ ॥ अं व
 नवा॥ ॐ समं यामि ॥ ॥
 उक्तं यं विद्यालाय ॥ ॐ
 ॐ सुमं यामि ॥ ॐ समं
 त्वानुमं यामि ॥ ॐ सुमं
 ॐ धिदिवा अं न उद्वन
 हतीथत्वा न जसित हि
 वा ॥ समं यामि ॥ ॐ
 वा अं वद्वन ॥ ॥ कं स
 ॥ ॐ नम ॥ ॐ सुवा यं
 ति ॥ ॥ यं वा सुवा ॥ ॐ
 दक्षिणाया गि मयुगी ॥
 ॐ यय ॥ ॐ यिवा ॥ ॐ
 गजासि ॥ ॐ ये ॥ ॐ नय ॥
 ॥ ॐ नम ॥ कलिं काय
 ॥ ॐ सिद्धं धनं वर
 था या यो ॥ ॐ समं यामि
 व ॥ ॐ यिमा ॥ ॐ सित
 ॥ ॐ यमा ॥ ॐ यामि
 सु रिता न ज ॥ ॐ सि
 यं रिता न ज ॥ ॐ सि

वा। या यमा अयमाताम
 हा रि विष्णु आ ग व नृ
 वृद्धं नम ॥ ॥ वीदि ॥ ॐ
 वीर्यं यम ॥ ॥ गं ध
 नपूजनं ॥ ॐ वसा ॥ यं वि
 यमसि ॥ ॥ सह यम
 पूजनं ॥ ॐ सह यम
 ह यम ॥ ॥ यं यम
 य ॥ यं यम ॥ ॐ गं ध
 क ॥ सु कं धं दक ॥ न द
 स गं धं दक ॥ गं गं धं दक
 ॥ गं गं धं दक ॥ ॐ स ॥ यं
 यं यम ॥ ॐ ॥

ॐ सुयादि ॥ ॐ नं द
 हीमि मल ॥ ॐ सुयं
 यति ॥ वलि ॥ स गं दं ता
 उयं न त्वय ॥ यं रिता लि
 सिन त्वय ॥ सा यं यं वि
 मिथं ॥ ॐ सुमि ॥ ॐ नि
 दे रिता लि ॥ ॥ गिला

बलाहर्ष॥ॐ हिनयगर्ह
ति॥ हनिदाबलाहनं॥
ॐ वासुदवासुप्रभांमं
तीकविष्कमिति॥ यम
दितासयदाउतादाउय
नमानम॥ त्वयिसंयुजि
तामीगनात्रायवमनाम
र्यात्रित्सर्वधापस्त्व
विद्वियकासदारव॥ॐ
तिय॥०७॥ स्नानकल॥
नयथमस्नानमनु॥ॐ
अग्निमुखा॥ ॥ मृत्तिका
स्नानं॥ॐ स्नानाष्टयित्री
॥ ॥ कवायस्नानं॥ॐ
यस्नायस्नावा॥ ॥ यस्न
वस्नानं॥ॐ विष्णुनारा
मसि॥ ॥ यद्वाद्यस्नानं
॥ॐ वसुयस्नानं॥ ॥ क
स्यस्नानं॥ॐ नमः॥ नरुवा
यवा॥ ॥ कीनस्नानं॥ॐ

यजःपृथिव्यां॥ ॥ दक्षिणा
नां॥ॐ दक्षिण॥ ॥ धृता
स्नानं॥ॐ गजासि॥ ॥ त्व
धृत्तानां॥ॐ यजःनयःस
नस्वती॥ ॥ मधुस्नानं॥
ॐ मधुवातासुतायतम
धुनजिसिधवः॥ मा
धीर्नसतायधी॥ मधु
नकासुतायसामधुमताया
थिवः॥ नजःमधुधीन
मुनयिता॥ मधुमान्ता
वनस्यजिसिधमां॥ अ
मुस्यः॥ माधीनवारु
वनुतः॥ ॥ गमय
स्नानं॥ॐ गमयस्नानं॥
॥ गमयस्नानं॥ॐ गम
यः॥ ॥ यजःनयःस
नां॥ॐ समुपासि॥ ॥
ॐ दक्षिणां॥ॐ नयत्य
नीलानेनजादधुमय
द्वयस्वसु॥ दस॥ ॥

मल्लोत्रियुभाकुं तान आवा
 रमन्ति नानेयिभिर्गम
 दगं धृष्टावा नवाविदो ॥
 कुं वावकान ४ स वस्वती ॥
 कुं चादयिणी गृह्णानां च
 तकी सुमतीनां यरुंद
 धसु वस्वती म ॥ कुं महा
 अर्धु ४ स वस्वती यत्र गय
 तिकुमुना धिया विष्ण
 विनाजति ॥ ॥ कुं गमद
 कस्तानं ॥ कुं द व स्ये ला ॥
 ॥ कुं गमद कस्तानं ॥ कुं सा
 काना मिदं यति गूल ००
 द्यावृषामाना वृषरुमु
 वायागं दृग दृषामनसा
 मादमाना ४ स्वाहा दवाभू
 मृती मादयन्ते म ॥ ॥
 सुवर्णुदस्तानं ॥ कुं हि
 वरुण गृह्णति ॥ ॥ नदी
 संगमादकस्तानं ॥ कुं य
 शनय ४ स वस्वती ॥ ॥

न गमदकस्तानं ॥ कुं ००
 मंभर्ग गय मून ॥ ॥ ने
 लादकस्तानं ॥ कुं हि वरुण
 गृह्णति ॥ ॥ गं धीदक
 स्तानं ॥ कुं यधु दानां ॥ ॥
 रसस्तानं ॥ कुं व दसा
 ता गमि ॥ ॥ आवधी
 स्तानं ॥ कुं या आवधी ४ वृ
 द्वाजा गद वरुण युग
 यूना मनी नू वरुण मह
 ० गं क्षमानि सुकव ॥
 ॥ गं गृह्णिकास्तानं ॥ कुं
 अश्वजातं ॥ ॥ यव ॥
 भूमि विलु वृष्टु कला ॥ ५
 दत्त नं कालयत ॥ मरु ॥
 कुं आ मिदं विदु ह विरि
 शा ॥ मस्तानं ॥ कुं ००
 यदादिव ॥ ॥ गत ४ वृ
 द्वा दया ४ कल ग स्तानं
 नं ॥ कुं गत्वा यामीति ॥
 पूष ॥ १ ॥ कुं समुद्रं

४४ सलिलस्य मध्वा ४ यना
 यंतीति समाना ४ ॐ न्याया
 वजीवृषणा न नोद आयाद
 वीनिह माह वनु ॥ दक्षिण
 ॥ २ ॥ ॐ आयादिहा ॥ वधि
 म ॥ ३ ॥ ॐ विष्णु वनाटम
 सि ॥ ५ ॥ ॐ ॥ ४ ॥ ॐ रुद्र
 ४ यधिवद्वुनकनिक
 सयागावदिष दतिथिद
 स्तानसमृषधनसदगस
 थामसदकां ॐ ॥ गजा
 सिताजमृदजालिगवृतां ॥
 आ ॥ ५ ॥ ॐ सामा
 नाजति ॥ नैमृष ॥ ६ ॥ ॐ
 विष्णुतथु ॥ वीयवा ॥ ७
 ॥ ॐ नार्या ॥ ८ ॥ ॐ
 भन ॥ ९ ॥ ॐ धृष्ट
 स्वमृद ॥ गतुधनस
 रुमुधनस्तान ॥ ॐ वसा
 ४ यविण मसि ॥ १० ॥ ॐ

स्तानं ॥ ॐ नृनिमी ॥ ११
 नैय ॥ १२ ॥ ॐ स्वस्तिन ॥ १३
 ॥ गतधनसदुधनय
 थ गकिस्तानं ॥ १४ ॥ ॐ
 भक्तिविनिमृद ॥ १५ ॥
 धन्यविद्वद ॥ १६ ॥ ॐ सद
 सत्यति ॥ वीरिविद्वय
 न ॥ १७ ॥ ॐ वीरुधमा ॥ लाजा
 विद्वय ॥ १८ ॥ ॐ स्वस्तिन ॥
 ॥ १९ ॥ ॐ रुद्रा ॥ २० ॥ ॐ
 या ॥ २१ ॥ ॐ रुद्रिनी ॥ २२ ॥ ॐ
 वकां ॥ २३ ॥ ॐ आयादिहा ॥
 ॐ वृहस्पतिममृमिति
 ॥ वसुधनिधन ॥ २४ ॥ ॐ
 तिदवस्तानं विधि ॥ २५ ॥

अथविद्वकमायुजन
 ॥ यदनादि ॥ अ ॥ २६ ॥
 मलायुजायाय ॥ २७ ॥ ॐ
 विद्वकमरुविषाव
 द्धमाभनगानात्रमि

वमकृष्णवधसुतमेवि
न० समनमकयुद्धाथम
याविहवायथासुत॥दि
भविम॥का०॥७॥विध
कमीनमसुखंलाक्षा
दिकानक०यथायुधक
नात्यावविधकमीनभा
मुत॥अंजलमलाक्षाया॥
कविक्षाया॥अंजलंनवक
०॥दक्षिणभ०॥७॥यु०
निवधमन्यववक्रिय
निगच्छ०भ्रावकंवाव
नादिधि॥॥वामभ
०॥७॥यु०किंनृम्यका
मार्गवीविधकसात्रथ
सानाधुमृदुवाहसा॥च
दलेनेवने॥७॥मानका
क॥कायलनयायक॥
वदनसिसिद्वनसुगम
हंआनति॥मधुलजाय
॥का०यदवान्नृम्यव०

७॥॥दवसुत्वा॥का०भद
कनीसिवनं॥७॥उदकिधवक
वस्यगदवयंतस्त्वमद॥७
वययक्तमनूत०सुधानं
दुंयागुरुवासवा॥दवठ
क००॥७॥उवथिगिठनय
तिवाजन०युवाययय
कामयगद्युषानथिअरि
०सुनाहिमानंयनायत
मनयध्वादनयककिन
सय॥वकावधनिधाय
॥भक्तजवायैवलि
दयात॥मृदुवस्तु०य०
०॥॥गीतवाद्यरुथरु
नीर्गवधनिवदसुहिने
योगविधाय॥नगले
वामधुयसावयत्रिवा
म॥॥मयसात्मसदा॥
तगानेमृदुदानयुवती
दयनलाकोपयालक

त्वा॥ ऊँ ये मान न सा जा न
 व न॥ चा क्र व न त्व नि वा
 च न य ॥ ० ॥ म धु य व व ग
 य ॥ ॐ ॐ द वि धु नि त्व
 व ती य ॥ ॐ आ मा र डे ति श्री
 र ग व क र ड वी ० स्था य नि
 स्का य थ ॥ क ग ले म ध ॥
 ॥ अथ क नं वा सा दि ॥ अ
 ध य ष य ग ॥ गं श्या क ल
 ग धू ज न ॥ ॐ न म ४ गं र
 वा य च ॥ ॐ न च कू नि ति
 द व ग श्या य नि व ग य
 ॥ ॐ का धा र का धा दि ति
 व सु य नि कृ य ॥ ॥ ग ग ४
 ध य ष य गृ ह णं कृ तु मी
 र ग त्वा ॥ ध व यं व सु र ग
 व र न ॥ ॥ ग ग ४ ॥ अ ध
 नं ॥ य थ म ॥ अ ध नं ॥ ॐ
 ह ४ सा र ॥ ॐ ॐ द वि धु
 ४ ॥ ॐ स ४ सा र ॥ ॐ न म
 ४ गं र वा य थ ति ॥ अ ग

त्व ॥ अ ध न ति ति ॥ ॥ य थ
 ध व स्या मूल म कृ ण ॥ अ ध य
 ॥ ॐ द व ता य व ॥ अ ध य
 ॥ द व धा क य व ॥ अ ध य
 ॥ ॐ न मा ता वा य ध य
 वि धु रः मा ध वा स धी म दि
 त ता वि धु य धा द य म ॥ ॐ
 ति ग य गी ॥ गि ग त्व ३ ॥ यः
 च ग त्व ४ ॥ अ ध रि ण क ल
 ३ ॥ यं च वि ण गि ग त्व २ ॥
 ॥ य दि ण गि ग त्व ३ ॥ ना वा
 य ध स्या मूल म कृ ण ॥ ॥
 न मा ध व द व कि या ॥ ॐ अ
 नि क स्य ना य सा र ॥ ॐ क
 र स्य य नि न ति ॥ ॥ अ ध
 म ती धा त्वा ॥ ॐ व स क न म
 रु ना ध वा व स व रु वृ ता रु
 ता ध न थ क य व न ज सा र
 वि नि र्ध व था द ध ॥ ॥
 वी र्य य दानं ॥ ॐ न मा मृ
 मि र हा ति य नि य वि ण
 दि दि य ॥ ग धु जि प्रा य ध
 वृ त्त लं क हा नि ज न ना ॥
 ॥ न का य दानं ॥ ॐ लं क

आसंपदासमवगाशयुव
यायवद्यासंजघासवागात
अवेदवववु॥ ॥आआरु
ति॥ॐवक्तयक्तानं॥ ॥ॐ
नामकलधयस्वाहा॥ॐ
कायस्वाहाकस्मेस्वाहाति॥
॥यथादवस्यनामलित्वत्
घृगंदय॥आवमयदवं॥अ
आरुति॥ॐयाधयस्वाहाया
भयस्वाहाति॥ ॥संविनि
तिहवतग॥ॐरुलयागता
यस्वाहा॥ॐयाडाषधीकुंजं
वृजागादवयस्मिन्मृगंयना॥
मनोतनवममहमगर्गधु
मानिसकवा॥आआरुति॥ॐ
या॥रुलिनी॥ ॥ॐअन्तया
गनायस्वाहा॥अवयागुहव
नगयवयसदयक॥ॐन
वविथयविहयथादवारि
घातया॥उययह॥रुविघ्नत
॥स्वाहा॥आवम॥ॐकयदा
दिवा॥आआरुति॥ॐअन्न

वगा॥ ॥ॐकधुरदायस्वा
हा॥ॐवक्तयस्वाहा॥आआ
रुति॥ॐरुदकधुरि॥ॐवृ
ककलधयस्वाहा॥ॐअया
नति॥वाकधुरिद्वय॥ॐ
वृहस्यगद्वदवसि॥आअन
॥ॐमूर्धनंदिवा॥ ॥ॐव
गवंधनायस्वाहा॥ॐअय
वगायास्तवगायाजागवतनु
दिय॥सामयिथासमगत्
अयासात्वयि॥सहनीवता
यगवतानानमदीकादी
कायतिमेन्यामनूकयसु
यस्यति॥ ॥ॐववासेअ
धवासा॥ॐआवाधवा
स॥महवामंयययधन॥
आवाधवासअनिधायकि
यासाहवामह॥ॐयूवासु
वासा॥यनिवीगआगात
सुड॥मयारुवतिजायमान
॥गंधीनास॥कवयडनयकि
स्वा॥धममेसाधवयक॥
॥ॐममलावधनायस्वाहा॥

ॐ अथमांवाचकल्याणीमा
वदानिजनस्य॥ वक्रनाज
नाया॥ १०५॥ यवायायव
कायवानमयेदाउनिहृत्
यासमयसंकाम॥ समृद्धता
मूपमादानमरु॥ ॥ वक्र
यदानं॥ ॐ यदस्त्रायवासु
यसु॥ १०६॥ धीवासंजाहिने
ल्यनसो॥ गद्यनामंवेक्त
यत्रीसंघियायवघ्रायामय
क्ति॥ ॥ यक्षाववीतयदा
ना॥ ॐ यक्षाववीतयनमंयवि
॥ ॥ कष्ठांजिंतिनयदानं॥ ॐ
कष्ठास्यास्वन॥ ॥ यलाग
दुषुयदानं॥ ॐ वक्रयक्षानं
॥ ॥ निखावंधनं॥ ॐ नि
नामसीर्यस्वामुखनहिषि
१०७॥ गायत्रीमोमुनि॥ वाक्षाम
या॥ १०८॥ अमृत॥ समाद्यद्वि
यस्व॥ ॥ गायत्रीसंघा
यदानं॥ ॐ वक्रयक्षानं

कलामिब्रह्मनि यक्ष्मवत
 स्यनियक्ष्मियः दवीधियम
 नामहसमृगीकामरिष्यव
 श्रीधायक्ष्मवाहसः सृगीर्थ
 नाअसद्वसः॥ यदवामनाज
 तामनायजोदक्षकतवक्त
 नाकनुतनेऽयानुतत्यः स्वा
 हा॥ आआकृति॥ ॐ वृगनदी
 का॥ ॐ गिवृगवध्वनं॥
 ॐ मखलामात्रनायस्वाहा
 ॥ ॐ इक्ष्मं॥ ॥ आआ
 कृति॥ ॐ आकृति॥ ॥ ॐ
 समावृत्तायस्वाहा॥ ॐ
 ह्याविसहस्रं॥ ॥ ॐ
 विवाहायस्वाहा॥ ॐ कन्या
 वृवृहकुमारावाडवाक्
 जानाअरित्राकलीमि। यण
 साम। यणसामः स्रयणय
 यक्ष्मवृगस्यधनोरिवत्
 वक्त॥ मधूयक्त॥ कथासार
 नदयक्त॥ ॐ नमाहिनव्यः

अ

बाह वसनां यदि भविष्यत
 अनमानमा वृक्षया हनि
 क (१४) ४ वृक्षानां येन यन
 मानम ४ गच्छि ३ नायत्वि
 श्रीमान् यथीनां यन यनमा
 हनिक ॥ यथा यवीति न हं
 वृक्षानां यन यनमानम ४
 स्वाहा ॥ ॥ मालास्त्रयदा
 नं ॥ ॐ आरुक् ॥ अनितीय
 दानं ॥ ॐ अन्नात्य निष्कृता
 ॥ ॥ रुक्षितीय दानं ॥ ॐ
 शागात्रमिदं ॥ ॥ वासा
 दधिठिनी ॥ ॐ यजाय गता ॥
 ॥ अथ यदानं ॥ ॐ गववायू
 वृक्षया ॥ ॥ ॐ अथादि ॥
 श्री ३ अंकं न कता नायथी
 लक्ष्मी देवी कथां सुखमहं
 संयदय ॥ ॥ आ आरुति
 ॥ ॐ गंयतीति न लूग क मय
 वायू र्गो र्गति नूग हिन
 ल्पिती कं ग र्गतां सुक गत्य

लाकृता यवृक्षमधिलाव
 न दिवा ॥ वंदावन च्छाय ॥ ॥
 हायक न लक्ष्म्यरुं डिआ वि
 या ॥ ॐ गिनि वाहा ॥ ॥ वृथी
 ॥ ॐ अमृकं जजामह ॥ ॐ
 गिधवदं क्रिया विधि ॥

यथा यवस्य मूलमनु लदग
 म्वायश्च स्वागिलो कृति ॥ ॥ अ
 अरुति ॥ ॐ यन कृ नस्य वि
 गृथां विनसित् न दादाय वृ
 धिवी जीव दान ॥ ॥ यामे नय
 थस्य मसि स्वधारि सा मधी
 नासा अतू दय जय कथा
 कृषी नासा दय द्वि यमा व
 धासा ॥ अथ जीव न्यास ॥
 यवस्य ॥ ॥ धनं ॥ ॐ वाव
 कृष्णामि धा कृष्णामि
 वक्रकृष्णामि ॥ अथ कृष्ण
 धामि नारिकृष्णामि धा
 यकृष्णामि मधकृष्णामि
 मित्र मित्रां कृष्णामि स्वा

हा॥ अथ वा शकना युद्ध
 ०॥ अथ वंचना स्थापने॥
 उं मनसु आया यगांवा
 कं कआया यगांवा नैसु
 आया यगां वक्रसु आया
 यगां ० ॥ अं सु आया य
 गां॥ यल्लु नय दक्षिणं
 तल्लु आया यगां निद्याय
 गां तल्लु गुह्यनु संमल्लय
 ०॥ अवधाय स्वः स्वविग
 मे न ० हि ० सी लाहा॥ अ
 आदुगि॥ उं आर्ययल्लु न
 कल्लगां या ० ॥ यल्लु न कल्ल
 गां कां वक्रयल्लु न कल्ल
 गां ० ॥ अं यल्लु न कल्ल
 गां कां वा यल्लु न कल्ल गां मि
 ना यल्लु न कल्ल गां मासा
 यल्लु न कल्ल गां वक्राय
 ल्लु न कल्ल गां कां अगि यल्लु
 न कल्ल गां ० स्वयल्लु कल्ल
 गां वृक्षयल्लु न कल्ल गां य

५
 ल्लयल्लु न कल्ल गां कामनसं
 अथ वक्रयल्लु न कल्ल गां वक्र
 तल्लयल्लु न कल्ल गां वक्रयल्लु न
 ल्लयल्लु न कल्ल गां वक्रयल्लु न
 जाहमं यं जं वल्लु हा॥ ००॥
 जीवन्मास॥ यं वक्रयल्लु न
 उं वृक्षी तल्लयल्लु न ॥ उं वृ
 क्षी तल्लयल्लु न ॥ वक्रयल्लु न
 हा॥ अथ न॥ उं वक्रयल्लु न
 न॥ उं आया तल्लयल्लु न
 ॥ उं आया तल्लयल्लु न
 विष्णु वल्लु न ॥ उं वक्रयल्लु न
 वृक्षि वक्रयल्लु न ॥ उं वक्रयल्लु न
 तल्लयल्लु न ॥ उं वक्रयल्लु न
 वक्रयल्लु न ॥ उं वक्रयल्लु न
 ॥ उं वक्रयल्लु न ॥ उं वक्रयल्लु न
 ॥ उं वक्रयल्लु न ॥ उं वक्रयल्लु न
 ॥ उं वक्रयल्लु न ॥ उं वक्रयल्लु न
 ॥ उं वक्रयल्लु न ॥ उं वक्रयल्लु न

धियायसदागिवायसाह॥
ॐ नमस्तु नृदय॥ ॐ नित्यं
तत्त्वं वास॥ ॥ ॐ ह्रस्वाह॥
ॐ उव॥ ॐ ह्रस्वाह॥ ॐ स्व॥ ॐ ह्रस्वाह॥
ॐ मरुताह॥ ॐ जनसा
ह॥ ॐ गये॥ ॐ ह्रस्वाह॥ ॐ सत्य
साह॥ ॐ ह्रस्वाह॥ ॐ अ
दुतिस्वा॥ ॐ सुकसृषय॥
ॐ नित्यं सकेतवन्तास॥ ॐ नि
वातायसाह॥ ॐ नित्यं
वाधियायसदागिवाय
साह॥ ॐ नमस्तु नृदय॥
॥ ॐ विद्यायसाह॥
ॐ विद्यायसाधियायवि
श्वतन्त्रं साह॥ ॐ ॐ दं वि
श्व॥ ॐ विश्वं आत्मात्वा
यसाह॥ ॐ आत्मात्वाधिय
नयवन्त्रं साह॥ ॐ विश्वं
अहानं॥ ॐ नित्यं वास
॥ ॥ यथायवस्यमूलमनु
लगात्वासहस्रं वाह॥
मयगीमनुष्यादिति॥

यथाविगतितात्ता॥ अद्विगति
कला॥ मयगीमूलमनु॥ ॐ
नित्यं वास॥ ॥

गतायदया॥ ॐ ह्रस्वाह॥
यसाह॥ ॐ अद्विगति॥ ॐ
ज्जायता॥ ॐ नित्यं साह॥
ॐ मरुताह॥ ॐ नित्यं
येसाह॥ ॐ अद्विगति॥ ॐ
ॐ कवचाय॥ ॐ ह्रस्वाह॥ ॐ
अद्विगति॥ ॐ नित्यं
साह॥ ॐ विद्यायसाह॥ ॐ
अद्विगति॥ ॐ नित्यं
नृदय॥ ॐ ह्रस्वाह॥ ॐ
नित्यं वास॥ ॐ ह्रस्वाह॥
ॐ ह्रस्वाह॥ यथायवस्यवदं
ॐ उव॥ ॐ ह्रस्वाह॥ यथाय
वस्यवदं॥ ॐ ह्रस्वाह॥
यथायवस्यवदं॥ यथाय
दगन्ताह॥ ॐ ह्रस्वाह॥
यथायवस्यवदं॥ ॐ नित्यं
वन्त्रं॥ ॥ गतायवसमी
यगत्ताअद्विगति॥

॥ यजमानगिलिकसहयकृ॥
 अथवासादिद्वजना॥ चन्दना
 यक्षपवीतयु॥ दक्षिणा॥
 किल्लहल॥ कर्मि॥ यजमा
 ना॥ अथवासादिद्वजना॥
 ३॥ हामरुलिका॥ यकंदव
 थियं॥ अथ॥ किल्लवावु॥ ॐ
 अथवासादिद्वजना॥ ॐ अथवा
 दि॥ वावु॥ ॐ अथवादिद्वजना
 मथवाविजयतयवीसमसा
 सुथासुथादिप्रहलाकया
 लविजयादीनामहकालया
 ॥ कथ॥ अथवादिद्वजना॥
 ताविद्वजना॥ सिद्धिदक्षिणा
 थायवयन॥ अथवादिद्वजना॥
 संसात्रयदा॥ अथवादिद्वजना॥
 यथगसुपति॥ अथवादिद्वजना॥
 सानिधयति॥ अथवादिद्वजना॥
 मानारिवृद्धय॥ सन्नामुद्धि
 यदतिर्यगत॥ अथवादिद्वजना॥
 य॥ सन्नामुद्धि॥ अथवादिद्वजना॥
 हस॥ अथवादिद्वजना॥ यजमानसह

यातांसकृपवपुवाधवशत्रु
 स्वसवदादवदभवावतभा
 सुता॥ निविद्वजना॥ अथवादिद्वजना॥
 यथजना॥ अथवादिद्वजना॥
 विद्वजना॥ अथवादिद्वजना॥
 नवाक्षरुयसी॥ अथवादिद्वजना॥
 रुयकथा॥ ॐ अथवादिद्वजना॥
 नाजिधुवतिनालया॥ अथ
 धुतांचमहादवसर्वसंय
 लिदायि॥ अथवादिद्वजना॥
 कथा॥ अथवादिद्वजना॥
 ना॥ अथवादिद्वजना॥
 ध्वजवतलवलि॥ अथवादिद्वजना॥
 र्वसहया॥ अथवादिद्वजना॥
 अथ॥ अथवादिद्वजना॥
 अथकादि॥ अथवादिद्वजना॥
 यवमदगका॥ अथवादिद्वजना॥
 लय॥ अथवादिद्वजना॥
 आनित्रगय॥ अथवादिद्वजना॥
 तेसर्वग॥ अथवादिद्वजना॥
 ककंकल॥ अथवादिद्वजना॥
 अथवादिद्वजना॥ अथवादिद्वजना॥

धनविजययातिहिसं
 वेग॥ यावच्चदार्कमात्रा
 महीमनिजलावर। तावत्त
 गुविनकालंतिनक्त्यादि
 नारुवा। चलोवां। ॐ ह्मि
 लारववीधम। अशुर्वववा
 अवेन। पृथुर्ववसूषदस्त
 मये॥ येत्रीषवारु॥ ॐ
 निवारुवयजास्थामानुषीय
 स्त्वमस्मिन्मायावापृथिवी
 अरिण्यवीमोक्तिकमाव
 नस्यातीत॥ स्मिन्नारुवर॥ ॥
 धूननावोथावापृथुसिंहस
 नस्तित्वा॥ यथादवस्यमूल
 मनुष्यतिलादुगियं३३रु
 यात॥ ॐ स्मिन्नारुवरस्तारु
 ॥ ॐ मेधगिधंस्तारु॥
 ॐ स्मिन्नारुवरवीधं। गतिमनु
 णयुधु॥ यवग्रवनस्यु। गत
 ॥ ॥ यनस्तिलादुगि॥ ॐ
 ह॥ स्तारु॥ ॐ रुव॥ स्तारु॥ ॐ
 स्तारु॥ ॐ सुवगिधरुवा

५५२

यत्तारु॥ ॐ यथायथास्तारु॥
 लाजासरुमहिनायगिधयुधु
 ॥ ॐ मनादुगि। गतिमनु॥
 धूनदवग्रवनस्यु। गत॥ यवा
 यद्विधदानं॥ ॥ अस्मिन्न
 का॥ नारुवरु॥ ॐ गिधकल
 लना। रिषकंद॥ ॐ दवस्य
 स्त्वमिनु॥ ॐ यदयगिध
 नं॥ ॐ हंजविधंति। सिद्धं॥ ॐ
 यत्तारुवीमिति॥ यत्तारुवी
 ता॥ ॐ दीघायुस्त्वगियुधु॥ ॐ
 दधिकान्नासुगु॥ ॐ या॥ रु
 लेतीति॥ ॐ लारिषकं॥ ॐ स्त
 सि॥ ॐ दवग्रवनस्यु। गत॥ रिष
 कं॥ ॐ दीघायुस्त्वगिमुद्रगा
 रिषकं॥ ॥ यवानुवयध
 नीचादय॥ ॐ ॥ गिधसि
 युक्रमसीत्तावति॥ ॥ गतायथा
 यवस्यदवावेर्कालयत्॥
 सांमयाम॥ ध्रुव॥ दीघ॥ य
 थानुवयधजय॥ स्तारु॥ ॐ
 यवयगिधविधि॥

ॐ३

दुर्लुवद्विपनापासैद्वं॥वृ
 लु॥ ॥तमायजमानदव
 र्ययसुगंधुत्वा॥शितत्वनवी
 आदृति॥७४॥लाजायुषि
 सहना॥उंमनादृति॥यति
 षा॥७५॥विवायति॥वति
 यति॥७६॥कत्वा॥तमावका
 दिवन्नामी॥तमावका
 ति॥यथा॥संस्वा॥दृति॥ना
 जायजमानावाय
 नतयागिलादृतिदयादा
 आदृति॥७७॥वा॥अदिकान
 कलंककण्ठगलसर्वयाति
 लादृति॥आदृति॥७८॥
 ॥गमन्नादृति॥७९॥
 कि॥८०॥यदिका॥दृति॥८१॥
 न्वकंयजामह॥८२॥सर्वआ
 दृति॥८३॥यथा॥विद्वान्वलि
 दयात॥८४॥तमायजमानवलिद्वज
 न॥८५॥निवावाय॥८६॥
 कलदिह॥८७॥मासनेरुका

धादिद्वज॥ ॥तमावी
 हीरामा॥८८॥यवधान
 लाजा॥समिध॥वायस
 गुणयत॥८९॥धन॥जा
 मीन॥पीरुल॥किम्यना
 लिकलवदलीरुल॥९०॥
 यधी॥गुण॥दिगिरुला
 शिकवारु॥९१॥यथकं
 लयदकं॥ल॥समयव
 गमित॥कतिल॥गायय
 वि॥९२॥गुण॥वदत
 कं॥म॥सं॥धमूल॥रुलगा
 मूल॥यकान॥द्वी॥कग
 ॥९३॥द्वी॥मि॥न॥हामये
 ॥९४॥म॥व॥दी॥९५॥सादा
 ने॥९६॥तमावलि॥यदाना॥९७॥
 गलना॥९८॥॥अ॥म॥म॥न
 क॥९९॥आ॥ना॥नि॥य॥हि॥८१॥
 ॥१००॥द्वी॥॥१०१॥दि
 वतम॥१०२॥॥य॥तान॥
 ॥१०३॥वि॥ग॥॥१०४॥॥

नमो वक्रगं या ॥ ॐ असंख्य
 गा ॥ ॐ अथ वाच ॥ ॐ अ
 धीदिगं स्वाहा ॥ ॐ त्रिदू
 जतं ॥ ॐ द्वादशगं लोक
 यालसं वृद्धवानेव अ
 दिदगं न ॥ ॐ अन्नयायि
 ति ॥ ॥ वृजर्तदवादीन
 यथयथवदन् ॥ वाक्
 मदिअन्तसंकल्य ॥ अ
 ध्वदन् ॥ ॥ मूलाद्या
 ह्यादिष्टादीपवृत्तिका
 हर्मा ॥ अक्षरान्नगाद्युगा
 द्गतिं श्रुत्वा ॥ ॥ ॐ अ
 वं वाचं यथयथैव ॥ ॐ अ
 मतायश्च यथयथैव ॥ ॐ अ
 न्ययथयथैव ॥ ॐ अ
 वा ॥ ॐ अक्षरान्नगाद्युगा
 द्गतिं श्रुत्वा ॥ ॥ यत्तद्विद
 वद्वद्वाहयस्य मनसा वा
 तिरुत्तुवृहस्यतिर्मादेतद्
 धाउ ॥ गीतारुवउवतस्य

यस्यति ॥ २ ॥ ॐ मयश्च ॥
 ३ ॥ कयानधिश्च अउवदन्ती
 सदावृद्धसत्वा ॥ कयानधिश्च
 यावृत् ॥ ४ ॥ कस्त्यासत्वा मदा
 नाम ॥ हिक्षमत्स्यदन्तसदृश
 चिदात्रुवसु ॥ ५ ॥ कंथी
 त्वं अक्षरान्नगाद्युगा
 तात्रिश्चत्वा गतं वास्यत
 या ॥ ६ ॥ कयान्त्वत्तद्व्याहि
 यमंदगं वृषन् ॥ कयान्त्व
 द्वा अक्षरान्नगाद्युगा
 दिष्ट्या च जति ॥ गत्वा वि
 ष्णुत्रुक्म ॥ ७ ॥ गत्वा वा
 तश्च वता ॥ ८ ॥ गत्वा संवत्
 स्यश्च ॥ गत्वा कतिक्दं दं
 वश्च ॥ गत्वा अक्षरान्नगाद्युगा
 १० ॥ अक्षरान्नगाद्युगा
 ११ ॥ गत्वा तीयताम ॥ गत्वा
 १२ ॥ द्वात्रीरुवताम नो रिश्च
 गत्वा ॥ १३ ॥ द्वात्रिंशत्वा ताद
 या गत्वा ॥ १४ ॥ द्वात्रिंशत्वा ताद

सोमोसमिन्दासामासविना
 यगंआ॥११॥गन्तादवी
 प्रसिद्धायाथावदुयी
 तथागंजाप्रसिद्धवैतन
 ॥१२॥स्थानावृथिवीनारु
 वानुक्रनासितिवगतिअ
 क्तन०गम०प्रथ॥१३॥
 आयादिष्टामथावृत्ता
 नडुक्तदध्यागत०मरुप्रक्ष
 यवक्षस॥१४॥थाव०गि
 प्रतामाप्रसक्तस्यराजय
 गुरुन०डगतीनिवमात
 व०॥१५॥तस्मान्नगमामवा
 यस्यकथायजित्वथाआ
 याजनयथावन०॥१६॥
 ओ०गमकिनीनिद०गम
 कि०वृथिवीगमकिनाय
 ०गमकिनायधय०गमकि
 वनस्यतय०गमकिविष्ट
 दवा०गमकिवृक्षगमकि
 ०सर्व०गमकिनिगमकि

प्रवगमकि०सामागमकिप्रवि
 ॥१७॥दृष्टा०रुमामिगस्यमा
 चक्षुषासर्वानिदगातिस
 मीदगातिस०मिगस्याहं
 दसर्वानिदगातिसमीद
 ०मिगस्यचक्षुषासमीक्षा
 मरु॥१८॥दृष्टा०रुमाया
 कर्णदृष्टीजीवा०गि०क
 गं०दृष्टीजीवा०गी॥१९॥न
 मरुहवससाविषनमरु
 अक्षुविषाअवास्तुअस
 रुवमुक्ततय०थावका०
 सस्य०गिवावृ०॥२०॥
 नमरुअक्षुविषागतम
 सतमयिन्नव०नमरु
 रुगवन्नमुय००स्य०स
 मीरुस॥२१॥यगाया००
 समीरुसगतानाअरुय
 कृत्वा०गि०कृत्वावृजाया
 रुय०न०यशुय०॥२२॥स
 मिष्टियातआयडावधय

गतुदमिहियांगसीभनुथा
 स्माद्धियचवयदिष्मा॥२३॥
 ॥ गच्चद्रुदवहिरांपूनसा
 गुकमच्चनत्याग्रामगनदस
 तंजीवमगनदगा॥२४॥
 मगनदसांयवुचामिगन
 दगांमदीनास्यामगनदग
 तंरुयग्रगनदगा॥२४॥
 ॥००॥ ववाव॥ ॥ गग॥
 यायग्रिहलम॥ ॥०॥
 ॥०॥ द॥ ॥०॥ उव
 ॥०॥ द॥ ॥०॥ स॥
 ॥०॥ द॥ ॥०॥ अ॥
 यवोवैर्दी॥ ॥०॥ तैर्नो॥
 तैर्वैर्नो॥ ॥०॥ यमनक॥
 यत्तागा॥ यववाव॥ ॥०॥
 तैर्नो॥ ॥०॥ वव॥
 ॥०॥ स॥ तैर्नो॥ ॥०॥
 रुमा॥ ॥०॥ य॥
 सनरिगमि॥ ॥०॥
 गगता॥ ॥०॥

वनूयाग॥ सागवृववता॥
 यमनक॥ ॥०॥
 हि॥ ॥०॥
 ला॥ ॥०॥
 ला॥ ॥०॥
 सखा॥ ॥०॥
 गगता॥ ॥०॥
 सखा॥ ॥०॥
 कांश॥ ॥०॥
 त्रिकांश॥ ॥०॥
 ला॥ ॥०॥
 यम॥ ॥०॥
 ला॥ ॥०॥
 वक्रि॥ ॥०॥
 वक्रि॥ ॥०॥
 नाय॥ ॥०॥
 ॥०॥
 रुमा॥ ॥०॥
 नसा॥ ॥०॥
 ॥०॥

जनमसि स्वाहा ॥ ॐ आत्म
 शास्त्रे न सा वयं जनमसि
 स्वाहा ॥ ॐ जनसा जनसा व
 यं जनमसि स्वाहा ॥ ॐ य
 ब्राह्मना विद्वांश्च कालय
 ब्राह्म विद्वांस्यसर्वस्येन
 सा वयं जनमसि स्वाहा ॥
 ॐ हनमये च वृषिब्रुव
 मरुता स्वाहा ॥ ॐ शुक्रा वा
 यवचा के विद्वाय मरुता
 स्वाहा ॥ ॐ सु ४ सूर्या यदि
 यमरुता स्वाहा ॥ ॐ बुव
 ४ सु ४ वृद्धमसं तक्षणां
 दिव्य ४ यजायत मरुता
 स्वाहा ॥ ॐ नृप वरुण
 क्षाप्र निरनिद वरा वा
 गाय स्वाहा ॥ ॐ ॐ द्रुवा
 य वरुणि द्वा नि वयाना
 य स्वाहा ॥ ॐ विष्णु किं
 क्व वरुण यानि सोम
 दवता वा नाय स्वाहा ॥

ॐ यम किं जल वरुण कानि
 वायु देवा उदाना य स्वाहा
 ॥ ॐ शुक्रि न वरुण यानि
 वरुण देवा समाना य स्वाहा
 ॥ ॐ अनुयागि अवा कति नंज
 नय नं वं नृप मृगा विधा
 नाय स्वाहा ॥ नृप ग्राहकानि
 ॥ ॐ नृप नृजाति वरुण स्व
 नन ॐ वरुण यवा य नन
 या ४ ४ रु स स्वाहा ॥ स रु नृजा
 नि वरुण स्वा ॥ नयित्व स्वधन
 या विष्णु यन्त्रा विष्णु स्य
 नि स्वाहा ॥ ॐ सुक्ति ॐ द्रुवा
 ॥ ॐ यय वृषि वृणां ॥ ॐ वि
 श्वानरा ठमसि ॥ ॐ अग्नि द
 वता ॥ ॐ श्री ४ ४ नि ४ ॥
 ॥ यव क्षात्रादि ॥ यी य वरुणि
 कां वरुणां निक्षय वलिद
 नृप ॥ नि वरुणा नि अवा
 य ब्राह्मणादि दक्षिणां द
 नं ॥ यावर्त ॥ वरुण वरुण

वासुदेवविष्णुदत्ता ॥ ॥ गता
 दिनसूनुकृतिकालथ
 ग ॥ ॐ वृषुद्विषयनाथ
 गति ॥ ॐ आश्रयसुखति
 ॥ ॐ हिमस्यत्वा ॥ ॐ यथ
 माद्वितीयात्मय ॥ ०० ॥ ग
 तआसंसाय ॥ ०० ॥ ॐ मनु
 र्थ ॥ सनुकल गच्छुल
 त्यादि ॥ जायमधुलसा
 ॥ ॐ ॥ ॐ मृग्यदायस्थति
 ॥ ॐ नकागुका ॥ ॐ त्यादि
 ॥ ॐ यद ॥ ॐ यथयथ
 वसंस्तुति ॥ ॐ गुह्य ॥ गक
 ॥ ॐ यदस्ययावत्सुखा
 कनविद्वद्वन्द्वगधर्वव
 मयत्रिगीततिगातकी
 ति ॥ आ गद्वद्विगास
 दादयस्वत्रयं दामा
 दत्रुवतत्रयं वनमसु
 ॥ ॐ यावद्दीप्ति ॥ ॐ ॐ द्या
 आलाकयाल ॥ यदिदाय

क
 स्य ॥ सनुसनुनिर्गतं ॥ ॐ
 ग ॥ ॐ ॥ सनुसनुता ॥ ॐ
 तिसा ॥ ॐ ॐ द्विषु
 त्रिनिदवागी वीदी ॥ ॐ
 आजिद्यनिकलगणीवी
 दं ॥ ॐ अनिसृष्टिनि ॥ ॐ
 त्रिनागी वीदं ॥ ॐ स्वकि
 ॐ ॐ ॥ ॐ यथाशदक
 नावायाहिषकं ॥ ॐ य
 ददकनिवदनी ॥ ॐ य
 स्यकृमी ॥ आवायागी
 वीदी ॥ ॐ गद्वद्विगास
 ॥ नकाकनर् ॥ ॐ य
 यषमिगिक ॥ ॐ नविस्
 तितिलकं कालथ ॥ ॥
 यजमाना रिषकं वाच
 नमदकन ॥ ॐ नदि
 ॥ ॐ गी वीदं दयं ॥ ॐ
 गतासुला वार्थन्यासा
 दि ॥ ॐ ॐ ॐ द्या ॥ ॐ
 स्वस्तिवाचनं य ॥ ०० ॥ ॐ

तिदिनस्य कर्मविधिः॥

गगनाश्रया गगनी॥ द्या
स्थानं श्रयः॥ धर्मवृत्त
मी गस्य द्याया लसंगल
॥ ॥ रुप्रीमृगंदगसंय
कंगरी जागरी क्रिया
। यदि निदाव गजार्गस्य
प्रदृष्टति भवती॥ गुरु
गुरु नृपय नम किं
क्रियते युन॥ अतन वि
धानन मकुजा येऽऽ का
लयः॥ ॥ ध्यान॥ व
उकुजा च उवृका र्गव
चक गदा डिर्न॥ कृष्ण
(धृष्टिगंधा यग उदधा
कं समयः॥ ॥ निध्या
नं॥ नाशिकर्म ॥ ० ॥

गगनं गगनादीनि
त्यकर्मकालः॥ अतः

वाक्यकार्त्त॥ मूला चार्थ
लयः॥ गुरु सारदी॥ गगनं
द्वेव द्विधनमृवद्वानादि
कलगावर्त॥ दिविदिर्क
लगावर्तः॥ पूर्ववत्॥ च
उल्लाकया लावर्त॥ गगनि
कयद्विक॥ वासु॥ अशु॥
लक्ष्मी॥ नाग॥ अक्षयद्वि
॥ धीलक्ष्मी॥ गगमयलिम
॥ सुदुलादि॥ पूर्ववत्
मनवृजनं॥ ॥ गगयज
माननयवगिला दगादि
युनयः॥ दागव्या॥ नासा
दि॥ आदृति॥ दगयः
यं वा॥ युजा कमभादृति
युजनं॥ दद्यात्॥ वाजादग
जंजमाना चार्थसुनक्ष
कनं कनगां तिलादृति
दद्यात्॥ यथादवस्यव

गवर्तनं॥ अ० अ० द० ति॥ ५४
 ॥ व० य० ति० ॥ अ० अ० द०
 ति॥ १४॥ ग० ति० का० द० ति॥
 दृष्टिका० द० ति० ५॥ ग० ति०
 दृष्टिक० न० व० गी० य० ति० ॥
 अ० द० ति॥ ५४॥ ला० जा० य०
 दृष्टिका० स० ह० ॥ उ० म० ना० द०
 ति॥ ॥ उ० अ० ४० ग० ति० ४॥
 ग० ति० का० द० ति॥ ॥ वी० हि० ह० म०
 ॥ य० व० दृ० द्या० दि॥ ॥ व० लि० य०
 दानं॥ उ० ग० म० त्वा॥ ॥ दृ० व०
 व० ॥ वा० दृ० म० य० उ० न० ॥ दी०
 य० वृ० लि० का० द० म० ॥ उ० अ० व०
 वा० व० य० ००॥ या० य० यि० हि०
 ह० म० ॥ अ० अ० न० ॥ य० च० वा० न०
 ॥ व० रु० ४० या० ह० द्या० दि॥ ॥ ग०
 ति० का० द० ति० य० य० क० ॥ ॥ ग०
 जा० म० य० न० म० ४॥ उ० न० जा० क०
 का० ति० वि० द्य० मि० ति० मु० ति॥
 व० लि० ह० न० र्णी॥ वा० दृ० म० य० दृ०
 क्ष० दानं॥ उ० वा० व० स० ग० य०

नां

ति॥ सं० य० व० दृ० त्वा० ग० तं॥ ५
 य० स० ग० तं॥ उ० म० मि० रि० य० न०
 ति॥ य० वि० ति० रि० य० क० ॥ य० वि०
 उ० ह० ॥ उ० अ० य० अ० य० त्वा० व० नि०
 व० ४० म० स० न० स० म० स० ग० हि० ॥ व०
 य० स० व० न० म० अ० ग० म० क० म० स०
 ४० स० ज० व० दृ० सा० य० ज० या० व० दृ०
 न० न० च॥ य० वि० ग० म० च० न० ॥ व०
 म० ॥ ग० य० दृ० य० य० दृ० दि० ह० म० द०
 त्वा॥ ॥ ग० ४० स० दृ० दृ० ति०
 काल० य० ०॥ अ० म० क० व० ता० अ०
 व० न० य० ह० स० दृ० दृ० ति० स० म०
 दृ० ह० म० मु० ॥ द० वा० ग० म० उ० वि०
 द्या० म० उ० वि० त्वा० म० उ० मि० त० ४
 म० न० स० स० गि० ० म० द० व० य० ह०
 ४० स० व० वा० त० द्या० स० व० ॥ अ०
 य० य० का० ० अ० मि० न० का० य०
 स० दृ० अ० ॥ उ० अ० य० य० स० स० म०
 उ० वि० य० ४० स० म० व० दृ० ॥ ह०
 वा० वा० य० य० स० स० ग० ॥ ॥ ॥
 उ० सं० ग० य० य० स० स० म० य० न०

ओयो४संवृष्टान्वाचरिमा
 तिवाह॥आयायमानोअ
 मृगायसामादिविधवा९
 स्युक्तमानिधिया॥२॥आया
 यस्वमदितामसामवि॥३॥
 रित्र९पुलि९हवान९ह
 धथसुमसखावृ॥३॥आ
 गवत्सामनायमत्यनमा
 विमधस्काग॥अ॥नय
 र्वाकोमयानिना॥४॥उ
 र्यतागिरसुमविष्वा९स
 क्रिणय९युधिर्वीकाअ
 निकामायथयधासका
 भारुतारुवृत्त्यसंयाउका
 विनाजगि॥५॥उ॥द॥व॥स्य
 यय९युधिर्वा॥१॥उ॥द॥
 व॥स्य॥६॥उ॥अ॥विना
 रुयजना॥७॥उ॥द॥य॥वादि
 व॥१०॥उ॥द॥य॥क॥स॥४॥
 ११॥उ॥मी॥य॥ग॥ल॥क्षी॥१२॥
 उ॥व॥क्षे॥ल॥न॥भा॥व॥क्षे॥ल॥न॥

मस्तु॥नयनम९युधिर्वीन
 म९अ॥व॥धी॥त्य९न॥व॥वा॥च॥न
 वा॥स्य॥ग॥य॥न॥मा॥वि॥धु॥ध॥म
 हा॥क॥ना॥मि॥१३॥उ॥अ॥
 ॥न॥नी॥ल॥स्य॥सा॥म॥त्य॥द॥वा
 ना॥व॥द॥ति॥यु९क॥नि॥य॥क॥
 म॥ध॥म॥दि॥क॥नि॥य॥मि॥व॥त॥
 ला॥ग॥१४॥उ॥अ॥द॥वा॥सा
 दि॥वा॥का॥द॥ग॥सु॥वृ॥धि॥र्ये
 म॥धु॥का॥द॥ग॥सु॥वृ॥धि॥र्ये
 क्रि॥ता॥म॥दि॥ने॥का॥द॥ग॥सु॥
 त॥वा॥सा॥य॥क॥मि॥म॥रु॥ध॥
 ॥१५॥उ॥अ॥न॥स्वा॥दि॥या॥॥
 १६॥उ॥अ॥व॥क्षे॥वा॥क्षे॥ल॥
 ॥१७॥उ॥अ॥ध॥मा॥दि॥ती॥थे॥दि
 ती॥या॥सु॥ती॥थे॥सु॥ती॥या॥४॥स
 थ॥न॥स॥त्य॥य॥क॥क॥न॥य॥क॥य
 रु॥ति॥य॥रु॥धि॥सा॥म॥रि॥४॥सा
 मा॥नु॥रि॥य॥पू॥ना॥नु॥वा॥क्षे॥
 ना॥नु॥वा॥क्षे॥या॥क्षे॥रि॥या॥
 रि॥व॥क्षे॥ने॥व॥क्षे॥ना॥आ
 रु॥ति॥रि॥ना॥द॥ग॥या॥या॥म॥

कामासमक्षप्रदुःखः स्वाहा
 ॥ ॐ हिसस्यलाजलायुष्म
 लयलिययामसि। उताः रु
 दाहिना उवा निद्विषा दुःख
 उंसीरुदाहिना उवानि
 द्वा दुःखजं ॥ अतिकाद
 निवृत्तनयं द्वा द ॥ गिनि
 नागमग। अजाग ॥ गिं वद
 वृणं धृदयममधूयत
 ॥ विवृणं वतं वका कां गि
 वजाग वद कामाया। मां ध
 वद गं धृगवममला तव
 ॥ विष्म कला दिगयी वद
 वृवृत्तमायुग ॥ अविक्
 नदि वला सो नात्मा गवस्था
 मयूयथा ॥ ॐ दुःखं द्वा
 दुवृत्तमति विष्म उ। ग
 वानिधनं आनुजयत्वं
 कर्तुं जसा ॥ काये लंटी सव
 री कीं वानि यव द्वा व
 । वनृद अ वसा अ निमम वृणं
 धन कसि। यावदादि यव
 ति या वदा ज धन नु मा ॥ या

वदा यवा जगिता वजी
 वलया सह। यन कं यका
 यलभाहमा नान जीवति
 । यययामयका नात्मा य
 जीवति सजीवति ॥ एक
 सुरुत रुक्त नद ॥ गतस्व
 विष्म तग वृथिवी लं उय
 मान नं ल्व क कृय दद ॥
 न ॥ ॐ समदिनका
 रु विद्या घृत न समादि
 खे व सति ॥ स म नृदि ॥ स
 मिन्धा विष्म यव रिनका
 दिव्यं तला ग कृ उय स्वाहा
 ॥ ॥ ॐ ल दवा टन क
 लययमन क ॥ यति
 सुवद क ॥ अ वृता न स्वा
 रुति रुद्रयात ॥ ॥ ल
 नव नं गृहीत्व ॥ ॐ अम
 स नृत्त ॥ स नृ क ल ग
 सुलुल वीष्म तना दि ॥
 वता ॥ स यीता वन दार वतु
 युन ॥ गवा द्वा ॥ य ॥ गुरु
 रुवतु नाजा धर्म विजय र
 वतु यका स विन ॥ रुय

गद्यरादयामुक्तमयजमा
 मस्यसंगद्यनिवासाभा
 यनलीयमेवयजनधन
 मेलकोसंगतिसंगानवृद्धि
 नमु॥ द्विपदप्रदुष्टदस्य११
 रंरवउ॥ सर्वसत्वातं१ सुवि
 नसु१ यज्ज्वाकालयभीरु
 वडासर्वविधियनिष्कृम
 मु॥ गभशुकरुलसंयकम
 मुअमकना११ जययगाप
 वृद्धिनुमु॥ ॥ मलुलका
 ७१॥ उं नमा११ नय॥ उं ग
 जायंत्वातिविश्वरुक्
 लखरुंन्यावकंरुव१
 स्व१ सत्वायवाकविश्वमति
 जनतमिगंरुखनंगकिरु
 र्ग॥ जकोप्रखगनात्माकन
 कमधिकनंगुक्कसुक्कगिष्ट
 कंरुवद्वरुंअकंरुंरुव
 र्ग॥ उं प्रुवदायस्ययादाय
 रुनयनयद१ सामदो११
 र्ग॥ नकाथवृद्धिगीयंगतय
 थवदनंवाहगंरुवद्वद्वय॥

गयणीयुगंनयनमयनिष
 कुणंमं(धेवदंरुविष्णुवृ
 नमृत्तिरुवयतिवदनेयरु
 नूयीवनाह॥ नकाधुक्काति
 रुक्काणियथयदगागुनि
 दद्याणिमागतात्वाणीविष
 कानात्त्वमयिऊवेननीणिनि
 कालयवधा॥ वदामागासुग
 रुक्कितुवनरुवनारि११ यका
 नसमसायवीसंस्थासुवृया
 ११ निवोसजययुजगतानिष
 नूयागिवात्मा॥ ॥ यथय
 रुक्कसंरुदिलिविदिलिवा
 संरुक्तिगायवगायाक॥ रुवा
 वक्तिमध्यकलगायनिगता
 मलुक्कलिलवा॥ गसर्वसंरु
 दवाअरुमिगारुलदामरु
 र्ग॥ नूगायवृयामुदामरु
 विहीनायजनयनिविधि
 कीनदायाकसंरु॥ ॥ य
 कल्लाखवनरुवमसतिविष्ट
 ठिकायादूकारुवनरुव्या
 गालदिवासिद्वि११ रुवन

सहितादि यविकाम विप्रामि
 द्विदि आवधीनायनयुनुवि
 विप्रनंगमूदं मनुवा दं च द
 अथ यसा दातरु वगुरु वगा
 मन्ति वषसन्ता ॥ ॐ डा
 ला कया ला ॥ स्व सें सदिगव
 सिता ॥ स्व स्व मूदा स्वयका अ
 दित्या ॥ यय ह ग व सति उ वि
 सदा ज स द वा ॥ स्वयका ॥ मृ
 का था म स्व ति ध्म ग व पु नू
 व द का ॥ सु धिल मा ह का थ
 सि द्वि ॥ यथा द द गुरु व कु
 व सु म ती य रु व धु गु रु सु
 ॥ ॥ या व द रा रु न स्य प रु
 व ति उ व न या व द का ग
 ग म या व द मा ग न या रु
 ग म ग ल य ति म्म य ति वी
 ग ल ॥ म ॥ या व द क यि न
 का ह ति वि म ल ज ल द द ति
 द न वा ली गा व त व ग यी
 उ म्म ज न य ति वृ ता व द ग
 म ज ल द्दी ॥ ॥ थ द वा
 य द नो म ग ह ग ल स क ला

हानक विप्रवाः थव यथ
 वमासा ॥ ति थि ग ल स क ला थ
 व न द ग ॥ म ॥ थ ल ना ॥ क
 धु व ल ॥ अ क व र ते य य सा व
 धु म गी व व द्वा ॥ स यी र स नु
 नि ल्यं डिं ति ज स व द द सं उ
 ग न ज ल द्दी ॥ ॥ व द्वा वि प्र
 ध ग कं द ल न य म व ल ड द
 या गी म मी न ॥ धी य द ग म न
 द म्म य ह ग ल व स रि ॥ सं य
 गां स र्व ना ग ॥ ह ल द्वा ॥ सि
 द्वि वी वा ॥ द नि ग रु य रु ना थ
 धु स यी दि थ वा या नि द्वा
 या थ मा ना ॥ स न व न न मि
 गा ॥ या उ व ॥ स र्व थ वा ॥
 अं का न वृ द मू ल क म य द
 क थि र्क द्वा वि सी धु म्म वा
 अ क य ग सा म य र्थ य श न
 खि ले र्क ल थ र्व ग र्ध व रु न
 था ग ध्वा या म गी र्ग दि रु ग
 ल म्म न र्ती य म य स न र्थ
 या म्म क ल य धु व ॥ धु वि ग

नमस्मिन्निःशयाऽथवाऽथवाऽथवा
 ॥ ॥ कृतार्थं नानासिद्धिं वि
 कृतिकृतमेव न कृतं गधना
 र्थं गजानिःशयाऽथवाऽथवाऽथवा
 रुसदण्डं दन्तिनी का सुनन्दा
 निरुत्तायस्य गणमधे गज
 र्तिदातवन्दाहि नर्धसा
 यं वाऽथवाऽथवाऽथवाऽथवाऽथवा
 हसिन्नुत्ताय विष्णुः ॥ ॥
 कालो वर्तमानो ज्ञानम
 लजलासामर्गरीव गामृ
 यदाथवाऽथवाऽथवाऽथवाऽथवा
 थिनायायमूर्त्तिगर्भगाऽथवा
 द्दः रुनागसामर्गितायथ
 कृतिलाव निविद्यावरागा
 नाऽथवाऽथवाऽथवाऽथवाऽथवा
 नविष्णुनर्कैकतायदगंगा
 ॥ थवाऽथवाऽथवाऽथवाऽथवा
 थवाऽथवाऽथवाऽथवाऽथवा
 द्विषयत्नेन यजमानस्यैव
 कना ॥ गेवऽथवाऽथवाऽथवाऽथवा
 क्तिविद्यास्वावा नसंस्तिगा

वाऽथवाऽथवाऽथवाऽथवाऽथवा
 थाऽथवाऽथवाऽथवा ॥ ॥ काल
 वर्षनिधवाऽथवाऽथवाऽथवा
 दासस्य संवत्सरावदाऽथवा
 संवत्सराऽथवाऽथवाऽथवा
 धसुवन्निषजाऽथवाऽथवा
 यालेन वपुः पदसुखाका
 शुभं सार्थं युक्तानि स्यात्ता
 ह्यमाध विनिवसुत्त
 गं संकजायुऽथवाऽथवा ॥
 यावद्वक्त्राऽथवाऽथवाऽथवा
 मसामार्कं गुणायोवऽथवा
 वदनवदनी सागनायाव
 दमृश ॥ यावत्तत्रुत्तुतिनि
 नयऽथवाऽथवाऽथवाऽथवा
 शावत्तत्रुत्तुत्तुत्तुत्तुत्तु
 मिथ्यलादीधमायऽथवा ॥
 दवावर्षकुवाऽथवाऽथवा
 नुवत्तत्रुत्तुत्तुत्तुत्तुत्तु
 द्वातकीनायाऽथवाऽथवा
 नयविष्णुलमतिऽथवाऽथवा
 नाजाधविष्णुऽथवाऽथवा

धृष्टगणकल यवगिजनाया
 पुत्रश्च विना गंला कानारु
 किराजारु वउखलुसदारु
 किप्रभागिप्रभु ॥ ॥ स्वस्ति
 यजाय यतियान त्वं न्याय
 नधमीयत मही मही ग्मा
 गावा (गद्य ४४) रुममुनि
 र्थला कासमसासु विना
 रुवतु ॥ ॥ कालं देवगि
 यजुं नृ ४४ धृथावी सस्यमा
 निनी ॥ ॥ गार्थं दारु नहि
 तवा क्लृप्त ४४ सनु निरुया ॥
 ॥ सक्त ४४ सनु निरत नं सक्त
 तिनानिधसयाथादयोना
 जान ४४ त्रियो लयकुवस
 धाधमस्तिगासवेदा कालं
 सक्तवर्षिना जलमत्र ४४ स
 नुयजायुं दामादगाधि
 नवृद्धिवाधसक्तु गार्थी
 प्रमादां सदा ॥ ॥ जिह्वा
 बाधत्यवेन वलनाग (ग)
 यना विन्दुयागारु सरेखा
 पुत्रलितवनेपति तेलुक्तय

अकनमु। मागही नयविक
 वणिं वथमान विनष्टभा
 सर्वतदयिवमयासाउ
 मतदमधी ॥ ॥ अहोना
 हूनेदा यादतमकगह
 गंथलां वान्यदायाहं गं
 मडाप्रजाविधातकमम
 नवलिरि ४४ साययल्लन
 मक्त ४४ यल्लं गल्लानथाया
 दिहृदिवरुगवान्यमया
 सर्वतीनीयं सधुतुतवस
 वंदालनवदनवेषा ४४
 लीसुयसतग ॥ ॥ क्रिया
 लोयधुका मधुक्रियाला
 वदयंक (नीयदक्षिणम
 क्षिपं वावेंदमगां यनम
 म्वन ॥ ॥ यदिदाया क्रिय
 यं स्यात्तवायस्य वि (गव
 ग ४४ सक्त मडा विहीनमग
 सुय ० नदायद ४४ ॥ मग
 वाक्यहीन त्वं वं (ग) यिव
 वि (गव ग ४४) सुविगीला

दिग्गजानयजमानाश्चक
 मस्य॥ ॥ वदन्ममुद्रु
 वक्रियादहीननदहिता
 । तसर्वदुर्महसिकर्वह
 निवसर्वदा॥ ॥ धोषण
 नाहुर्वनेरुकिरावावाप
 ल्यइस्वमूनयश्चवैरा
 गू। नूनाधिकमस्तु कृतं
 योध्वनंनकसमवममक
 मरुजा॥ ॥ नगीस्वसिदि
 नस्वसिस्वसिमक्ष्मदितास्मि
 तास्वसिस्वयाहवनिर्त्यस्व
 स्मिस्वर्गसर्वदा॥ ॥ त्वं
 तिष्ठसर्वहृतातर्हिस्मिन्
 वनावनंअकश्चानह
 तातद्विष्टस्वयनमध्वना॥
 ॥ कर्मनामनसावावात्वा
 नाग्रागिर्मम। मनुकीन
 क्रियाहीनरुकिरीनंय
 कृता। मनावाकायंदावक
 शर्गा। नममम्वना॥ अगर्गन्धा

दि। उ। कर्मस्वर॥ मधुल
 कृपयानगिनसिहवर्ग॥
 मधुलविसर्जनं॥ ॥ उं वि
 श्वकर्मिगिदवागीवा
 दं॥ उं आडियुकलमिति
 कलमगीवा दं॥ उं विष्ट
 तश्चकनितिसर्वगमगी
 वा दं॥ उं अग्निमृषियव
 मानवाश्चजन्मपुत्रादि
 तं। तमीमहंमूलवयं
 ॥ अग्नीवागीवा दं॥ ॥
 उं स्वस्मिन्नुदा॥ अथ
 पाणदकनावायास्व
 कं॥ उं यदयकगिबद
 तं॥ उं यमकूमो॥ अ
 वायागीवा दं॥ ॥ उं उ
 लिष्ठवद्व। तस्यपदव
 यंतस्त्वमह। उयपुयं
 मन्तुमदात॥ उं उं दं
 गुर्ववासवा॥ उं दं विष्ट
 सज्जनं॥ उं दं विष्ट
 ति॥ यहीतविसर्जनं॥

ॐ कस्त्वाविमं वतिमत्वा
विमं वतिकस्मेत्वाविमं
वतिकस्मेत्वाविमं वति॥
यायायनदसहिगमसि
॥वक्ताकगभावनं॥ॐ
मिहियानति॥वक्ताकग
नवलीमादकनात्मासि
यकं॥॥वक्ताकगसं
वयसमिधहामं॥ॐ
गाकमेगस्वाहा॥ॐ
गाकमेगस्वाहा॥पु
लीगसुसमिहहयात॥ॐ
जातवदगस्वाहा॥ॐ
गनूयागसिगत्वमयाहिजा
यद्वाग्नस्यायुर्मयदिव
वीमयदिअग्नजमाग
लाडनगामआपृष्टा॥ॐ
गिनका॥ॐमधमयव
मविगाआदधगुमधम
धवीसुनसरीआदधगुम
धमध्विनीधवीवधकाय

कनयजं विद्यंगतिवममा
आयतावायुगधदृष्टा
उयगवली॥ॐतिदगव
लां॥ॐग्रायुषजमदग
कस्ययस्यग्रायुषाअदव
मग्रायुषांततामृशुग्राय
षांअगसुहसनालला
टयीवायादकि॥वोदृष्ट
लदितिलकंककाले
यत॥॥कलगदिविम
ऊने॥ॐउदयतमस्वति
॥॥अमकलगयमाति
कसमयर्षी॥गिवदवा
गिआवायादिसमस्तक
लगसमयर्षी॥॥अह
सिहसनाकनसक्तिके
यजमान॥ॐसमिन
ला॥अयदणी॥ॐनको
हनं॥निमिचुनं॥ॐअधु
वावय॥वलि॥वहि॥दि
यत॥वनादीदकनाय
कली॥ॐवसायविशति

अथ वदुथी कर्म काल ७
 ॥ अग्नि कृष्ण काल ७ ॥ अ
 न्नाग्नि कृष्ण काल ७ ॥ क
 र्ण कृष्ण कर्म पूर्ववत् ॥ ॐ क
 या नष्टि गति यत्रि हे नर्
 ॥ ॥ यथा यथा विधि म
 नुष्य काल गच्छत ॥ तारा
 थयदा साधन ॥ समिध
 क्षमं ॥ अग्नि तामक नर्ण
 ॥ यि वक्ष्ये कृति ॥ वदा कृ
 ति ॥ घृता कृति सक न
 र्ण ॥ घृता कृति वृष्ण ॥ ॥
 यथा यथा मनुष्य कर्मा
 काल ॥ यि तत्वे न देव
 अथ न सृ ॥ गता ॥ लजा
 मृद्वि स रुचि ति ॥ ॐ म
 ना कृति ॥ यथा ग कि र्ण
 त्या कृति ॥ राजा द ग जे य
 माता यथ न ग यति ला
 कृति दया ७ ॥ ग्ना कृति

ति ॥ यथा कृति ॥ यव
 धाया दि ॥ वलि प्रदानं ॥ व
 न्न ल वृज नं ॥ दीप वृत्ति का
 क्षमं ॥ ॐ अथ वदुथी ७
 ॥ गत श्या यत्रि कृ क्षमं ॥
 आ अत ॥ यथ वान र्ण ॥ च
 दुष्का दि त्या दि ॥ ग्ना कृति
 ति यथ कृति ॥ ॐ अथ यथा
 ॐ गजा यथा ति विष्णु ॥
 ॥ ॐ ति मुति ॥ वलि कृ नर्ण
 ॥ दक्षि ण दानं ॥ ग्ना यव
 या गत ॥ यवि र्ण मा वनं ॥ द
 न यता का न द्या यल्ल व वि
 स र्ण नं ॥ वा क्श ॥ ॐ मया पूर्व
 व स र्ण का य म द्या या सर्व दे
 वता ॥ सृ यी ति गुरु द्या ति
 मया यथ वि स र्ण यत् ॥ का
 का या व स र्ण स र्ण ॥ वृज नं
 ॥ ॐ वृज नं यत् कृ ति मा ल्य र्ण
 कि र्ण वृ कं ल य ॥ यत् ॥ वृष्ण
 वा य द वा य सृ यी ति सृ म
 ना ज न र्ण व ॥ का य ॥ ॐ

चतुर्मुद्रिकृतं नित्यं नमो वा
 ससदा धिया । गजवर्मधना
 दवचनताय नमो भुग ॥
 वक्रा (ग) वृक्षु वाणं दकि क्षी
 दत्वा ॥ उं दवा गमु विता
 मा ॥ संवृक्षु ॥ उं आयाय
 स्वस्वमभुग ॥ ॥ आसंसाय
 ॥ ७७ ॥ यजमाना रिषकं यथ
 कं ॥ वक्रायणीत विसर्जन
 ॥ यल्ल विसर्जनं च ॥ सर्ववि
 सर्जनं ॥ ॥ न्यासं कालय
 न ॥ अर्घ्यवाणा धाम स्वीक
 र्त्वा ॥ कोमारी वृजनं ॥ सूर्य
 कि० सो विधाय ॥ यता कादि
 नदी पवारुयत ॥ निर्वीमा
 ल्य स्वस्वत किथे ॥ यिना
 य विसर्जनं ॥ ॥ गतित्रुथी
 यल्ल विविशमा क० ॥ ॥

॥ संवत् ७२८ मा नु विनय
 का ॥ १ ॥ लखसं वृक्षु मे
 दा ॥ गुरुमभुसवेदा ॥ ॥

॥ सो वं जो क० अगस्त्याय कं
 लाहवायलायामुजायतय
 स्वाहा ॥ १०८ ॥ वनगतं ॥ व
 दनवृक्षु ॥ उं सकसृषय
 ॥ १ ॥ सो वं जो क० रुद्रवा
 जाय स्वाहा ॥ कृगव ॥ वद
 वृक्षु ॥ उं वक्रयल्लतं ॥ २ ॥
 सो वं जो क० विष्णुमिणाय
 स्वाहा ॥ समिसि ॥ वृक्षु ॥
 उं वाक्रक्षस ॥ ३ ॥ सो वं
 जो क० जमदग्नय स्वाहा ॥
 इं विनसि ॥ वृक्षु ॥ उं वृह
 स्यत ॥ ४ ॥ सो वं जो क० व
 लिष्टाय स्वाहा ॥ लाहसि ॥
 वृक्षु ॥ उं वनवृक्षु ॥ ५ ॥
 ॥ सो वं जो क० कभ्याय
 स्वाहा ॥ विलसि ॥ वृक्षु ॥
 ॥ उं मिणववृक्षु ॥ ६ ॥ सो
 वं जो क० अगस्त्याय स्वाहा ॥
 अयामा न ॥ वृक्षु ॥ उं ता
 अय ॥ ७ ॥ ॥ वृक्षु गस्त्याय
 आयतवि (ग) वसकसिनि

विहामं ॥ ० ॥

ॐ ह्रीं स० विष्णुसुतनमा
नात्रायस्यमतिरुष्य
अनकायस्वरा॥ वत्रसि॥
यूधु॥ ॐ अ० म० नृपसि
॥ १ ॥ ॐ ह्रीं स० कयिलाय
स्वरा॥ द्रवित्रसि॥ यूधु
॥ ॐ नीलयीवा॥ २ ॥ ॐ
ह्रीं स० गायस्वरा॥ वत्र
गतसि॥ यूधु॥ ॐ उ० दूर्य
जातवे॥ ३ ॥ ॐ ह्रीं स०
कर्षस्यस्वरा॥ यिला
यसि॥ यूधु॥ ॐ विराट्
रुत॥ ४ ॥ ॐ ह्रीं स० रुला
यस्वरा॥ क०॥ यूधु
॥ ॐ उ० विष्णु॥ ५ ॥ ॐ ह्रीं
स० मतिरुष्यस्यस्वरा
॥ समिसि॥ यूधु॥ ॐ दि
वावाविष्णु॥ ६ ॥ ॐ ह्रीं स०
नीलयात्रयस्वरा॥ यवदा
नृसि॥ यूधु॥ ॐ विविध

॥ १ ॥ ॐ ह्रीं स० वलरुदाय
स्वरा॥ लालसि॥ यूधु॥ ॐ
शुभकं यजामह॥ ८ ॥ ॐ ह्रीं
स० नृपनायस्वरा॥ अ
यामा॥ यूधु॥ ॐ स० यवा
नि॥ ९ ॥ ॐ ह्रीं स० लाकाला
कयनायस्वरा॥ द्रवित्रसि
॥ यूधु॥ ॐ अ० द० ॥ १० ॥
ॐ ह्रीं स० रुलायस्वरा
॥ वेकं कसि॥ यूधु॥ ॐ विष्णु
कमीनि॥ ११ ॥ ॐ ह्रीं स० स
हस्ररुतिनस्वरा॥ वासि
घाति॥ यूधु॥ ॐ स० रुयनी
या॥ १२ ॥ ॐ ह्रीं स० रुधुय
स्वरा॥ अ० क० पा० ॥ यूधु
॥ ॐ रुधुयस्य॥ १३ ॥ ॐ
ह्रीं स० यागनिदायस्वरा
॥ द्रवी॥ ॐ यूधु॥ ॐ पा० स
विष्टवय॥ १४ ॥ ॐ स० न
रुवगायायनस्यवि॥ नवव
उद० सि० वि० ह० म० वि० वि० ॥

ॐ अँ कौं कौं यनल वल वस
 हक अमक या ल जी वस
 तिष्ठं सु ॥ अमक या ल ॐ
 हया ल ॥ अमक स त्रि वि
 या नि वा क्य नो व य ल ॥ अ
 उद्या ल या ल ॐ ह ति क्ति
 ति स्वा ल ॥ ॐ कौं कौं यो य
 नू या ल मा य स्वा ल ॥ ॐ ह
 त्रि ह नो र्वा स्वा ल ॥ ॐ ह

ॐ ह ह व ४ स्व ४ कौं ह ह ह
 स्वा ल ॥ धा न र ॥ धा न दाय म ह
 गुरु म सु स र्व ज ग तां ॥ ॐ ॥

सुवर्ण कल गधु जा वा क्य ॥
 ॐ या व च नु दि वा क न यु
 व रु मा या मा म न नि त्र सी
 या व त्म नू रि मा व ल नृ ह
 त म ति ठ क्ति वृ थो त ल क
 ला (ग) नि त्रि जा य ति ४ स न
 म त या व त्म दी मा ग न स
 व र्ण कल गधु ज नि नू य
 ता ता व च्चि त्र ति ठ यु ॥ ह ग
 व च व द व ग व च्चि द्ध क
 त (ग) व न या सा द स म न
 न म त्म द थ य नि नि मि त
 ॥ य थ ग क्ता नू दू य न स व
 र्ण कल गधु जं त मि त्र व
 स मा नो र्वा य मो वे त न्द य
 त सा ॥ धी त्या व य न या र
 क्ता सी म त स न व मा न
 सा ॥ श क या मि म ह द व य
 अ ता य न म ग्न न ॥ ॥ वृ लि
 का वा क्य ॥ ॐ वृ लि क ल म
 ह ग न न ड व लि म स द गि
 वं या सा द द क्ति ग दे व ल

घनाकृ १२ घा ७४ नकृ १०८ य ॥ १६

ननुयतमायुत॥ नाष्टम
क्रिजयीनाजासखीनक्ष
यजासुथा। स्रकूलं वृद्धिग
नित्यं सूरि का प्राक्तमवव
॥ यथा गिवसुथा वृलि य
धवृलिसुथा गिव ४। गि
ववृली समं यत्नं सर्व काम
रुल्ययदं॥ इति वृलिका
कायनवाद्य॥ ० ॥

घनाद्याविनाजधका
 अनाकामनाजगुयग
 यनादकामदुयानवनाम
 तश ॥ ॥ मलुयगय ॥ ४
 ॥ ५ ॥ ६ ॥ ७ ॥ ८ ॥ ९ ॥ १० ॥ ११ ॥ १२ ॥ १३ ॥ १४ ॥ १५ ॥ १६ ॥ १७ ॥ १८ ॥ १९ ॥ २० ॥ २१ ॥ २२ ॥ २३ ॥ २४ ॥ २५ ॥ २६ ॥ २७ ॥ २८ ॥ २९ ॥ ३० ॥ ३१ ॥ ३२ ॥ ३३ ॥ ३४ ॥ ३५ ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ ३८ ॥ ३९ ॥ ४० ॥ ४१ ॥ ४२ ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ ४५ ॥ ४६ ॥ ४७ ॥ ४८ ॥ ४९ ॥ ५० ॥ ५१ ॥ ५२ ॥ ५३ ॥ ५४ ॥ ५५ ॥ ५६ ॥ ५७ ॥ ५८ ॥ ५९ ॥ ६० ॥ ६१ ॥ ६२ ॥ ६३ ॥ ६४ ॥ ६५ ॥ ६६ ॥ ६७ ॥ ६८ ॥ ६९ ॥ ७० ॥ ७१ ॥ ७२ ॥ ७३ ॥ ७४ ॥ ७५ ॥ ७६ ॥ ७७ ॥ ७८ ॥ ७९ ॥ ८० ॥ ८१ ॥ ८२ ॥ ८३ ॥ ८४ ॥ ८५ ॥ ८६ ॥ ८७ ॥ ८८ ॥ ८९ ॥ ९० ॥ ९१ ॥ ९२ ॥ ९३ ॥ ९४ ॥ ९५ ॥ ९६ ॥ ९७ ॥ ९८ ॥ ९९ ॥ १०० ॥

मध्वैव लक्षणायाः कति
 शब्दिकमनष्टाङ्गनीमूल
 यद्येकं कलमात्राविधि
 यत् ॥ ध्वनैकलमात्राक्ष

यः
 उद्धरा गुरुवक्षानीमध
 रा गदनिदता। अक्षरा
 गुरुवस्तु कथं धनय
 मयुवा॥ उद्धरा गं यं त्या
 अं अक्षरा गद्यं त्यजत॥
 धनय विष्णु रा ग अक्षरा
 लक्ष्मी सुवयदा॥ ०॥

ॐ ह्रीं म (य) धि आ ल क्ष्मी ति
 म (ग) म य म ध्या त श व द्ध
 नी क ल (ग) मूल त ना ग य
 क श्च स्था य नी क गु स्था
 मि दि (ग) रा (ग) सु लु लं
 क ल (ग) त दु ॐ ह्रीं स स
 त्रि धा न व म गु ल ध व म
 च न ॥ क र्म श्र म गु ल द
 अ य रू ष वा म रा ग या
 श द श काल वि धि चै व
 य या थ य व य ज य ॥
 ॐ ति क र्म वि धा न न व
 क्क्ष व य न ग धा ॥ क र्

धीयनमकरुवांगस्ययक्त
 अनिरुक्तं वृक्षस्यदिव
 उवममृषीर्षमननववी
 ७॥ कृष्यत्राकनरागव
 उथीयक्तकालथ ७॥ धृ
 वीरुनळूँयैमृषीरा
 गुंधनसंबदं॥ दक्षिणव
 श्रिमवेवमृषूदात्रिदग
 रुक्तं॥ विसृजनेतिनाथमृ
 विद्यानामधुयानथ॥ ग
 ७॥ श्रुतिमिन्द्रायदवा
 लक्ष्मीप्रिथारुव ७॥ अ
 र्वनादिविधिं कृत्वा निमा
 ल्यचतुष्टय ७॥ नदीस
 मयर्षकृत्वापश्चात्कीमा
 नीअर्चनं॥ १३६ मय
 लमृरुगंअर्चरागं
 मधुमंअर्चरागं
 वगदधंमयलक
 तुलकणी॥ ॥ कनकं
 लिर्गनीलंयवालयेवम

किंकांतातिवक्रवत्ता
 निविंतासक्तलम्पदना॥
 ॥ शक्तिविद्यायतिहावति
 वृत्तिद्वानमववाशक्तिरु
 तिवनायांतात्रलस्ययथ
 विधिः॥ ७॥ तिदिगतात्र
 ॥ ॥ अतिवाययवदध
 सामस्यसुथिववयं
 तीथानिविषयकनतिष्ट
 किदकि ७॥ वृक्षस्यवगथ
 यिर्षुयाजायत्यादिरुमि
 कां॥ ७॥ तिजनतीथ॥ मि
 त्वंतिधुलंनद्यपगं
 स्यीवसाद्वसुव ७॥ सत्यं
 ममनृक्षमनृक्षलक्ष
 याध्यावस्तिगांस्यीव
 स्यत्रनामवस्यसगतेमि
 यथाधृववगथामास्तिन
 तासदाग्यवयासाववस
 त्वंतिव॥ वामस्यीवमि
 क्यवनयथायीतिरुया

यामालका कलगावचुडु
 यासाग० घा० चरुडु० य
 कथकलीलीलक्ष्मीनाग
 वयिधायककु० वलीग
 नात० रु० नाव० भा० क्ष
 वसहस्रधाव० अ० उ० व० अ०
 लिनीरु० लिनी० वा० करु
 लिनीकासा० क० वरु० उ० ना
 ग० कुरु० य० व० य० व० ग
 वृ० आ० सि० ज० न० यो० ज० व० उ०
 र० सि० ज० स० ना० व० या० ग० १० ग
 व० नि० वा० व० उ० १० ध० व० रु० य
 क० या० ग० व० उ० १० य० च० स० ग
 का० व० उ० श्को० मा० नी० सु० ग
 ग० त० वृ० द० का० स० नी० य० आ०
 अ० नि० क० लु० स० यि० न० अ० रु० का
 य० क० १० ग० व० अ० द० वा० व० ध० क० ४०
 व० या० त० अ० द० वा० न० या० ग० २० ४
 र० वि० क० १० ल० य० ल० उ० ला० व
 ल० जा० ४० य० व० न० ल० जा० ४० दि
 दि० जा० १० २० रु० लि० ल० या० ग०

ज० त० वृ० लु० ता० ज० रु० म० आ० सा
 सि० क० ४० सि० म० त० वा० थ० ग० रु०
 क० उ० रु० म० ल० रु० १० अ० का० क०
 उ० उ० रु० म० वा० क० उ० २० का० क०
 १० य० का० १० रु० वा० वी० हि० रु० १० २
 अ० रु० द० ग० स० मि० ध० जा० ३० रु०
 ज० यि० ता० उ० य० १० ०० जा० ३० रु०
 उ० व० उ० २० सि० द० व० का० य० ल० क०
 उ० २० अ० रु० का० य० ल० क० ४० २
 अ० म० ल० स० व० उ० रु० य० व० क० न
 २० क० सि० व० र० ध० न० सा० ध० नि
 या० ग० ४० सा० दू० द० वा० ४० च० लु
 न० गु० ठि० का० व० उ० १० ०० जा० २
 उ० गु० नि० व० उ० १० ०० जा० २० रु०
 य० क० ग० व० जा० २० स० म० ख० ग
 ग० य० य० यि० य० गु० रि० रु० ला
 रि० क० रु० रु० म० उ० ष० धी० जा० २
 क० ध० ०० न० उ० ल० रु० वा० वा० न
 का० ल० सा० स्ना० न० उ० ष० धी० जा०
 वा० रु० य० रु० लि० जा० ग० वा० क० सा
 जा० सि० जा० य० ग० क० दा० न० वा

दानावयागलिमि१चयाग
उडरुहासा॥५॥५॥५॥
लिरुवा१धगकृद्विधय
ह्यागवसयजाधूजावलि॥

गवधनासानल॥अहना
उयलुयाउयहनधग॥
यवदोकयागमालका
यलुमगुययागसिहान
मानका॥कलिनरुसि
गकवायागुनेधवदान
रुसिकलितवउ४आ
वमगअगयामालका॥क
लगवउ६२अलकनिइ
वउ१॥१॥१॥१॥१॥
न॥गनाव२॥१कलगव
रुगकागववर्षा॥१॥१॥
गवउअनगअलिनी॥काग
खनविधगकु६०॥दिमय
गाक११यलुमाला१॥लका
याल११॥का॥१॥१॥१॥
नागकु११॥यिवकु११॥
यगव१॥यिनागवागवाग

१॥वंगगयिलाखडनसि
यंवनल३॥यविरुन॥ल
अहायनजा३॥द्वि२३॥अइ
वात्रयाग२४॥वठिक२३था
लुयाग१लासा॥यिवा॥गि
उत्रवाग॥ग३२गवलिय
उ२॥सिजवगनावयाग१॥
उरु१॥साधनरु१॥धनि
याग३२॥साइइयाग३२॥
वाककु३१कसिक३१कु
नका॥यंवमृगकासासिक
३सिमगवाग॥अइअक
गकुउइकि१॥अइवगा
विद्यामृगकुकि१ध१४॥
अइवानयाग१ध१४॥अ
इकि१॥अइवगा
होमलरु६॥अइवीकि
उ२ध११॥अइवीकिमा
लका॥अइवगसमिधजा
३वि१॥यमिनिथिजा२॥
कं३॥यिगालजा३॥मडा
ववी॥अमलेसवउ३॥

सिद्धकायल३॥यालवृ३
 रकिमिथ॥वेनेयेरुल
 ठिकद्वयकषप्रयद्वर्क
 नममृवगाययुयुनव
 न्दुनिजा३वाधनिजा३क
 धमलुलहुवाघारुन१०
 ८जा२॥काजानाघ१॥सय
 तिनिलिमिवा॥२॥अंजल
 ना२॥वाकनरुनिती
 वागरुनिती१कदानवादा
 नकंययवृथिड॥लंकगर
 नै॥वकारुडाकाझा॥उतगल
 लमिजावहाभाहावावाका
 मा॥कंचरुसिवा४॥मृलि
 काजानमालका॥॥अ
 धस॥धगवलिरुवता॥
 वात्रमालकावाहनमान
 का॥कधुवगाकाजी३०॥
 यंत्रयगाकाय३०॥ॐ
 कलमयागनाज१गा१
 क्यरुगुजा॥धंठिलय
 यवाज१॥धमवनेजा॥

नमधुयाना१मालका॥नमा
 वाअमुलि॥लमल॥आरु
 मरुलुखात्र॥आरुखात्र॥
 गाययद्ववास॥१धंठिलरु
 याग१धुनिजमकायिताउ
 ॥चरुथीयागयुजाजाकी
 मात्रीयुजादानमानका॥
 दयकयातयविवागिध
 गा॥गुरुमंहु॥ ॥

उयुखात्र॥अकासउय
 कायकाधगतकायालम
 गा॥अनकवायगिठोश
 नमायगिठोकलगयावि
 दगायपदमृगसह॥रु
 लाजअहुवृवा॥रु१३
 रुकायदिली॥रु१३गा
 आयधिम॥रु१३यथा
 उरुन॥ ० ॥

यवगायमृलिका॥वृववा
 नमृलिका॥नदीवावावा
 नमृलिका॥वममृलमृलि

का॥ वनाद्याद्यामुलिका
॥ वल्मीकमुलिका॥ रुक्मिण
मुलिका॥ गणेशमुलि
का॥ गणेशमुलिका॥ चतु
ष्टयमुलिका॥ विष्णुचान
मुलिका॥ गिवचानमुलि
का॥

एदवत्तवटविलाख॥ वं
नैवनाल॥ वनगग॥ वृत्ति
कत्वाय॥

एदिनाख॥ दुम्बिनवनगग
अष्टयपल्लो॥ गुल्मात्त॥
वकुत्त॥ कदम्ब॥ अर्वल॥
आल॥ वातिसि॥ समि॥ वृ
गियल्लव॥

एवमकल॥ गमनाचना॥
सहु॥ कृष्ण॥ वका॥ ग्रीवदु॥
कृष्ण॥ गतयु॥ नकचन
॥ अर्वलसि॥ विद्युत्त॥ वृत्ति
मादि॥

तच्छा॥ युवा॥ कामुडा॥ लूसि
ऊनरुगिचवग॥ रुक्मिणीमे
नाज॥ गुणिसि॥ अरुनीनका

वृत्ति॥ संमिसरु॥ अमल्लेय॥ वृ
ककु॥ कर्कटसि॥ ला॥ था॥ क॥ कि
लि॥ वृत्तिकस॥ ॥

तं॥ शः॥ शाल॥ वृत्तिगि॥ वृ
एयलासायदिना॥ स्वर्क॥ वे
क॥ क॥ व॥ दा॥ समी॥ थ॥ व॥ दा
न॥ म॥ दा॥ मा॥ न॥ क॥ त॥ वी॥ न॥ ड
दु॥ म॥ न॥ ॥ वृ॥ ता॥ क॥ विल्व॥ म॥
सा॥ न॥ ॥ यु॥ क॥ मा॥ ॥ वृ॥ क॥ का॥ सि
न॥ च॥ त॥ ॥ अ॥ ना॥ ग॥ का॥ र्क॥ च॥ द
॥ वृ॥ द॥ स॥ मि॥ धा॥ रु॥ थ॥ ॥ वृ
॥ य॥ द॥ द॥ स॥ मि॥ धा॥ वि॥ धि॥ ॥

ना॥ हा॥ सि॥ य॥ य॥ व॥ सि॥ व॥ न॥ ग
त॥ सि॥ ॥ वे॥ क॥ क॥ सि॥ ड॥ न॥ सि॥ स
मि॥ क॥ र॥ क॥ त॥ वा॥ न॥ गु॥ त्रि॥ थ
व॥ दा॥ न॥ सि॥ अ॥ दा॥ मा॥ न॥ क
न॥ वी॥ न॥ ॥ दु॥ मि॥ वि॥ ॥ श्व॥ त॥ अ॥
क॥ या॥ ग॥ सि॥ शाल॥ सि॥ आ
सा॥ सि॥ वि॥ ना॥ य॥ सि॥ अ॥ य॥
य॥ स्वा॥ न॥ सि॥ ग॥ रा॥ त्रि॥ सि॥ अ॥
म॥ सि॥ नृ॥ य॥ स्वा॥ न॥ सि॥ ॥ वृ॥ ति
अ॥ य॥ द॥ द॥ स॥ मि॥ धा॥ ॥ ॥

ऊ॥ दा॥ मा॥ सि॥ ध॥ क॥ ट॥ या॥ थ॥ न
क॥ क॥ म॥ रु॥ न॥ ति॥ मि॥ च॥ कि॥

नमो ॥ १ ॥ श्रुत्वा तं १०

किमनय॥ वंयस्वानकसूनि
ॐ तिस्र्यो यधी॥ ० ॥

१६ वल्लवलिगिनिनावि
 कंठुघावकवावलिसकाल्य
 धनसवाय॥नवनलजा
 ॥यायसूयनकलनचन
 वासकसंशयायथकम
 सकमिष्टिजानवकथसद्य
 नयुजाजा३॥॥१०॥
 नंदयाखानलंरंतायस्वा
 नउहासुयकानियुवा॥२
 ॥१०॥नयंतां॥१०॥
 आदुस्वानयालंरुनील
 मंग॥३॥१०॥
 ननावलनिलकउगुडि
 ॥४॥१०॥
 कलमूतिमास॥५॥वाय
 यनाताखानमूतिपुष्पना
 गकल्वग॥६॥
 खानलंखममनागमोग
 ॥१०॥१०॥
 खानलंखममनागमोग

८॥ मध्याध्यातस्यानंधाकुच
नलं मलिकवीहिसकलगा
दूलं यलं उलं यलं ययनलं जे

उजयगसशीखलुकसूनि
 कष्टनरुलकंकुमेनाबंअ
 लावमकुआयथवरुवधु
 दिगयामऊगाधुआद॥
 हीमैयमालदगवलिस॥
 अरिअकं॥बोअगलाऊन॥
 ॥कृशानिगाउयकेशिकी
 टकाहिसतेनयि।कमगतयु
 थिवीधवीगिवक्कायतरुत
 व॥ॐतिरुघानकविधि॥

अनिमलियं कामिसुवर्णि
द्वरुलयदं। एकदरुद्विग
षड्जटामुकुटमविता॥ सु
दीपसुवर्णवर्णं गणक
गकलान्वितां चतुष्टयं
दिनासं प्रपदं विगलय
रं मया सद्यं मताया दस
कजिह्वासमावृतां दुर्धरा
स्थयतु जिह्वा विषावाम

[illegible][illegible]

ॐ प्राण्यगिष्टामनुस्यवक्त
विष्णुनूदवयष्टयत्तसा
मानिच्छदांसि॥ॐ यथादु
वताया॥ॐ प्राण्यगिष्टाय
विनिर्थाग॥

अगमं कल्य ॥ ॐ अगम
 मयं द्रुति धिनि मिह यरु
 लं ॥ अमक दवता या जीव
 नास यो लघु तिष्ठामरु क
 निष्ठा ॥ गद नूद वं कृगम
 द्या ल्यु (ग) ॥ ॐ आधीन ग
 कथ २ ॥ ८ ॥ ॐ धर्मा य २ ॥
 ॥ ॐ ल्या स नं य नि कल्य
 ॥ ॐ को वृ धी मू कथ २ ॥ ॐ
 को वृ धी मू ल्या य धि य तथ
 नि व ग ल्या य न म ॥ ॐ को
 वि या ग ल्या य २ ॥ ॐ को
 वि या ग ल्या धि य तथ वि
 श्व व न म ॥ ॐ ॐ दं वि
 ॥ ॐ को आ सा ग ल्या य २
 ॥ ॐ को आ सा ग ल्या धि य
 तथ व द्म (८) ॥ ॐ व द्म
 य क्ता त ॥ ॐ ति शि ग ल्या
 न ग ल्या ॥ ॐ वृ को वृ धी ग
 ल्या य २ ॥ ॐ को वृ धी ग ल्या
 धि य तथ व द्म (८) ॥ ॐ
 ॥ ॐ व द्म ग सा ग ॥ ॐ को
 आ य ग ल्या य २ ॥ ॐ को

यावाधिराथविभूवरा॥
ॐ दविभू॥ ॥ ॐ को गज
गलाय २ ॥ ॐ को गज गला
धिराथ नूदाय २ ॥ ॐ गज
सि ॥ ॥ ॐ को वायु गलाय
२ ॥ ॐ को वायु गला धिर
गय धी धनय २ ॥ ॐ गव
वायु ॥ ॥ ॐ को आकाश
गलाय २ ॥ ॐ को आकाश
लाधिराथ सदा निवाय
२ ॥ ॐ नमस्तु नम ॥ ॐ निव
वायु ॥

ॐ को दवा ॥ ॐ दुव ॥ ॐ
हा ॥ ॐ को स्व ॥ ॐ
स ॥ ॐ को व ॥ ॐ को
तय ॥ ॐ नि सुय
व ॥ ॥ ॐ को हली का
दिसका लाय ॥ ॐ
सक सुयुषा

गाव दय ॥ ॐ उद द
वायु ॥ ॐ यज ग
॥ ॐ को निव सवा ॥ ॐ

सहस्रगवी ॥ ॥ ॐ को
वायु ॥ ॐ सुयुष
हा ॥ ॐ को व वायु ॥ ॐ को
॥ ॐ सुयुष ॥ ॐ को म
लाय ॥ ॐ विगद ॥
ॐ को सुयुष ॥ ॐ
नमस्तु नम ॥

युव विगति गलाय ॥ ॐ
को सुयुष ॥ ॐ को
वायु ॥ ॐ को वायु
नमस्तु कर ॥ ॥ ॐ को न
मा ॥ ॐ को वायु ॥ ॐ को
ॐ सुयुष ॥ ॐ को
धिराथ ॥ ॐ को
वृद्धि ॥ ॐ को
नाधिराथ ॥ ॐ को
॥ ॐ को सुयुष ॥ ॐ को
धिराथ ॥ ॐ को
नमस्तु ॥ ॐ को
धिराथ ॥ ॐ को
॥ ॐ को सुयुष ॥ ॐ को
नमस्तु ॥ ॐ को
धिराथ ॥ ॐ को
॥ ॐ को सुयुष ॥ ॐ को

ॐ कौस्तुभगत्वाधियायध
 कानाधियेवाधिविभक्तयुश
 ॥ नमः ॥ ॥ ॥ उदयना ॥
 वृथात्वाधियायधकाधि
 देवांगुदयनाय ॥ २॥ ॥
 ॐ कौस्तुभगत्वाधियायध
 काधियेवाधिविभक्तयुश ॥ लि
 वना ॥ ॥ वादुदयना ॥ ॥
 कौस्तुभगत्वाधियायधका
 धियेवाधिविभक्तयुश ॥ १०
 ॥ उदयना ॥ ॥ कौस्तुभ
 गत्वाधियायधकानाधि
 यवा ॥ उदयना ॥ ॥ ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

五五五

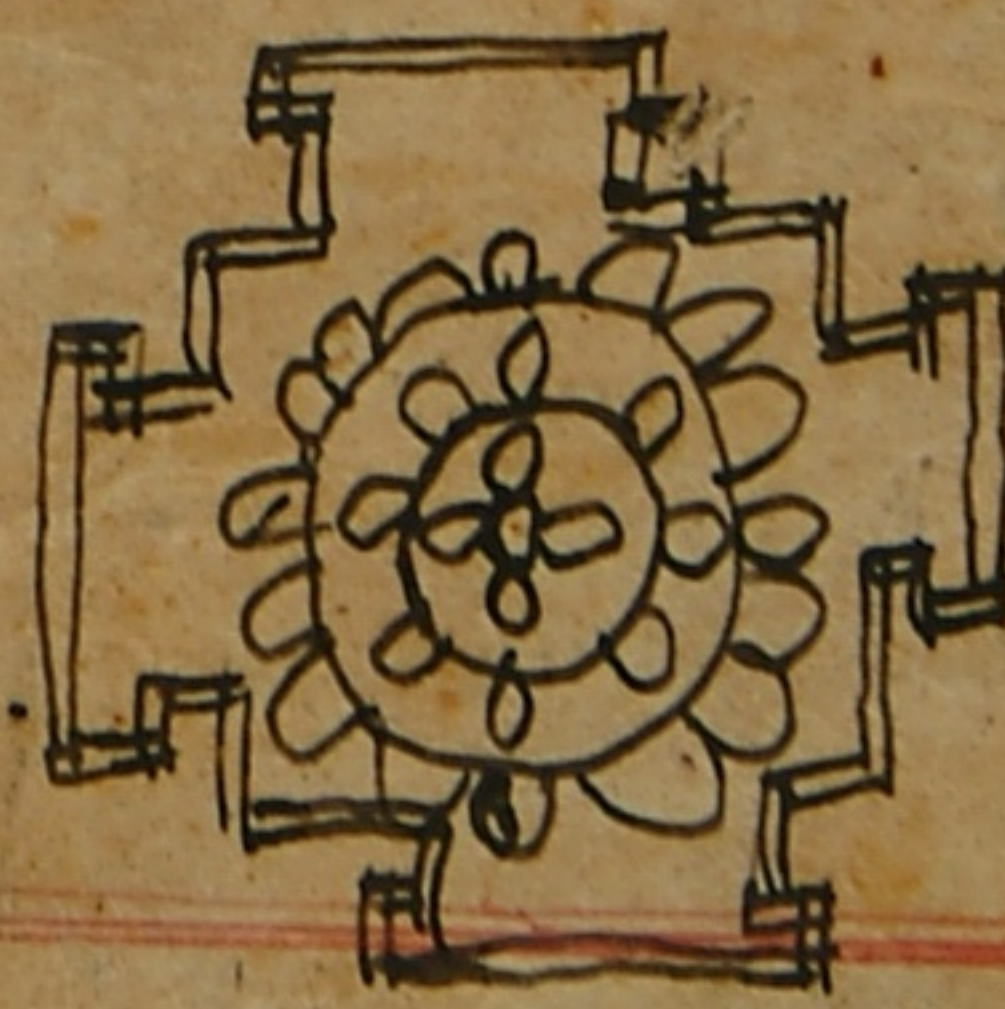
१००० कलगाया वीतवज
 १ विजयवीतगदा
 १ कतायुग ॥ ध्यातगंख
 १ अज्ञान ॥ आदुष्टिकाण
 १ वलि ॥ कृष्णयज्ञ
 १ निद्रा ॥ ध्यातयज्ञ
 १ गथा ॥ वातालव
 १ यतिष्ठा ॥ तायुयज्ञकृष्ण
 १ अग्नि ॥ गकि
 १ यास ॥ वीतध्वज
 १ वृध ॥ धनूभन
 १ यशस्वद ॥ ध्यातअकमाला
 १ वलु ॥ ध्यातगंख
 १ यमया ॥ यमदलु
 १ यचलु ॥ कृष्णगदा
 १ कतायुग ॥ वीतगदा
 १ वृहस्पति ॥ यज्ञ
 १ रुतमक ॥ नककमलुल
 १ यागिनी ॥ कलिकयाल
 १ वस ॥ ध्यातयज्ञनेल
 १ नैष्ठिकया ॥ खन
 १ अथयो वक
 १ अमुया खलुयवया अतुतयजा
 १ विरीवगया कृष्णमयामन

१ युक्तयावउका वताय
 १ सोमवदवककमलुल
 १ ध्यातवकमन
 १ वरुणनामयम
 १ विष्णुहनिवक
 १ द्युयनयगहनिवक
 १ गतेयनयमदलु
 १ कय वीतमला
 १ लक्ष्मी सिधमद
 १ वासु वीतयुति
 १ कृष्ण भडनिवदाम
 १ वायव्य ध्वज
 १ गल ॥ ध्यातमूल
 १ यनयुनाम कृष्णकृष्ण
 १ नाक मकन
 १ अथर्ववदमहि
 १ विष्णुनमहि
 १ कृष्णलगा
 १ कृष्णयालकृष्णगदा
 १ कलिहृष्णख
 १ कउ खलु
 १ मार्क ॥ ध्यातगंख
 १ युतवीतयुक्तक
 १ ध्यातकणिमूल
 १ युष्टिकवीतवक
 १ वीतगनिमूल

२ अथ क्लामाया जडास रंगमावीतव
 १ घणितानगायुषका
 १ वलिथाखडासयमूला
 १ व्यासेयाजडासनिमिदाकपपद्म
 १ कतूमानयाजडाससयनीनवद्व
 १ विरीषगयाखडाससमगीतायुष
 १ कयथाखडासयद्वरागमदिव
 १ वनगुनामयाजडासगुणकीनथाप
 १ मार्कण्डेयथाखडासकीर्तिकीर्ति
 १ अथ कलसकूनशाकयार्त

[illegible]

१ अमृतकथाथलुलहावकलग
विद्वधग
१ गायत्रीवपूर्वस्यनि १
१ आहूगीवभूमिस २
१ गायत्रिदक्षिणस ३
१ आहूचक ४
१ गायत्रीवेज
१ गायत्रीवक ५
१ आहूचक ६
१ आहूचक ७
१ गायत्रीवे ८
१ आहूचक ९
१ कंकरीव
१ आहूगीव
१ गायत्रीदा
१ लोकागदा
१ ज्ञासंवक
१ खवसंगीव
यमयापानवीनगदाधतम्
लथलुलहाविका



ॐ नमो भगवते वासुदेवाय
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय



20

15

10

5

0 cms.

5

10

15

20

25

30



0 cms. 5 10 15 20 25 30



0 cms.

5

10

15

20

25

30



0 cms.

5

10

15

20

25

30

